

## कंप्यूटर का परिचय (Introduction to Computers)

### कंप्यूटर क्या है - What is Computer

कंप्यूटर शब्द अंग्रेजी के "Compute" शब्द से बना है, जिसका अर्थ है "गणना", करना होता है इसीलिए इसे गणक या संगणक भी कहा जाता है, इसका अविष्कार Calculation करने के लिये हुआ था, पुराने समय में Computer का use केवल Calculation करने के लिये किया जाता था किन्तु आजकल इसका use डाक्यूमेन्ट बनाने, E-mail, listening and viewing audio and video, play games, database preparation के साथ साथ-और कई कामों में किया जा रहा है, जैसे बैंकों में, शैक्षणिक संस्थानों में, कार्यालयों में, घरों में, दुकानों में, Computer का उपयोग बहुतायत रूप से किया जा रहा है

Computer केवल वह काम करता है जो हम उसे करने के लिए कहते हैं यानी केवल वह उन Command को फॉलो करता है जो पहले से computer के अन्दर डाले गये होते हैं, उसके अन्दर सोचने समझने की क्षमता नहीं होती है, computer को जो व्यक्ति चलाता है उसे यूजर कहते हैं, और जो व्यक्ति Computer के लिये Program बनाता है उसे Programmer कहा जाता है।

कंप्यूटर को ठीक प्रकार से कार्य करने के लिये सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर दोनों की आवश्यकता होती है। अगर सीधी भाषा में कहा जाये तो यह दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। बिना हार्डवेयर सॉफ्टवेयर बेकार है और बिना सॉफ्टवेयर हार्डवेयर बेकार है। मतलब कंप्यूटर सॉफ्टवेयर से हार्डवेयर कमांड दी जाती है किसी हार्डवेयर को कैसे कार्य करना है उसकी जानकारी सॉफ्टवेयर के अन्दर पहले से ही डाली गयी होती है। कंप्यूटर के सीपीयू से कई प्रकार के हार्डवेयर जुड़े रहते हैं, इन सब के बीच तालमेल बनाकर कंप्यूटर को ठीक प्रकार से चलाने का काम करता है सिस्टम सॉफ्टवेयर यानि ऑपरेटिंग सिस्टम।

{ऑपरेटिंग सिस्टम क्या है?

सही शब्दों में ऑपरेटिंग सिस्टम के बिना कंप्यूटर टिन के टिब्बे से ज्यादा कुछ भी नहीं है, ऑपरेटिंग सिस्टम ही वह जरिया है जिसकी सहायता से हम अपनी बात कंप्यूटर हार्डवेयर तक पहुँचा पाते हैं या हार्डवेयर को कमांड दे पाते हैं। ऑपरेटिंग सिस्टम हार्डवेयर और हमारे यानि यूजर्स के बीच एक पुल का काम करता है। ऑपरेटिंग सिस्टम की बदौलत ही आप की-बोर्ड की सहायता से कोई लैटर टाइप कर, प्रिंटर से उसका प्रिंट निकाल सकते हैं। यानि जितना बढिया ऑपरेटिंग सिस्टम आपकी टेंशन उतनी ही कम।

ऑपरेटिंग सिस्टम के पास यूजर्स, हार्डवेयर, प्रोग्राम यानि सॉफ्टवेयर का पूरा हिसाब-किताब रहता है। यानि आप इससे वही काम कर सकते हैं जिसकी सुविधा इसमें दी गयी हो इससे अन्य काम लेने के लिये आपको ऑपरेटिंग सिस्टम में अपनी सुविधानुसार प्रोग्राम यानि सॉफ्टवेयर इंस्टॉल करने होते हैं। जैसे लैटर टाइपिंग एवं ऑफिस संबन्धी कार्यों के लिये एमएस ऑफिस या इंटरनेट यूज करने के लिये ब्राउजर, इसके अलावा वीडियो और ऑडियो प्ले करने के लिये ऑडियो और वीडियो प्लेयर।}

### कम्प्यूटर का जनक कौन है

कम्प्यूटर का जनक चार्ल्स बैबेज(Charles Babbage) को कहा जाता है, चार्ल्स बैबेज जन्म लंदन में हुआ था वहां की आधिकारिक भाषा अंग्रेजी है तो अंग्रेजी से ही कोई शब्द क्यों नहीं लिया गया इसकी वजह यह है कि जो अंग्रेजी भाषा है उसके तकनीकी शब्द खासतौर पर प्राचीन ग्रीक भाषा और लैटिन भाषा पर आधारित है इसलिए कंप्यूटर शब्द के लिए यानी एक ऐसी मशीन के लिए जो गणना करती है उसके लिए लैटिन भाषा के शब्द कंप्यूट (Compute) को लिया गया

कंप्यूटर का फुल फॉर्म हिंदी में (Full form of computer )

सी - आम तौर पर (Common)

ओ - संचालित (Operating)

एम - मशीन (Machine)

पी- विशेष रूप से (Particular)

यू- प्रयुक्त (Used for)

टी – तकनीकी (Technical)

ई – शैक्षणिक (Education)

आर – अनुसंधान (Reserch)

कंप्यूटर एक ऐसी मशीन है जिसका प्रयोग आमतौर पर तकनीकी और शैक्षणिक अनुसंधान के लिए किया जाता है

Computer मूलत दो भागों में बँटा होता है-

सॉफ्टवेयर

हार्डवेयर

### सॉफ्टवेयर क्या होता है?

सॉफ्टवेयर Computer का वह Part होता है जिसको हम केवल देख सकते हैं और उस पर कार्य कर सकते हैं, Software का निर्माण Computer पर कार्य करने को Simple बनाने के लिये किया जाता है, आजकल काम के हिसाब से Software का निर्माण किया जाता है, जैसा काम वैसा Software । Software को बड़ी बड़ी कंपनियों में यूजर की जरूरत को ध्यान में रखकर Software programmers द्वारा तैयार कराती हैं, इसमें से कुछ free में उपलब्ध होते हैं तथा कुछ के लिये चार्ज देना पडता है। जैसे आपको फोटो से सम्बन्धित कार्य करना हो तो उसके लिये फोटोशॉप या कोई वीडियो देखना हो तो उसके लिये मीडिया प्लेयर का यूज करते हैं।

### हार्डवेयर क्या होता है?

हार्डवेयर Computer का Machinery भाग होता है जैसे LCD, की-बोर्ड, माउस, सी0पी0यू0, यू0पी0एस0 आदि जिनको छूकर देखा जा सकता है। इन Machinery Part से मिलकर computer का बाहरी भाग तैयार होता है तथा Computer के इन्ही हार्डवेयर भागों से Computer की क्षमता का निर्धारण किया जाता है आजकल कुछ Software को Computer में चलाने के लिये निर्धारित Hardware की आवश्यकता होती है। यदि Software के अनुसार Computer में हार्डवेयर नहीं है तो Software को Computer में चलाया नहीं जा सकता है –

### कंप्यूटर हार्डवेयर क्या होता है - What is Computer Hardware

जैसा कि आप जानते हैं कंप्यूटर एक मशीन है और कंप्यूटर के यही मशीनरी पार्ट्स कंप्यूटर का हार्डवेयर कहलाते हैं लेकिन ऐसा नहीं है कि अकेला हार्डवेयर की सभी काम कर सकता है कंप्यूटर का दूसरा हिस्सा सॉफ्टवेयर भी है सॉफ्टवेयर की सहायता से ही कंप्यूटर के हार्डवेयर को निर्देश दिए जाते हैं और निर्देशों को फॉलो करते हुए हार्डवेयर सभी काम करता है।

मान लीजिए आपको कोई गाना सुनना है तो आप कंप्यूटर के किसी मल्टीमीडिया सॉफ्टवेयर से कोई गाना प्ले करेंगे लेकिन सुनने के लिए आपको स्पीकर की आवश्यकता होगी बिना स्पीकर के आप गाना नहीं सुन सकते हैं इसी प्रकार केवल स्पीकर के होने से ही आप गाना नहीं सुन सकते हैं आपके कंप्यूटर में मल्टीमीडिया एप्लीकेशन का होना आवश्यक है किसी गाने को सुनने के लिए अगर आपके कंप्यूटर मल्टीमीडिया एप्लीकेशन नहीं है तो आप कंप्यूटर से कोई गाना प्ले भी नहीं कर सकते हैं अगर देखा जाए तो सॉफ्टवेयर कंप्यूटर की आत्मा है और हार्डवेयर उसका शरीर है दोनों का होना परम आवश्यक है किसी भी काम को करने के लिए कंप्यूटर के साथ हार्डवेयर के रूप में जुड़े हुए सभी से महत्वपूर्ण होते हैं और अपना अलग-अलग -काम करते हैं जैसे कीबोर्ड इनपुट लेता है और प्रिंटर आपको आउटपुट देता है

**कम्प्यूटर के निम्न महत्वपूर्ण भाग होते हैं:-**

- मोनीटर या एल.सी.डी.
- कीबोर्ड
- माऊस
- सी.यू.पी.
- यूपीएस

यह सारे हार्डवेयर दो भागों में बँटे रहता है-

- **आउटपुट डिवाइस**
- **इनपुट डिवाइस**

### **आउटपुट डिवाइस (Output Device)**

**आउटपुट डिवाइस-:** आपके द्वारा दी गयी कमांड के आधार पर प्रोसेस की गयी जानकारी का आउटपुट कंप्यूटर द्वारा आपको दिया जाता है जो आपको आउटपुट डिवाइस या आउटपुट यूनिट द्वारा प्राप्त हो जाता है आउट डिवाइस हार्डवेयर होता है आउटपुट डिवाइस का सबसे बेहतर उदाहरण आपका कंप्यूटर मॉनिटर है यह i/o devices कहलाती है -

### **आउटपुट डिवाइस (Output Device)**

- मोनीटर
- स्पीकर
- प्रिन्टर
- प्रोजेक्टर
- हेडफोन
- प्रिंटर

प्रिंटर एक ऐसा आउटपुट डिवाइस (Output Device) है जो सॉफ्ट कॉपी (Soft Copy) को हार्ड कॉपी (Hard Copy) में परिवर्तित (Convert) करता है

### **इनपुट डिवाइस (Input Device)**

इनपुट डिवाइस वह डिवाइस होती हैं जिससे कंप्यूटर में डेटा और कमांड स्टोर या एंटर करवाया जाता है। आपके द्वारा सबसे ज्यादा इस्तेमाल कि जाने वाली इनपुट डिवाइस कीबोर्ड है जिसकी मदद से आप कंप्यूटर पर बड़े आसानी से टाइप कर पाते हैं इनपुट डिवाइस का काफी विकास हो चुका है जिनमें डाटा को टाइप करने की जरूरत नहीं पड़ती है इस प्रकार की कुछ डिवाइसेस आपका माऊस है, लाइट पेन है, ग्राफिक टैबलेट है, जॉय स्टिक है, ट्रैकबॉल है, और टच स्क्रीन है। ये सभी डिवाइस यूजर को मॉनिटर स्क्रीन पर आवश्यक चीजों को सिर्फ पाइंट करके सेलेक्ट करने की स्वतंत्रता प्रदान करती हैं इसलिए इन इनपुट डिवाइस को Pointing device भी कहा जाता है आजकल तो इनपुट डिवाइस का काफी उच्च स्तर पर इस्तेमाल हो रहा है यहां तक कि आपको टाइप करने की आवश्यकता नहीं है केवल बोलने से वॉइस इनपुट रिकग्निशन टेक्नोलॉजी की सहायता से टाइप कर सकते हैं यह वह हार्डवेयर डिवाइस होती है जिससे हम कम्प्यूटर में कोई भी डाटा या कमाण्ड इनपुट करा सकते हैं।

### **कंप्यूटर हार्डवेयर**

- माऊस
- कीबोर्ड
- स्केनर
- डी.वी.डी ड्राइव

- पेनडाईव
- कार्डरीडर
- माइक्रोफोन

### कंप्यूटर का उदभव एवं विकास

कंप्यूटर का आविष्कार आज से दो हजार वर्ष पूर्व हुआ था। तब कंप्यूटर की शुरुआत अबेकस के रूप में हुई थी। अबेकस लकड़ी का बना एक रैक होता है जिसमें दो तार लगे होते हैं। दोनों तार एक-दूसरे के समानांतर में स्थित होते हैं। तार के ऊपर मणिका आकार का वस्तु लगा होता था। उस मणिका को घुमाकर गणित के किसी आसान प्रश्नों का हल प्राप्त किया जाता था। दूसरे, वहाँ पर एस्ट्रोबेल लगा होता था जिसका उपयोग उसे आपस में जोड़ने में किया जाता था।

पहले डिजिटल कंप्यूटर का आविष्कार ब्लेज पास्कल द्वारा 1642 ई. में किया गया। इसमें नंबर लगा होता था जिसे डायल करना पड़ता था। लेकिन यह केवल जोड़ने का ही कार्य कर सकता था। तथापि 1671 ई. में एक कंप्यूटर का आविष्कार किया गया जो अंततः 1694 में जाकर तैयार हुआ। इस आविष्कार का श्रेय गॉटफ्राइड वीलहेम वॉन लीबनिज (Gottfried Wilhelm von Leibniz) को जाता है। लीबनिज ने योज्य अंक की शुरुआत के लिए स्टेप गीयर यंत्रावली का आविष्कार किया जिसका आज भी उपयोग होता है।

नीचे साल दर साल हुए कंप्यूटर के विकास का विवरण दिया जा रहा है :

- 3000 ईसा पूर्व बेबीलोन में अबेकेस का आविष्कार किया गया।
- 1800 ईसा पूर्व में बेबीलोनवासी ने संख्या समस्या के लिए एलॉगरिथम का आविष्कार किया।
- 500 ईसा पूर्व में मिस्रवासी ने मणिका एवं तार अबेकस बनाया।
- 200 ईसा पूर्व में जापान में कंप्यूटिंग ट्रे का उपयोग आरंभ हुआ।
- 1000 ईसा पूर्व में ऑरिलीक के गरबर्ट या पोप द्वारा नये अबेकस लाया गया।
- 1617 ई. में स्कॉटलैंड के आविष्कारक जॉन नेपियर ने घटाव के द्वारा भाग करने और जोड़ के द्वारा गुणा करने की प्रणाली के बारे में बताया।
- 1622 ई. में विलियम आउट्रेड द्वारा स्लाइड रूल विकसित किया गया।
- 1624 ई. में हीडबर्ग विश्वविद्यालय के विल्हेम सिकार्ड द्वारा प्रथम चतुष्कार्यीय कैलकुलेटर-घड़ी का आविष्कार किया गया।
- 1642 ई. में पेरिस के ब्लेज पास्कल द्वारा प्रथम अंकीय गणना मशीन बनाया गया।
- 1780 ई. में बेंजामिन फ्रैंकलिन द्वारा बिजली की खोज की गई।
- 1876 ई. में अलेग्जेंडर ग्राहम बेल ने टेलीफोन का आविष्कार किया।
- 1886 ई. में विलियम बरौग द्वारा व्यावसायिक यांत्रिकीय गणना मशीन विकसित किया गया जो सफल रहा।
- 1889 में हॉलेरीथ टेबुलेटिंग मशीन ने पेटेन्ट जारी किया।
- 1896 ई. में हॉलेरीथ ने टेबुलेटिंग मशीन कंपनी (जो स्वयं उनके द्वारा स्थापित था) के माध्यम से छँटाई मशीन का निर्माण किया।
- 1911 ई. में टेबुलेटिंग कंपनी के विलय के बाद कंप्यूटर टेबुलेटिंग रिकार्डिंग कंपनी का उदय हुआ। इसकी स्थापना कंप्यूटिंग स्केल कंपनी और इंटरनेशनल टाइम रिकार्डिंग कंपनी के विलय से हुआ।
- 1921 ई. में केरेल चेपेक द्वारा रोसम यूनिवर्सल रोबोट का उपयोग किया गया। चेक शब्द रोबोट का उपयोग मेकैनिकल कार्यकर्ता विश्लेषण करने के लिए प्रयुक्त।
- 1925 ई. में एम.आई.टी में वन्नेवर बुश द्वारा अवकलक विश्लेषक (Differential Analyzer) लार्ज स्केल एनालॉग कैलकुलेटर बनाया गया।

- 1927 ई. में लंदन व न्यूयार्क के बीच प्रथम सार्वजनिक रेडियो टेलीफोन का प्रयोग शुरू हुआ।
- 1931 ई. में जर्मनी के कोनार्ड ज्यूस ने जेड-1 या प्रथम कैलकुलेटर बनाया।
- 1936 में अंगरेज एलेन एम. टर्निंग ने एक मशीन बनाया जो गणना योग्य किसी फलन/कार्य के संगणन में सक्षम था।
- 1937 ई. में बेल टेलीफोन प्रयोगशाला में जार्ज स्टिब्ज ने प्रथम द्विघाती कैलकुलेटर बनाया।
- 1938 ई. में ह्वेलेट पैकर्ड कंपनी ने विद्युत उपकरण बनाया।
- 1940 ई. में टेलीविजन से रंगीन प्रसारण का शुभारंभ हुआ
- 1940 में बेल प्रयोगशाला द्वारा प्रथम टर्मिनल का निर्माण कर सुदूर प्रसंस्करण प्रयोग शुरू किया गया।
- 1944 ई. में इंगलैंड में कोलोसस मार्क-2 का निर्माण हुआ।
- 1947 ई. में एसोसिएसन फॉर कंप्यूटिंग मशीनरी का गठन हुआ।
- 1948 ई. में आई.बी.एम. द्वारा 604 इलेक्ट्रॉनिक कैलकुलेटर जारी किया गया।
- 1951 ई. में प्रथम संयुक्त कंप्यूटर सम्मेलन का आयोजन हुआ।
- 1953 ई. में यूनीवेक के लिए, रेमिंगटन रैंड द्वारा प्रथम उच्च गति वाला प्रिंटर विकसित किया गया।
- 1958 ई. में जापान एन.ई.सी. में प्रथम इलेक्ट्रॉनिक कंप्यूटर एन.ई.सी.- 1101 व 1102 विकसित किया गया।
- 1960 ई. में पहला हटाने जाने योग्य डिस्क लाया गया।
- 1958 ई. में डिजिटल इक्वीपमेन्ट कंपनी से प्रथम मिनी कंप्यूटर पी.डी.पी.-8 आया।
- 1969 ई. में डिजिटल इक्वीपमेन्ट कंपनी द्वारा 16 बाइट का मिनी कंप्यूटर पी.डी.पी. -11/20 तैयार किया गया।
- 1972 में इंटेल द्वारा 8 बाइट का माइक्रो प्रोसेसर लाया गया।
- 1976 ई. में पर्किन एल्मर व गाउल्ड एस.ई.एल ने सुपर मिनी कंप्यूटर बाजार में उतारा।
- 1977 ई. में एप्पल कंप्यूटर की स्थापना पर एप्पल-2 पर्सनल कंप्यूटर लाया गया।
- 1980 ई. में संयुक्त राज्य अमेरिका में कंप्यूटर की कुल संख्या 10 लाख के ऊपर पहुँची।
- 1983 ई. में संयुक्त राज्य में कंप्यूटर की कुल संख्या 1 करोड़ के पार पहुँची।
- 1983 ई. में संयुक्त राज्य में कंप्यूटर की कुल संख्या 3 करोड़ की संख्या को पार किया।
- 1992 ई. में माइक्रोसॉफ्ट द्वारा कार्य समूह के लिए विण्डोज ऑपरेटिंग सिस्टम का शुभारंभ किया गया।

### कंप्यूटर विकास के चरण

कंप्यूटर विकास के इतिहास को अक्सर ही कंप्यूटरीकरण के विविध यंत्रों की अलग पीढ़ियों से जोड़ कर देखा जाता है। कंप्यूटर की हरेक पीढ़ी एक अहम् तकनीकी विकास को दिखाता है जिसने आधारभूत तौर पर कंप्यूटर के काम करने के तरीके को बदल दिया। इससे और भी छोटे, सस्ते, अधिक शक्तिशाली और अधिक प्रभावी व भरोसेमंद उपकरण लगातार बनने लगे। यहाँ कंप्यूटर के विकास के विभिन्न चरणों की जानकारी दी जा रही है जिसके कारण आज मौजूदा उपकरण बने और जिनका हम इस्तेमाल कर रहे हैं।

### पहली पीढ़ी के कंप्यूटर

पहली पीढ़ी की अवधि 1946-1959 तक थी। पहली पीढ़ी के कंप्यूटरों ने सीपीयू (सेंट्रल प्रोसेसिंग यूनिट) के लिए मेमोरी और सर्किट्री के लिए बुनियादी घटकों के रूप में वैक्यूम ट्यूबों का इस्तेमाल किया। ये ट्यूब, बिजली के बल्बों की तरह, बहुत अधिक गर्मी पैदा करती थीं और स्थापना अक्सर पर्याप्त करती थीं। इसलिए, वे बहुत महंगे थे और केवल बड़े संगठन ही इसे वहन करने में सक्षम थे। इस पीढ़ी में, मुख्य रूप से बैच प्रोसेसिंग ऑपरेटिंग सिस्टम का उपयोग किया गया था। पंच कार्ड, कागज टेप, और चुंबकीय टेप

का उपयोग इनपुट और आउटपुट डिवाइस के रूप में किया गया था। इस पीढ़ी के कंप्यूटर ने प्रोग्रामिंग भाषा के रूप में मशीन कोड का उपयोग किया।

पहली पीढ़ी की मुख्य विशेषताएं हैं:

- वैक्यूम ट्यूब तकनीक
- अविश्वसनीय
- समर्थित मशीन भाषा ही
- बहुत क्रीमती
- बहुत गर्मी पैदा करता है
- धीमी इनपुट और आउटपुट डिवाइस
- विशाल आकार
- एसी की आवश्यकता
- गैर-पोर्टेबल
- बहुत बिजली की खपत

इस पीढ़ी के कुछ कंप्यूटर थे:

- ENIAC
- ईडीवीएसी
- UNIVAC
- आईबीएम -701
- आईबीएम -750

### **दूसरी पीढ़ी के कंप्यूटर**

दूसरी पीढ़ी की अवधि 1959-1965 तक थी। इस पीढ़ी में, ट्रांजिस्टर का उपयोग किया गया था जो सस्ती थी, कम बिजली की खपत, आकार में अधिक कॉम्पैक्ट, वैक्यूम ट्यूबों से बने पहली पीढ़ी की मशीनों की तुलना में अधिक विश्वसनीय और तेज थी। इस पीढ़ी में, प्राथमिक कोर के रूप में चुंबकीय कोर और माध्यमिक भंडारण उपकरणों के रूप में चुंबकीय टेप और चुंबकीय डिस्क का उपयोग किया गया था। इस पीढ़ी में, असेंबली भाषा और उच्च स्तरीय प्रोग्रामिंग भाषाओं जैसे कि फोरट्रान, कोबोल का उपयोग किया गया था। कंप्यूटर बैच प्रोसेसिंग और मल्टीप्रोग्रामिंग ऑपरेटिंग सिस्टम का इस्तेमाल करते थे।

दूसरी पीढ़ी की मुख्य विशेषताएं हैं:

- ट्रांजिस्टर का उपयोग
- पहली पीढ़ी के कंप्यूटरों की तुलना में विश्वसनीय
- पहली पीढ़ी के कंप्यूटरों की तुलना में छोटा आकार
- पहली पीढ़ी के कंप्यूटर की तुलना में कम गर्मी उत्पन्न करता है
- पहली पीढ़ी के कंप्यूटरों की तुलना में कम बिजली का उपभोग
- पहली पीढ़ी के कंप्यूटर की तुलना में तेज़
- फिर भी बहुत महंगा
- एसी की आवश्यकता
- समर्थित मशीन और विधानसभा भाषाओं

इस पीढ़ी के कुछ कंप्यूटर थे:

- आईबीएम 1620
- आईबीएम 7094
- सीडीसी 1604

- सीडीसी 3600
- UNIVAC 1108

### तीसरी पीढ़ी के कंप्यूटर

तीसरी पीढ़ी की अवधि 1965-1971 तक थी। तीसरी पीढ़ी के कंप्यूटरों ने ट्रांजिस्टर की जगह इंटीग्रेटेड सर्किट (IC) का इस्तेमाल किया। एक एकल आईसी में संबंधित सर्किटों के साथ कई ट्रांजिस्टर, प्रतिरोधक और कैपेसिटर होते हैं। आईसी का आविष्कार जैक किल्बी ने किया था। इस विकास ने कंप्यूटरों को आकार में छोटा, विश्वसनीय और कुशल बनाया। इस पीढ़ी में रिमोट प्रोसेसिंग, टाइम-शेयरिंग, मल्टी-प्रोग्रामिंग ऑपरेटिंग सिस्टम का उपयोग किया गया था। इस पीढ़ी के दौरान उच्च-स्तरीय भाषाओं (फोरट्रान- II से IV, COBOL, PASCAL PL / 1, BASIC, ALGOL-68 आदि) का उपयोग किया गया।

तीसरी पीढ़ी की मुख्य विशेषताएं हैं:

- आईसी का इस्तेमाल किया
- पिछली दो पीढ़ियों की तुलना में अधिक विश्वसनीय
- छोटे आकार का
- कम गर्मी पैदा करता है
- और तेज
- कम रखरखाव
- महंगा
- एसी की आवश्यकता
- कम बिजली का उपभोग
- उच्च स्तरीय भाषा का समर्थन किया

इस पीढ़ी के कुछ कंप्यूटर थे:

- IBM-360 श्रृंखला
- हनीवेल-6000 श्रृंखला
- पीडीपी (व्यक्तिगत डेटा प्रोसेसर)
- आईबीएम -370 / 168
- TDC-316

### चौथी पीढ़ी के कंप्यूटर

चौथी पीढ़ी की अवधि 1971-1980 तक थी। चौथी पीढ़ी के कंप्यूटरों ने बहुत बड़े पैमाने पर एकीकृत (वीएलएसआई) सर्किट का इस्तेमाल किया। वीएलएसआई सर्किट में एक ही चिप पर लगभग 5000 ट्रांजिस्टर और उनके जुड़े सर्किट के साथ अन्य सर्किट तत्व होते हैं। चौथी पीढ़ी के माइक्रो कंप्यूटर। चौथी पीढ़ी के कंप्यूटर अधिक शक्तिशाली, कॉम्पैक्ट, विश्वसनीय और सस्ती हो गए। परिणामस्वरूप, इसने पर्सनल कंप्यूटर (पीसी) क्रांति को जन्म दिया। इस पीढ़ी में, समय साझा करने, वास्तविक समय नेटवर्क, वितरित ऑपरेटिंग सिस्टम का उपयोग किया गया था। इस पीढ़ी में सभी उच्च-स्तरीय भाषाओं जैसे C, C ++, DBASE आदि का उपयोग किया गया था।

चौथी पीढ़ी की मुख्य विशेषताएं हैं:

- वीएलएसआई तकनीक का इस्तेमाल किया
- बहुत सस्ता
- पोर्टेबल और विश्वसनीय

- पीसी का उपयोग
- बहुत छोटा आकार
- पाइपलाइन प्रसंस्करण
- एसी की आवश्यकता नहीं है
- इंटरनेट की अवधारणा शुरू की गई थी
- नेटवर्क के क्षेत्र में शानदार विकास
- कंप्यूटर आसानी से उपलब्ध हो गए

इस पीढ़ी के कुछ कंप्यूटर थे:

- DEC 10
- स्टार 1000
- पीडीपी 11
- CRAY-1 (सुपर कंप्यूटर)
- क्रे-एक्स-एमपी (सुपर कंप्यूटर)

### पांचवीं पीढ़ी के कंप्यूटर

पांचवीं पीढ़ी की अवधि 1980-आज तक है। पांचवीं पीढ़ी में, वीएलएसआई तकनीक ULSI (अल्ट्रा लार्ज स्केल इंटीग्रेशन) तकनीक बन गई, जिसके परिणामस्वरूप माइक्रोप्रोसेसर चिप्स के उत्पादन में दस मिलियन इलेक्ट्रॉनिक घटक थे। यह पीढ़ी समानांतर प्रसंस्करण हार्डवेयर और AI (कृत्रिम बुद्धिमत्ता) सॉफ्टवेयर पर आधारित है। कंप्यूटर विज्ञान में AI एक उभरती हुई शाखा है, जो कंप्यूटर को इंसान की तरह बनाने के माध्यम और तरीके की व्याख्या करता है। C और C ++, Java, .Net आदि जैसी सभी उच्च-स्तरीय भाषाओं का उपयोग किया जाता है।

पांचवीं पीढ़ी की मुख्य विशेषताएं हैं:

- ULSI तकनीक
- सच्ची कृत्रिम बुद्धि का विकास
- प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण का विकास
- समानांतर प्रसंस्करण में उन्नति
- सुपरकंडक्टर तकनीक में उन्नति
- मल्टीमीडिया सुविधाओं के साथ अधिक उपयोगकर्ता के अनुकूल इंटरफेस
- सस्ती दरों पर बहुत शक्तिशाली और कॉम्पैक्ट कंप्यूटरों की उपलब्धता

इस पीढ़ी के कुछ कंप्यूटर प्रकार हैं:

- डेस्कटॉप
- लैपटॉप
- स्मरण पुस्तक
- अल्ट्राबुक
- क्रोमबुक

### कंप्यूटर का वर्गीकरण

तीन प्रमुख श्रेणियां हैं जिनके आधार पर कंप्यूटरों को वर्गीकृत किया जा सकता है। ये हैं:

- आकार के आधार पर (Based on Size)
- उद्देश्य के आधार पर (Based on Purpose)
- प्रकार के आधार पर (Based on Types)

कंप्यूटर के प्रकार आकार के आधार पर - नीचे उनके कार्यों के साथ उनके आकार के आधार पर कंप्यूटर के चार प्रकार बताए गए हैं:

### क. माइक्रो कंप्यूटर

माइक्रो कंप्यूटर एक छोटे पैमाने पर एक पूर्ण कंप्यूटर है, जिसे एक समय में एक व्यक्ति द्वारा उपयोग के लिए डिज़ाइन किया गया है। एक प्राचीन शब्द, एक माइक्रो कंप्यूटर को अब मुख्य रूप से एक व्यक्तिगत कंप्यूटर (पीसी), या एकलचिप माइक्रोप्रोसेसर पर आधारित डिवाइस कहा जाता है।- आम माइक्रो कंप्यूटर में लैपटॉप और डेस्कटॉप शामिल होते हैं। मानक पीसी से परे, माइक्रो कंप्यूटर में कुछ कैलकुलेटर, मोबाइल फोन, नोटबुक, वर्कस्टेशन और एम्बेडेड सिस्टम भी शामिल हैं। मेनफ्रेम या मिनीकंप्यूटर की तुलना में छोटा, एक माइक्रो कंप्यूटर अपने केंद्रीय प्रसंस्करण इकाई के लिए एकल एकीकृत (सीपीयू) सेमीकंडक्टर चिप का उपयोग करता है।

### ख मिनी कंप्यूटर

एक मिनीकंप्यूटर एक प्रकार का कंप्यूटर है, जिसमें एक बड़े कंप्यूटर की अधिकांश विशेषताएं और क्षमताएं होती हैं, लेकिन भौतिक आकार में छोटा होता है। एक मिनीकॉम्प्यूटर मेनफ्रेम और माइक्रो कंप्यूटर के बीच की जगह को भरता है, और पूर्व की तुलना में छोटा है लेकिन बाद के मुकाबले बड़ा है।

### ग मेनफ्रेम कंप्यूटर

मेनफ्रेम एक प्रकार का कंप्यूटर है जो आम तौर पर अपने बड़े आकार, भंडारण की मात्रा, प्रसंस्करण शक्ति और उच्च स्तर की विश्वसनीयता के लिए जाना जाता है। वे मुख्य रूप से मिशन-महत्वपूर्ण अनुप्रयोगों के लिए बड़े संगठनों द्वारा उपयोग किए जाते हैं, जिन्हें डेटा प्रोसेसिंग के उच्च संस्करणों की आवश्यकता होती है। सामान्य तौर पर, मेनफ्रेम की कुछ विशेषताएं हैं जो सभी मेनफ्रेम विक्रेताओं के बीच आम हैं: लगभग सभी मेनफ्रेम में कई ऑपरेटिंग सिस्टम चलाने (या होस्ट) करने की क्षमता है। मेनफ्रेम विघटन के बिना स्वेप या हॉट स्वेप सिस्टम क्षमता जोड़ सकते हैं। मेनफ्रेम को बहुत अधिक मात्रा में इनपुट और आउटपुट (I / O) को संभालने के लिए डिज़ाइन किया गया है और थ्रूपुट कंप्यूटिंग पर जोर दिया गया है। एक सिंगल मेनफ्रेम दर्जनों या सैकड़ों छोटे सर्वरों को बदल सकता है।

### घ सुपर कंप्यूटर

सुपरकंप्यूटर सामान्य-उद्देश्य वाले कंप्यूटर की तुलना में उच्च स्तर के प्रदर्शन वाला एक कंप्यूटर है। सुपरकंप्यूटर का प्रदर्शन फ्लोटिंग-पॉइंट ऑपरेशन प्रति सेकंड (FLOPS) के बजाय मिलियन निर्देश प्रति सेकंड (MIPS) में मापा जाता है। सुपर कंप्यूटर में हजारों प्रोसेसर होते हैं और प्रति सेकंड अरबों और खरबों की गणना या गणना कर सकते हैं। कुछ सुपर कंप्यूटर सौ काइल FLOPS तक का प्रदर्शन कर सकते हैं। चूंकि सुपरकंप्यूटर (वितरित कंप्यूटिंग सिस्टम की तुलना में) प्रोसेसर के बीच जानकारी जल्दी से चलती है, वे वास्तविक समय के अनुप्रयोगों के लिए आदर्श हैं।

सुपर-कंप्यूटर का उपयोग डेटा-गहन और संगणना-भारी वैज्ञानिक और इंजीनियरिंग उद्देश्यों के लिए किया जाता है, जैसे क्वांटम यांत्रिकी, मौसम पूर्वानुमान, तेल और गैस की खोज, आणविक मॉडलिंग, भौतिक सिमुलेशन, वायुगतिकी, परमाणु संलयन अनुसंधान और क्रिप्टोकॉरेसी।

### कंप्यूटर के प्रकार - उद्देश्य से (Based on Purpose)

उद्देश्य के आधार पर, केवल दो प्रकार के कंप्यूटर हैं। उन दो किस्मों पर नीचे विस्तार से चर्चा की गई है:

**सामान्य प्रयोजन (General Purpose)-** सामान्य प्रयोजन के आधार पर, ये निम्नलिखित कार्य हैं जिनसे एक उपकरण के प्रदर्शन की उम्मीद की जाती है:

- मूल इनपुट / आउटपुट कार्य
- गणना

- एक छोटे पैमाने पर डेटा की बचत
- सामान्य क्रियाकलाप

इनमें बुनियादी कैलकुलेटर, लैपटॉप, डेस्कटॉप कंप्यूटर, मोबाइल फोन आदि शामिल हो सकते हैं, जो सामान्य बुनियादी कंप्यूटर प्रकार में शामिल लोगों को उनके बुनियादी आवश्यक कार्यों में मदद कर सकते हैं।

**विशेष प्रयोजन (Special Purpose)** - जब एक कंप्यूटर को किसी विशेष कार्य को करने के लिए विशेष रूप से डिज़ाइन किया जाता है, तो इस प्रकार के कंप्यूटरों को विशेष प्रयोजन कंप्यूटर के रूप में जाना जाता है। इन प्रकारों में शामिल हो सकते हैं:

- तापमान का परीक्षण करने के लिए थर्मामीटर
- बिजली का प्रबंधन करने के लिए जनरेटर
- जलवायु परिवर्तन के विश्लेषण के लिए प्रयुक्त उपकरण
- आईटी कंपनियों के लिए बड़े कंप्यूटर
- मैनुफैक्चरिंग यूनिट्स में इस्तेमाल की जाने वाली मशीनें और लिस्ट चलती रहती हैं

विशेष-प्रयोजन कंप्यूटर विभिन्न संगठनों के लिए महत्वपूर्ण हैं और उनके अनुप्रयोग इस तरह से बनाए जाते हैं जो कार्य को आसान और कुशल बनाते हैं।

### कंप्यूटर के प्रकार - प्रकार के आधार पर (Based on Types)

उनके कार्यों के साथ तीन प्रकार के कंप्यूटर नीचे दिए गए हैं:

**एनालॉग कंप्यूटर** - एक एनालॉग कंप्यूटर एक जो समस्या को हल करने के लिए भौतिक घटनाओं के निरंतर परिवर्तनशील पहलुओं का उपयोग करता है। ये घटनाएँ विद्युत, यांत्रिक या हाइड्रोलिक मात्रा जैसे हो सकती हैं और इनका उपयोग किया जाना अत्यंत जटिल है। ऐसे कंप्यूटर ज्यादातर वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुप्रयोगों के लिए उपयोग किए जाते हैं। एनालॉग कंप्यूटर के उदाहरणों में थर्मामीटर, ऑपरेशनल एम्पलीफायर्स, इलेक्ट्रिक इंटीग्रेटर्स आदि शामिल हैं।

**डिजिटल कंप्यूटर** - ऐसे कंप्यूटर असतत प्रारूप में समस्याओं को हल करने में सक्षम हैं। यह केवल बाइनरी भाषा में दर्ज किए गए डेटा पर काम करता है और बड़ी मात्रा में डेटा के प्रबंधन और मशीन के संचालन को विनियमित करने का गतिशील कार्य कर सकता है, डिजिटल कंप्यूटर के उदाहरण डेस्कटॉप, लैपटॉप, मोबाइल फ़ोन, आदि हैं।

**हाइब्रिड कंप्यूटर** - कंप्यूटर जो एनालॉग और डिजिटल कंप्यूटर दोनों की विशेषताओं को प्रदर्शित करते हैं, हाइब्रिड कंप्यूटर कहलाते हैं। तार्किक संचालन डिजिटल पहलुओं द्वारा हल किए जाते हैं और एनालॉग विशेषताओं का उपयोग करके अंतर समीकरणों को हल किया जाता है। हाइब्रिड कंप्यूटर्स के कुछ महत्वपूर्ण उदाहरणों में स्पेस फ्लाइट्स, फूड प्रोसेसिंग प्लांट्स आदि शामिल हैं।

### कम्प्यूटर के अनुप्रयोग - Application of computer

- **डाटा प्रोसेसिंग (Data processing)** - बड़ें और विशाल पैमाने पर डाटा प्रोसेसिंग (Data processing) करने के लिये और सूचना तैयार करने के लिये कंप्यूटर का प्रयोग किया जाता है इससे डाटा इकट्ठा करना उसका विश्लेषण करना और सूचना प्राप्त करना बहुत आसान हो जाता है
- **शिक्षा (Education)** - कंप्यूटर में आधुनिक शिक्षा की तस्वीर ही बदल दी है, आज इन्टरनेट के मध्यम से हम किसी भी विषय की जानकारी कुछ ही क्षणों में प्राप्त कर सकते हैं, स्कूल और कॉलेजों को भी इन्टरनेट से जोड़ दिया गया है तथा कई जगहों पर स्मार्ट क्लास पर जोर दिया जा रहा है जो कंप्यूटर की वजह से ही संभव है

- **बैंक (Bank)**- बैंकिंग क्षेत्र में तो कम्प्यूटर के उपयोग ने क्रांति ही ला दी है, पुराने जमाने के बही खाते और रजिस्टर की जगह कम्प्यूटर ने ले ली है बैंकों के अधिकांश कार्य कम्प्यूटर के माध्यम से ही हो रहे हैं जैसे पैसे निकालना और जमा करना, यहां तक कि रूपया गिनने के लिए भी कम्प्यूटरीकृत मशीने उपलब्ध हैं
- **संचार (Communication)**- 4जी इंटरनेट को आज बच्चा-बच्चा प्रयोग कर रहा है कम्प्यूटर तकनीक ने ही संचार के क्षेत्र में इंटरनेट के प्रयोग को सम्भव बनाया है और इंटरनेट ने संचार क्रांति को जन्म दिया।
- **मनोरंजन (Recreation)**- मल्टीमिडिया के प्रयोग ने तो कम्प्यूटर को बहुयामी बना दिया है, कम्प्यूटर का उपयोग प्रायः सिनेमा, टेलीविजन, वीडियो गेम खेलने के लिये भी किया जाता है।
- **प्रशासन (Governance)** - हर एक संस्थान में अपना एक आंतरिक प्रशासन होता है और प्रशासनिक कार्य कम्प्यूटर से ही किये जाते हैं, साथ ही साथ सरकारी योजनाओं का लाभ भी ई-शासन (E-governance) के रूप में आज आमजनों के घरों तक पहुँच रहा है।
- **सुरक्षा (Security)**- आज बिना कम्प्यूटर के हमारी सुरक्षा व्यवस्था बिलकुल कमजोर हो जाएगी । एयरक्राफ्ट टैक करने में, हवाई हमले करने में, सीसीटीवी कैमरे में कम्प्यूटर का उपयोग होता है।
- **वाणिज्य (Commerce)** - दुकान, बैंक, बीमा, क्रेडिट कंपनी, आदि में कम्प्यूटर का अधिकतम उपयोग होता है । कम्प्यूटर के बिना काम करना वित्तीय दुनिया के लिए असंभव हो गया है।
- **उद्योग (Industry)**- बहुत सारे औद्योगिक संस्थान; जैसे – स्टील, कैमिकल, तेल कंपनी आदि कम्प्यूटर पर निर्भर हैं । संयंत्र प्रक्रियाओं के वास्तविक नियंत्रण के लिए भी कम्प्यूटर का उपयोग करते हैं ।
- **चिकित्सा (Medicine)** - चिकित्सा के क्षेत्र में कम्प्यूटर का अनुप्रयोग विभिन्न शारीरिक रोगों का पता लगाने के लिए किया जाता है, रोगों का विश्लेषण और निदान भी कम्प्यूटर के द्वारा संभव है, आधुनिक युग में एक्स रे, सिटी स्कैन, अल्ट्रासाउंड इत्यादि विभिन्न क्षेत्र में कम्प्यूटर का व्यापक उपयोग हो रहा है

### कंप्यूटर की विशेषता - Features of Computers

कंप्यूटर की विभिन्न विशेषताओं को नीचे दिया गया है।

1. **स्पीड:** - एक कंप्यूटर एक बहुत ही हाई स्पीड डिवाइस है। वे प्रति सेकंड सौ मिलियन से अधिक निर्देशों को निष्पादित या निष्पादित कर सकते हैं, इस प्रकार एक उच्च गति प्रदर्शन होता है।
2. **सटीकता:** - कंप्यूटर की सटीकता लगातार उच्च होती है और किसी विशेष की सटीकता की डिग्री इसके डिजाइन पर निर्भर करती है। लेकिन एक विशेष कंप्यूटर के लिए, प्रत्येक और प्रत्येक गणना समान सटीकता के साथ की जाती है। किसी कंप्यूटर में त्रुटियां हो सकती हैं, लेकिन ये मुख्य रूप से तकनीकी कमजोरियों के बजाय मानव के कारण होते हैं, अर्थात् प्रोग्रामर द्वारा गलत सोच के कारण या गलत डेटा के कारण।
3. **परिश्रम:** - (कोई थकान नहीं) - एक इंसान ऊब जाता है और थक जाता है और दोहराव वाले कार्यों में दक्षता और सटीकता खो देता है लेकिन एक कंप्यूटर कभी भी ऊब या थका हुआ नहीं होता है। यह किसी भी संख्या के लिए समान गति और समान सटीकता के साथ गणना करेगा।
4. **संग्रहण:** - कंप्यूटर की गणना की उच्च गति, अधिक से अधिक आंतरिक मेमोरी की आवश्यकता होती है। वर्तमान कंप्यूटर की भंडारण क्षमता मेगाबाइट और गीगाबाइट में प्रवेश कर गई है। एक अच्छा कंप्यूटर कुछ गीगाबाइट रैम के लिए कुछ सौ मेगाबाइट का समर्थन करता है।
5. **बहुमुखी प्रतिभा:** - एक कंप्यूटर एक बहुमुखी मशीन है। इसका उपयोग विभिन्न भरी हुई समस्याओं को हल करने के लिए किया जा सकता है। एक पल में, यह एक जटिल वैज्ञानिक समस्या को हल कर

सकता है और अगले ही पल यह एक खेल खेल सकता है और फिर एक डेटाबेस समस्या को लेने में व्यस्त है।

6. **विश्वसनीयता:** - कंप्यूटर विश्वसनीय हैं, बहुत सटीक हैं और अंकगणितीय गणना में गलतियाँ नहीं करते हैं। इसके पीछे कारण यह है कि हार्डवेयर स्तर पर, इसके प्रसंस्करण कार्यों के बीच मानवीय हस्तक्षेप की आवश्यकता नहीं होती है। इसके अलावा कंप्यूटर में नैदानिक क्षमताओं में निर्मित होते हैं जो सिस्टम की निरंतर निगरानी में मदद करते हैं।

7. **कागजी काम में कमी:** - डाटा प्रोसेसिंग के लिए कंप्यूटरों के उपयोग ने डेटा बेस और फाइलों में डेटा के भंडारण के माध्यम से कुछ कागज की ज़रूरतों को समाप्त करने के लिए पेपर हैंडलिंग की बढ़ती समस्याओं से निपटने के लिए (प्रबंधन) व्यवसाय संगठन के प्रबंधन में मदद की है। जहां से आवश्यकता पड़ने पर उन्हें पुनः प्राप्त किया जा सके।

8. **लागत में कमी:** - कंप्यूटर स्थापित करने के लिए प्रारंभिक निवेश अधिक है लेकिन यह काफी हद तक (काफी) इसके संचालन की लागत को कम करता है।

9. **पुनर्प्राप्ति क्षमता:** - एक कंप्यूटर में न केवल एक उच्च भंडारण क्षमता होती है, बल्कि यह उच्च सटीकता के साथ सेकंड में संग्रहीत डेटा या ज्ञान को पुनः प्राप्त कर सकता है। यह अपनी मुख्य मेमोरी से या माध्यमिक भंडारण या दोनों से किसी भी जानकारी को स्टोर और रिकॉल कर सकता है।

10. **अभिकलन करने की क्षमता में वृद्धि:** - कंप्यूटर के उपयोग ने गति के साथ संगणना करने में मदद की।

11. **डेटा बेस:** - डेटाबेस की स्थापना के व्यवसाय संगठन सुविधाओं में कंप्यूटर सुविधा का उपयोग। डेटा बेस डेटा रिकॉर्ड को एकीकृत करता है और अतिरिक्त डाटा को कम करता है।

## कंप्यूटर की संरचना (Computer Architecture )

### 1- इनपुट यूनिट (Input unit)

इनपुट यूनिट (Input unit) कंप्यूटर के वह भाग हार्डवेयर होते हैं जिनके माध्यम से कंप्यूटर में कोई डाटा एंटर किया जा सकता है इनपुट के लिये आप कीबोर्ड-, माउस इत्यादि इनपुट डिवाइस का प्रयोग करते हैं साथ ही कंप्यूटर को सॉफ्टवेयर के माध्यम से कमांड या निर्देश देते हैं।

### 2- सेन्ट्रल प्रोसेसिंग यूनिट (Central processing unit)

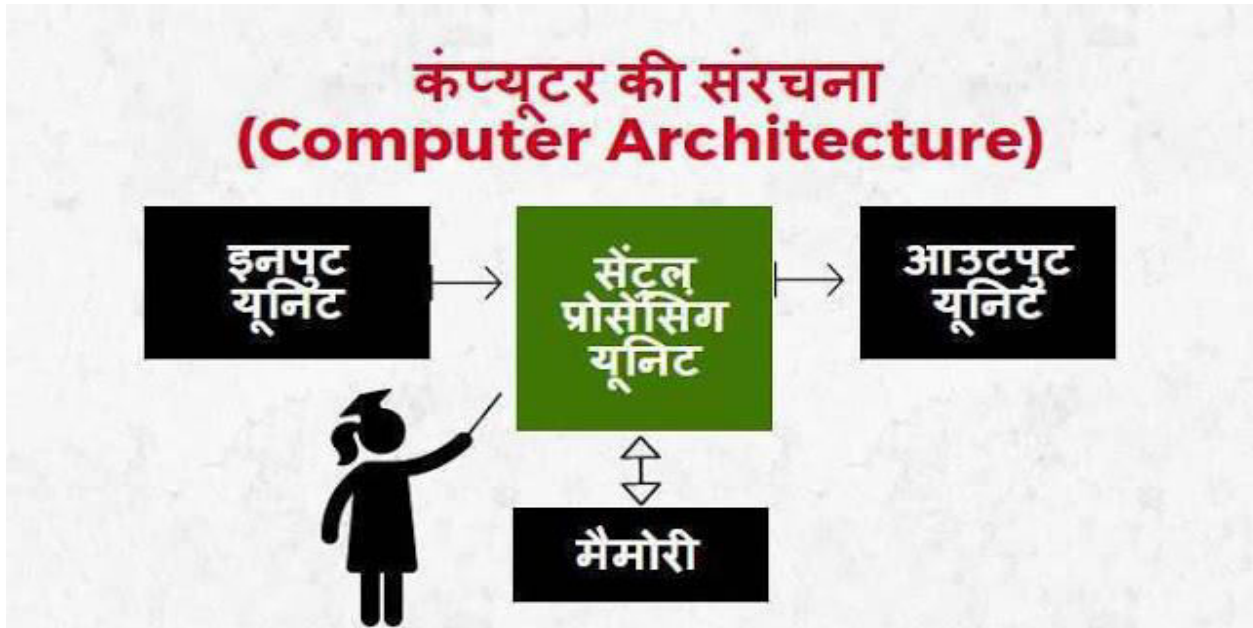
सेन्ट्रल प्रोसेसिंग यूनिट (Central processing unit) इनपुट डाटा को प्रोसेस करता है इसके लिये **सेंट्रल प्रोसेसिंग यूनिट और अर्थमेटिक लॉजिक यूनिट** दोनों मिलकर **अंकगणितीय गणना (Arithmetic Calculation) और तार्किक गणना** करते हैं और डाटा को प्रोसेस करते हैं CPU को कंप्यूटर का मस्तिष्क कहा जाता है।

### 3- मेमोरी (Memory)

मेमोरी कंप्यूटर का वह भाग है यूजर द्वारा इनपुट किये डाटा और प्रोसेस डाटा को संग्रहीत करती है, यह प्राथमिक और द्वितीय दो प्रकार की होती है उदाहरण के लिये रैम और हार्ड डिस्क।

### 4- आउटपुट यूनिट (Output unit)

आपके द्वारा दी गयी कमांड के आधार पर प्रोसेस की गयी जानकारी का आउटपुट कंप्यूटर द्वारा आपको दिया जाता है जो आपको आउटपुट डिवाइस या आउटपुट यूनिट द्वारा प्राप्त हो जाता है आउट डिवाइस का सबसे बेहतर उदाहरण आपका कंप्यूटर मॉनिटर है।



### Computer के विभिन्न उपकरण

Computer की आंतरिक संरचना के बारे में विस्तार से जानते समय इसके भौतिक रूप से परिचित होते हैं। वर्तमान समय में आम बोलचाल की भाषा कम्प्यूटर को PC या Personal Computer कहा जाता है। जब हमारी नजर पहली बार पड़ती है तो इसके निम्न भाग हमें दिखाई देते हैं।

#### (1) Monitor-

Computer का वह अनिवार्य भाग जिसकी **Screen** या पटल पर यह देता है कि काम क्या हो रहा है? यह भाग Computer की Output यूनिट के अन्तर्गत आता है।



यह कंप्यूटर का मुख्य भाग होता है जिसकी मदद से आपको यह जानने को मिलता है कि कंप्यूटर **Software** पर क्या **Run** हो रहा है और यह कैसे काम करता है। बिना **Monitor** के **Computer** को चलाना लगभग नामुमकिन है।

**(2) Keyboard-**

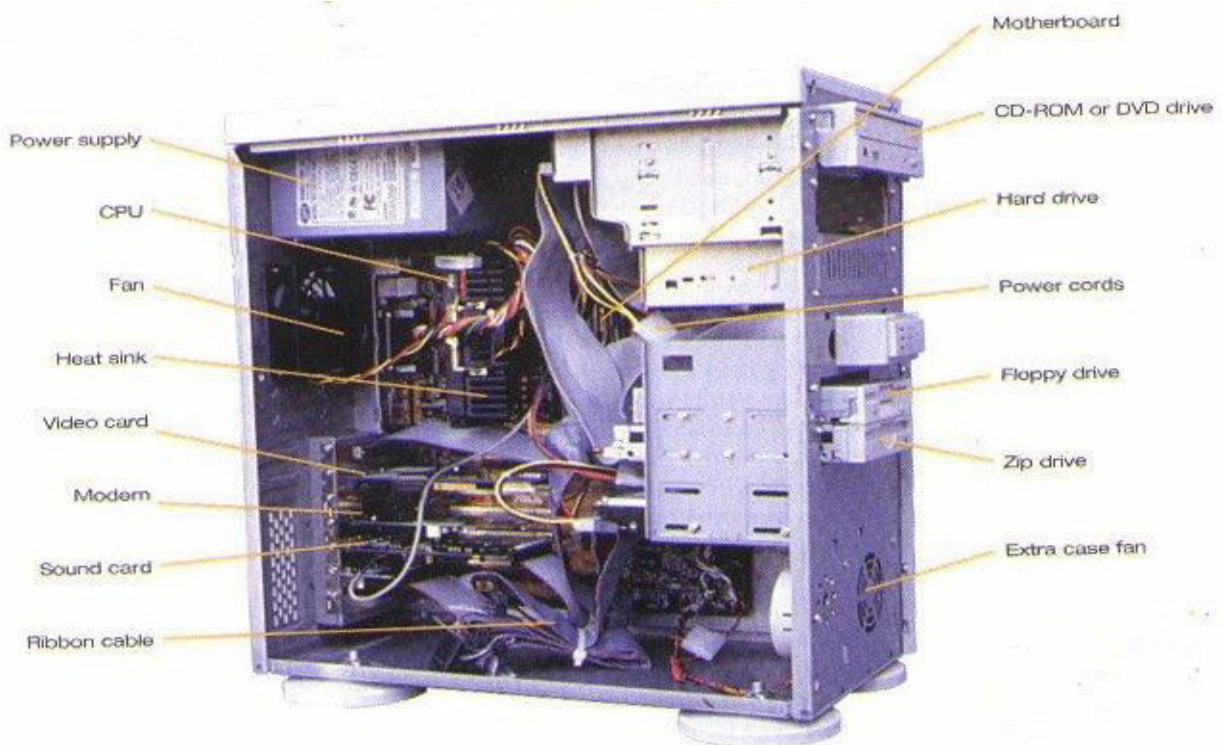
कम्प्यूटर का वह अनिवार्य भाग जिसके द्वारा हम Computer को काम करने के आदेश और डाटा इनपुट करते हैं। यह भाग Computer की इनपुट Unit के अन्तर्गत आता है।



आप इस **Keyboard** की मदद से **Data Entry, Application Type**, कर सकते हैं **Email** लिख सकते हैं और भी बहुत सारे **Typing** वर्क आप कर सकते हैं।

**(3) सेंट्रल प्रोसेसिंग यूनिट**

कम्प्यूटर का वह अनिवार्य भाग जिसमें कार्य की प्रोसेसिंग, उसके परिणामों यानी पूरे PC को चलाने के अंदरूनी Hardware संसाधन लगे होते हैं। **Keyboard, Monitor, Printer**, – इत्यादि को इसी से जोड़ा जाता है।

**(4) Mouse-**

वर्तमान समय में Computer का वह अनिवार्य भाग जिसके द्वारा Screen पर मनचाही जगह प्वाइंटर को ले जाकर कमांड क्रियान्वित करते हैं। विंडोज ऑपरेटिंग सिस्टम को इसके बिना संचालित नहीं किया जा सकता है।

**(5) Printer-**

यह एक वैकल्पिक भाग होता है। इससे अपने काम और दस्तावेज की छपी कॉपी निकालते हैं। इसे सेन्ट्रल प्रोसेसिंग यूनिट में बनी कम्प्युनिकेशन पोर्ट से जोड़ा जाता है। इसे वर्तमान समय में USB(यूनिवर्सल सीरियल बस) और LPT1(लाइन प्रिंट टर्मिनल) से जोड़ते हैं।



## नये आवश्यक उपकरण



**नये आवश्यक उपकरण-** इन दिनों Computer के साथ और कई उपयोगी उपकरण लगे होते हैं जिनसे इसकी कार्य-क्षमता में बढ़ोत्तरी तो होती ही है और इसके साथ ही यह बहुआयामी(Multifunctional) भी हो जाता है। इनमें से कुछ निम्नलिखित हैं

**(1) CD, DVD Driver** – फ्लॉपी की जगह अब इसी ड्राइव का अधिक उपयोग हो रहा है। इसके द्वारा जहाँ बड़े बड़े सॉफ्टवेयरों को इन्स्टॉल करते हैं वहीं इसमें-Data Backup भी लिया जाता है। आज Computer को Boot भी इसी से किया जाता है।

**(2) Speaker-** वर्तमान समय में Multimedia तकनीक की वजह से इसका प्रयोग लगभग अनिवार्य हो गया है। इससे कम्प्यूटर में स्टोर आवाज को सुना जा सकता है। इन्हें सीपीयू में लगी साउंड पोर्ट से जोड़ा जाता है।

**(3) Mic-** वर्तमान समय में **Multimedia** तकनीक की वजह से इसका प्रयोग भी लगभग अनिवार्य हो गया है। इससे कम्प्यूटर में आवाज को इनपूट किया जा सकता है। इंटरनेट से फोन करने में इसका प्रयोग सबसे ज्यादा किया जाता है। यदि हम **Headphone** का प्रयोग करते हैं तो यह हैडफोन में लगा होता है। स्पीच रिकग्नीशन के लिये इसका कम्प्यूटर से जुड़ना अनिवार्य है।

**(4) Modem-** इस उपकरण का प्रयोग फोन लाइन से संदेश लेन-देन और इंटरनेट से जुड़ने के लिये किया जाता है। यदि हमारे पास इंटरनेट का डॉयल-अप कनेक्शन है तो इसका कम्प्यूटर में लगा होना जरूरी है। इसे सीपीयू के अन्दर भी लगाया जा सकता है।

**(5) LAN card-** वर्तमान समय में पर्सनल Computer की जगह Network कम्प्यूटरों का चलन बढ़ रहा है। इसी वजह से इस कार्ड का प्रयोग भी बढ़ गया है। यह कार्ड आज के प्रत्येक कम्प्यूटर में किसी न किसी रूप में लगा होता है। इसके द्वारा एक कम्प्यूटर को एक तार के जरिये दूसरे कम्प्यूटर से जोड़ सकते हैं। इसके अलावा इससे **Broadband Internet** को प्रयोग किया जाता है।

**(6) Scanner, Digital Camera-** इन उपकरणों का प्रयोग Computer में Image को Input करने के लिये किया जाता है। Scanner जहाँ कागज पर छपी इमेज को स्कैन करके कम्प्यूटर में इनटपुट करता है वहीं डिजिटल कैमरा इमेज खींचकर उसे एक फाइल के रूप में कम्प्यूटर में इनपुट कर सकता है।

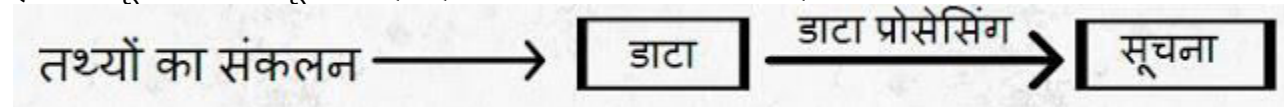
**(7) UPS-** इस उपकरण का प्रयोग बिजली के उतारचढ़ावों के नुकसान से पीसी को बचाने और लगातार - बिजली की आपूर्ति के लिये किया जाता है। आपने अक्सर देखा होगा कि, जब कभी भी हम **Computer Desktop** पर अपना कार्य करते हैं और अचानक से अगर बिजली चली जाती है तो हमारा कंप्यूटर का सारा Work का नुकसान हो जाता है, लेकिन इसके समाधान के लिए UPS बनाया गया है जो कि आपको 15 से 20 मिनट की बिजली दे देता है जब कभी भी बिजली चली जाती है।

### (आंकड़ा संसाधन) डाटा प्रोसेसिंग क्या है - What is Data Processing

सबसे पहले प्रोसेसिंग (Processing) शब्द को समझते हैं, **कंप्यूटर (Computer)** की भाषा में किसी भी काम को जब किया जाता है तो उसमें काम को होने में शुरू से लेकर आखिर तक जो भी प्रक्रिया होती है वह प्रोसेसिंग (Processing) कहलाती है।

#### डाटा प्रोसेसिंग

आपके देखा होगा किसी सूचना को प्राप्त करने के लिये हम डाटा (Data) यानि आंकड़े इकठ्ठा करते हैं और इस डाटा (Data) का अपनी जरूरत के हिसाब से विश्लेषण या डाटा प्रोसेसिंग करते हैं इस विश्लेषण यानि डाटा प्रोसेसिंग की प्रक्रिया में डाटा से अर्थपूर्ण तथ्य, अंक या सांख्यिकी डाटा प्राप्त होता है इसी अर्थपूर्ण डाटा को सूचना कहते हैं जिसे उपयोग में लाया जाता है।



**डाटा प्रोसेसिंग (Data processing) या विश्लेषण** - डाटा की उपयोगिता के आधार पर किया जाने वाला विश्लेषण डाटा प्रोसेसिंग कहते हैं डाटा से सूचना निकालने के लिए हमें बहुत सी क्रियाएं जैसे जोड़ना और घटाना करनी पड़ती है, उन सब क्रियाओं को **डाटा प्रोसेसिंग (Data processing)** कहा जाता है, इसके बाद ही सूचना प्राप्त होती है। **कंप्यूटर (Computer)** जब डाटा को सूचना में बदलता है यानी डाटा प्रोसेसिंग (Data Processing) करता है तो वह कई सारी अंक गणितीय गणनाएं करता है और इन सभी घटनाओं को करने के लिए वह **कंट्रोल यूनिट (CU)** और **अर्थमेटिक लॉजिक यूनिट (ALU)** की मदद लेता है इसमें कई सारे स्टेप होते हैं और फिर परिणाम दिया जाता है आइए जानते हैं डाटा प्रोसेसिंग करते समय कंप्यूटर क्या-क्या कार्य करता है।

डाटा प्रोसेसिंग के चरण (Steps of Data Processing )

1. **डाटा संग्रह (Data collection)**- सबसे पहले डाटा को किसी माध्यम से कलेक्ट किया जाता है जब किसी संस्था या अनुसंधानकर्ता द्वारा कोई डाटा पहली बार शुरू से लेकर अंत इकठ्ठा किया जाता है तो ऐसे डाटा को **प्राथमिक आंकड़े या प्राइमरी डाटा ( Primary Data )** कहते हैं और जब उसी डाटा को कोई व्यक्ति दोबारा इस्तेमाल करता है तो उसे **द्वितीय आंकड़े (Secondary Data )** या **सेकेंडरी डाटा** कहते हैं।

2. **व्यवस्थित करना (Data Organized)** - इस चरण में डाटा को व्यवस्थित (Organized) किया जाता है मान लीजिये आपने एक स्कूल का डाटा इकठ्ठा किया है लेकिन आपको सभी स्टूडेंट के केवल सभी विषय

से संबंधित (विज्ञान वर्ग, कला वर्ग, वाणिज्य वर्ग आदि) डाटा चाहिए तो सभी स्टूडेंट्स के केवल विषय से सम्बंधित डाटा को ही व्यवस्थित करेंगे।

3. **डाटा जोड़ना** (Data Combine) - इस चरण में एक जैसे डाटा को एक साथ जोड़ते हैं जैसे विज्ञान वर्ग के सभी स्टूडेंट्स एक जगह और कला वर्ग के सभी स्टूडेंट्स एक जगह पर।

4. **डेटा सॉर्टिंग** (Data sorting) - अब जो डाटा Combine किया है उसे बढ़ते से घटते क्रम (Descending) में लगाना या घटते से बढ़ते क्रम (Ascending) में लगाना डेटा सॉर्टिंग (Data sorting) कहलाता है इस चरण में यही प्रक्रिया की जाती है।

5. **डेटा मेनिपुलेशन** (Data manipulation) - इस चरण में डाटा में कोई अपडेट करना, कुछ हटाना या कुछ संशोधन करना ऐसे कार्य किया जाते हैं मान लीजिये कुछ डाटा डुप्लीकेट है और आपको उसे हटाना है तो यह प्रक्रिया डेटा मेनिपुलेशन के अन्तर्गत की जाती है।

6. **डेटा संक्षेपण** (Data Summarization) - अब इस डाटा को Summarization किया जाता है जिसमें उसे पूरे डाटा की जानकारी होती है जिसे बड़ी आसानी से समझने लायक बनाया जाता है यह एक प्रकार से फाइलन डाटा होता है जिसके द्वारा व्यवस्थित रूप से सूचना प्राप्त होती है।

### वर्तनी संशोधन

वर्तनी जाँचक या शब्द शोधक ऐसा कम्प्यूटर प्रोग्राम है, जो स्वयं या किसी अन्य प्रोग्राम से जुड़कर किसी भाषा में लिखे पाठ या शब्दों की वर्तनी (अक्षर और मात्रा) की जाँच करता है और जो शब्द गलत हों उनके लिये शुद्ध वर्तनी वाले वैकल्पिक शब्द प्रस्तुत करता है।

आज कल सॉफ्टवेयर में, एक वर्तनी परीक्षक (या वर्तनी जांच) सॉफ्टवेयर सुविधा उपलब्ध है जो एक पाठ में गलत वर्तनी की जांच करता है। स्पेल-चेकिंग फीचर्स अक्सर सॉफ्टवेयर या सेवाओं, जैसे वर्ड प्रोसेसर, ईमेल क्लाइंट, इलेक्ट्रॉनिक डिक्शनरी या सर्च इंजन में एम्बेडेड होते हैं। आई स्पेलिंग चेकर है, यह मेरे मटर सी के साथ आया है।

स्पेलचेक विभिन्न ऑपरेटिंग सिस्टम और अनुप्रयोगों के साथ शामिल एक विशेषता है जो वर्तनी त्रुटियों के लिए पाठ की जांच करता है। कुछ वर्तनी जांचकों को मैन्युअल रूप से चलाया जाना चाहिए, जबकि अन्य आपके द्वारा टाइप किए गए प्रत्येक शब्द की जांच करते हैं।

पहले वर्तनी जाँचक को वर्ड प्रोसेसर के साथ शामिल किया गया था, जैसे कि Microsoft Word और Corel WordPerfect। उन्होंने कार्यक्रम के "शब्दकोश" में शब्दों की एक सूची के खिलाफ एक पाठ दस्तावेज़ में प्रत्येक शब्द की जांच करके काम किया। अगर कोई मैच नहीं मिला, तो स्पेलकचर बंद हो जाएगा और अलर्ट को यह कहते हुए प्रदर्शित करेगा कि यह शब्द गलत है।

आधुनिक वर्तनीकार एक समान तरीके से काम करते हैं, लेकिन इसमें कई प्रगति शामिल हैं। उदाहरण के लिए, अधिकांश वर्तनी विशेषज्ञ अब आपको शब्दों को जोड़कर शब्दकोश को अनुकूलित करने की अनुमति देते हैं ताकि वे भविष्य में गलत वर्तनी के रूप में चिह्नित न हों। Microsoft Word के वर्तनी जाँचक व्याकरण और वर्तनी की जांच करता है। उदाहरण के लिए, यह आपको एक बहुवचन के बजाय एक एकवचन सर्वनाम का उपयोग करने के लिए कह सकता है या सुझाव दे सकता है कि आप एक वाक्य में अल्पविराम के बाद "जो" के बजाय "वह" का उपयोग करें।

अधिकांश वर्तनी जाँचक आपके द्वारा लिखे गए (आमतौर पर लाल रंग में) गलत वर्तनी वाले शब्दों को रेखांकित करते हुए वास्तविक समय में वर्तनी जांच करते हैं। ओएस एक्स अक्सर सामान्य वर्तनी गलतियों को स्वचालित रूप से सही करेगा (उदाहरण के लिए, "ते" को "द" में बदलना)। आप ओएस एक्स में एक गलत वर्तनी वाले शब्द पर राइट-क्लिक कर सकते हैं और विकल्पों की सूची से सही वर्तनी का चयन कर सकते हैं। यदि शब्द सही ढंग से लिखा गया है

एक सॉफ्टवेयर प्रोग्राम या प्रोग्राम फ़्रीचर जिसे गलत वर्तनी वाले शब्दों का पता लगाने के लिए डिज़ाइन किया गया है और उपयोगकर्ता को गलत वर्तनी की सूचना देता है। वर्तनी जाँचक के आधार पर, सुविधा या तो शब्द को स्वतः पूर्ण कर सकती है या उपयोगकर्ता को गलत वर्तनी वाले शब्द पर संभावित सुधार से चयन करने की अनुमति दे सकती है। चित्र लहराती लाल रेखांकन का एक उदाहरण है और माइक्रोसॉफ्ट वर्ड में वर्तनी की त्रुटियों को कैसे प्रदर्शित किया जाता है, इसका एक उदाहरण है। जब एक दस्तावेज़ पर वर्तनी जांच लाल अंडरलाइन के साथ चलती है, तो वर्ड प्रत्येक गलत वर्तनी वाले शब्द के लिए सुझाव देता है। लाल लहरदार रेखांकन भी गलत वर्तनी वाले शब्द पर सुधार प्रदर्शित करने के लिए राइट-क्लिक किया जा सकता है।

यद्यपि वर्तनी जांचक कई कार्यक्रमों में सबसे अधिक उपयोग की जाने वाली विशेषताओं में से एक बन गए हैं, वे एक बाधा भी बन गए हैं। कुछ लोग वर्तनी जांचकर्ताओं पर इतने निर्भर हो गए हैं कि उनकी वर्तनी और व्याकरण कौशल में गिरावट आई है। उनके पास कंप्यूटर की मदद के बिना कुछ भी सही ढंग से लिखने में मुश्किल समय है।

### **स्पेल चेकर कैसे काम करता है?**

स्पेल चेकर हजारों सही ढंग से लिखे गए शब्दों की सूची के साथ टाइप किए गए प्रत्येक शब्द की तुलना करके काम करता है, और फिर सही वर्तनी को निर्धारित करने के लिए एल्गोरिदम का उपयोग करता है। यदि कोई शब्द (जैसे, एक नाम), सही ढंग से लिखा गया है, तो आप इसे प्रोग्राम की अपवाद सूची में जोड़ सकते हैं, इसलिए इसे गलत वर्तनी के रूप में चिह्नित नहीं किया गया है।

Unit 2<sup>nd</sup>**Internet क्या है? (What is internet )**

इन्टरनेट एक ग्लोबल नेटवर्क है जो की कई सारे computers और electronic devices को एक दुसरे से जोड़ता है। Internet से जुड़े computers दुनिया के किसी भी जगह में स्थित computers के साथ बड़ी आसानी से data का आदान-प्रदान कर सकते हैं। इन्टरनेट पर कंप्यूटर, मोबाइल, स्मार्ट टीवी, गेमिंग कंसोल जैसे कई सारे devices telephone line, cables, fiber optics जैसे wired connection के अलावा wireless network के जरिये भी जुड़े होते हैं।

जब दो या दो से अधिक computers आपस में जुड़ते हैं तो उसे एक network कहते हैं। इसी तरह प्राइवेट, पब्लिक, स्कूल, कॉलेज, बिज़नेस, गवर्नमेंट जैसे कई सारे छोटे-बड़े networks होते हैं और इन networks को internet आपस में जोड़ने का काम करता है इसलिए इन्टरनेट को network of networks भी कहा जाता है।

**इन्टरनेट का इतिहास – (History of internet )**

- 1957 में रूस ने दुनिया का पहला artificial सैटेलाइट Sputnik को सफलतापूर्वक launch कर दिया। Cold war के समय में इस घटना ने एक हलचल सी पैदा कर दी।
- इसके बाद US ने Massachusetts Institute of Technology (MIT) के साथ मिलकर युद्ध जैसे हालात से निपटने के लिए Advanced Research Project Agency (ARPA) की स्थापना की जिसे ( अब DARPA के नाम से जाना जाता है)
- DARPA( Defense Advanced Research Porjects Agency) ने रिसर्च करके ARPAnet नामक एक communication system बनाया ताकि US की सेना गुप्त रूप से एक जगह से दुसरे जगह सन्देश भेज सकें।
- Vint Cerf और Robert E. Kahn ने DARPA के लिए TCP/IP protocol बनाया। आपकी जानकारी के लिए बता दें की **Vint Cerf और Rober E. Kahn को इंटरनेट का अविष्कारक कहा जाता है।** { ट्रांसमिशन कंट्रोल प्रोटोकॉल / इंटरनेट प्रोटोकॉल में टीसीपी / आईपी, मानक इंटरनेट संचार प्रोटोकॉल जो डिजिटल कंप्यूटर को लंबी दूरी पर संचार करने की अनुमति देते हैं। इंटरनेट एक पैकेट-स्विचड नेटवर्क है, जिसमें सूचनाओं को छोटे पैकेटों में तोड़ा जाता है, एक ही समय में कई अलग-अलग मार्गों पर व्यक्तिगत रूप से भेजा जाता है, और प्राप्त अंत पर फिर से इकट्ठा किया जाता है।( sent individually over many different routes at the same time, and then reassembled at the receiving end.) टीसीपी वह घटक है जो डेटा के पैकेटों को इकट्ठा करता है और उन्हें पुनः सौंपता है, जबकि आईपी यह सुनिश्चित करने के लिए ज़िम्मेदार है कि पैकेट सही गंतव्य पर भेजे गए हैं। 1970 में टीसीपी / आईपी विकसित किया गया था और 1983 में ARPANET (इंटरनेट के पूर्ववर्ती) के लिए प्रोटोकॉल मानक के रूप में अपनाया गया था।}
- 1980 के दौरान National Science Foundation (NSF) ने education और research के लिए NSFnet नाम का एक network बनाया जिसे बाद में ARPAnet के साथ जोड़ दिया गया और इस नेटवर्क को Internet नाम दिया।
- 1980 के समय में ही Tim Berners-Lee ने WWW (World Wide Web) पर रिसर्च करना शुरू किया और उन्होंने information share करने के लिए HTML (HyperText Markup Language) बनाया।
- शुरुआत में इन्टरनेट एक तरह का private network था। जिसने बाद में धीरे-धीरे एक विशाल नेटवर्क का रूप ले लिया। आज लगभग दुनिया के सभी देशों में इन्टरनेट की सुविधा उपलब्ध है।

### भारत में इन्टरनेट की शुरुआत कब हुई?

- India में इन्टरनेट की शुरुआत सन 1986 में हुई। सबसे पहले Department of Electronics (DoE) ने सरकार की सहायता से ERNET (Educational Research Network) की स्थापना की जिसका मुख्य उद्देश्य शिक्षा और शोध के क्षेत्रों में जरूरी जानकारियाँ उपलब्ध कराना था।
- शुरुआत में IISc (Indian Institute of Science) बैंगलोर, पांच IITs (Indian Institutes of Technology) दिल्ली, मुंबई, कानपुर, खड़गपुर और मद्रास जैसे बड़े बड़े संस्थानों को इससे जोड़ा गया।
- 14 अगस्त 1995 को उस समय की सबसे बड़ी टेलिकॉम कंपनी विदेश संचार निगम लिमिटेड (VSNL) ने इंटरनेट को आम नागरिकों के लिए लांच किया।
- दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, चेन्नई, बंगलौर जैसे बड़े शहर के लोग dial-up connection के जरिये internet access कर सकते थे।
- इसकी स्पीड 9.6 kbit/s और हर 250 घंटे के लिए \$160 चार्ज किया जाता था।
- शुरुआत में कई तरह के hardware और network issues आने लगे थे लेकिन इसके बावजूद VSNL internet लांच होने के सिर्फ 6 महीने में 10,000 subscribers जुड़ चुके थे।
- 1 अक्टूबर 2000 को BSNL की स्थापना हुई।
- सन 2004 में सरकार ने broadband policy बनायीं जिसके अनुसार ब्रॉडबैंड की डाउनलोड स्पीड 256 kbit/s या उससे अधिक होनी चाहिए।
- सन 2005 के बाद से ब्रॉडबैंड इंडस्ट्री का बहुत तेजी से विकास होने लगा लेकिन इसके wire-line technology होने के कारण काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा था।
- लेकिन यह समस्या भी दूर हो गयी जब सरकार ने 3G और 4G spectrum की नीलामी शुरू कर दी और फिर wireless broadband की शुरुआत हो गयी।
- भारत में पहली बार 10 अप्रैल 2012 को Airtel ने 4G service की शुरुआत कर दी उसके बाद दूसरी private टेलिकॉम कंपनियों ने भी इसी रास्ते पर चलना शुरू कर दिया।
- 5 सितम्बर 2016 को मुकेश अम्बानी ने रिलायंस जिओ को लांच करके देशभर के टेलिकॉम कंपनियों को एक बड़ी टक्कर दे दी।
- Reliance Jio ने 2G, 3G छोड़कर सिर्फ 4G service पर ध्यान देने लगी।
- जिओ ने अपने ग्राहकों को 6 महीने मुफ्त high speed 4G इन्टरनेट देना शुरू कर दिया इस अनोखे ऑफर का लाभ उठाने के लिए लोगों होड़ लग गयी और सिर्फ एक ही महीने में जियो ने 16 million subscribers बना कर एक इतिहास रच दिया।
- रिलायंस जियो का telecom industry पर ऐसा असर हुआ की देश की दूसरी और तीसरी सबसे बड़ी telecom company Vodafone और Idea Cellular को merge होना पड़ गया और competition इतना बढ़ गया की दुसरे operators को भी अपने data charges बहुत कम करने पड़ गये।
- आज दुनियाभर में भारत इंटरनेट उपयोग करने वाला दूसरा सबसे बड़ा देश बन गया है।

### इन्टरनेट का मालिक कौन है?

इस सवाल का जवाब थोड़ा मुश्किल हो सकता है एक तरह से देखें तो इन्टरनेट एक विशाल नेटवर्क है जोकि कई सारे नेटवर्क और infrastructure से मिलकर बना है ऐसे में किसी एक व्यक्ति या संस्था इन सब का मालिक हो ऐसा संभव नहीं है।

अगर दुसरे तरीके से देखें तो इसके कई सारे मालिक हो सकते हैं क्योंकि इन्टरनेट को चलाने के लिए कई सारी चीजों जैसे optical cable, ip address, domain name, router, internet tower जैसे कई सारी चीजों की जरूरत होती है और इन चीजों के मालिक अलग-अलग लोग हो सकते हैं।

ऐसी कई सारी organizations हैं जो internet के कई सारे standards को निर्धारित करते हैं लेकिन पूरे इंटरनेट पर उनका भी अधिकार नहीं है। कोई एक कंपनी या किसी एक देश की सरकार इंटरनेट पर अधिकार का दावा नहीं कर सकता।

### Internet कैसे काम करता है? (How internet works)

इंटरनेट कैसे काम करता है यह समझने से पहले आपको web की बेसिक जानकारी होनी चाहिए। सबसे पहले हम यह समझने की कोशिश करते हैं की आखिर internet पर data transmission कैसे होता है यानी की इंटरनेट पर सूचनाएं एक स्थान से दुसरे स्थान कैसे पहुँचती हैं?

यदि हम Google की वेबसाइट को अपने कंप्यूटर पर खोलना चाहते हैं तो ऐसी स्थिति में हमारा कंप्यूटर एक client की तरह काम करेगा वहीं जो कंप्यूटर Google उपयोग कर रहा हो यानी जिस system में गूगल वेबसाइट का data store हो वह सिस्टम सर्वर की तरह काम करेगा। जब हम web browser पर google.com डाल कर enter करेंगे तब हमारा कंप्यूटर यानी client गूगल के सर्वर को request send करेगी।

इंटरनेट पर भेजे गए request या messages एक साथ send नहीं होते, इन्हें अलग-अलग हिस्सों में बाँट दिया जाता है जिसे packets कहा जाता है फिर इन पैकेट्स को network के जरिये destination तक पहुँचाया जाता है और पहुँचने पर इन्हें फिर से जोड़ लिया जाता है।

अब आपके दिमाग में यह सवाल आ रहा होगा की एक ही समय में करोड़ों लोग इंटरनेट access कर रहे होते हैं इसका मतलब network में अनगिनत packets travel कर रहे होते हैं ऐसे में इन packets को कैसे पता चलता है की उन्हें जाना कहाँ?

इसके लिए IP address का उपयोग किया जाता है जो की internet से जुड़े हर device के लिए unique होता है और इससे उस device का address पता चल जाता है।

चलिए अब step by step तरीके से समझते हैं की आखिर इंटरनेट कैसे काम करता है:

1. आप browser के address bar में किसी वेबसाइट का address type करते हैं या किसी hyperlink पर click करते हैं।
2. आपका ब्राउज़र URL से यह पता करता है की कौनसा protocol use हो रहा है यदि URL के शुरुआत में http:// लगा हो तो HTTP protocol का उपयोग होगा वहीं ftp:// हो तो FTP protocol का use किया जाएगा। { **FTP बड़ी फ़ाइलों को स्थानांतरित करने में अधिक कुशल है, जबकि HTTP छोटी फ़ाइलों जैसे वेब पेजों को स्थानांतरित करने के लिए बेहतर है। यद्यपि दोनों TCP को पसंद के प्रोटोकॉल के रूप में उपयोग करते हैं, लेकिन HTTP एक स्थिर कनेक्शन का उपयोग करता है, इस प्रकार TCP का प्रदर्शन FTP के साथ कम व TCP का प्रदर्शन HTTP के साथ ज्यादा बेहतर होता है।** }
3. ब्राउज़र आपके ISP server (Internet Service Provider) को request send करता है।
4. ISP के पास DNS का database होता है जिसमें domain name और उसके IP address की जानकारी होती है। { **डोमेन नेम सिस्टम (डीएनएस) इंटरनेट की फोनबुक है। डोमेन नाम जैसे nytimes.com या espn.com के माध्यम से मनुष्य ऑनलाइन जानकारी प्राप्त करते हैं। वेब ब्राउज़र इंटरनेट प्रोटोकॉल (आईपी) पतों के माध्यम से बातचीत करते हैं। DNS आईपी पते(address) के लिए डोमेन नाम का अनुवाद करता है ताकि ब्राउज़र इंटरनेट संसाधनों को लोड कर सकें।** }
5. IP मिलने के बाद वेबसाइट के सर्वर का address पता चल जाता है और web page के लिए उस सर्वर को request send कर दिया जाता है।
6. Server आपके ISP को वह page send कर देता है।

7. आपका ISP उस पेज को आपके ब्राउज़र पर सेंड करता है और वेब पेज आपके स्क्रीन पर दिखाई देने लगता है।

### इंटरनेट का उपयोग (Use of internet)

आज के दौर में इंटरनेट हमारी ज़िन्दगी का एक हिस्सा बन चुकी है। आज लगभग हर ऑफिस, बैंक, स्कूल, कॉलेज आदि किसी न किसी तरीके से इंटरनेट से जुड़ चुके हैं। चलिए देखते हैं की हम internet का किस-किस तरीके से उपयोग कर सकते हैं:

- ईमेल
- सोशल नेटवर्किंग जैसे फेसबुक, ट्विटर आदि
- रिसर्च करना
- ईबुक्स और ऑनलाइन मैगज़ीन-
- समाचार
- ऑनलाइन बैंकिंग
- ईकॉमर्स-
- टिकट बुकिंग
- फाइल डाउनलोड करना
- ऑनलाइन गेम खेलना
- ऑनलाइन विडियो और मूवीज देखना
- जॉब सर्च करना

### इंटरनेट के फायदे (Advantages of internet)

- **सूचनाओं का भंडार:** इंटरनेट अनगिनत जानकारियों और सूचनाओं का भंडार है।
- **हमेशा उपलब्ध:** चाहे दिन हो या रात 24 घंटे 365 दिन यह हमेशा उपलब्ध रहता है।
- **सबसे तेज़:** सूचनाओं के आदानप्रदान का सबसे तेज़ और बेहतरीन माध्यम है।-
- **सरल और किफायती माध्यम:** इंटरनेट आपके कारोबार को लोकल से ग्लोबल स्तर तक पहुंचाने के लिए सबसे सरल और किफायती माध्यम है इससे आप देशविदेश तक अपने बिज़नेस को पहुंचा सकते हैं।
- **उपयोग करना आसान है:** इंटरनेट ने कई सारे काम को आसान बना दिया है – अब हमें रेलवे स्टेशन पर लम्बीलम्बी कतारों में खड़ा नहीं होना पड़ता हम ऑनलाइन टिकट बुकिंग कर सकते हैं ठीक इसी तरह - हमें दुकानों में जाकर खरीदारी करनी नहीं पड़ती अब ऑनलाइन शॉपिंग का ज़माना है।
- **ऑनलाइन शिक्षा:** आप घर बैठे बड़े बड़े संस्थान के प्रोफेसरों और-experts से ऑनलाइन शिक्षा भी ग्रहण कर सकते हैं।
- **ऑनलाइन मीटिंग:** आप अपने सहकर्मियों और कर्मचारियों से ऑनलाइन मीटिंग कर सकते हैं इससे समय की बचत होगी और productivity बढ़ेगी।
- **ऑनलाइन पैसा:** आप घर बैठे ऑनलाइन काम करके पैसे भी कमा सकते हैं।

### इंटरनेट के नुकसान (Disadvantages of internet)

- **सेहत पर असर:** दिन भर कंप्यूटर और मोबाइल पर लगे रहने से आजकल इसका सेहत पर असर देखने को मिल रहा है।

- **वायरस और मैलवेयर:** कभीकभी हम किसी ऐसे वेबसाइट पर चले जाते हैं जहाँ से कुछ वायरस या - मैलवेयर अपनेआप डाउनलोड हो जाते हैं जो की हमारे कंप्यूटर, मोबाइल, लैपटॉप आदि को नुकसान पहुँचा सकते हैं।
- **हैकिंग का खतरा:** अगर आपका computer हैक हो जाए तो आपको बहुत नुकसान हो सकता है आपके सारे डाटा चोरी हो सकते हैं और उनका गलत तरीके से उपयोग हो सकता है।
- **धोखे का शिकार होना:** कई सारे websites real नहीं होते लेकिन देखने में एकदम असली लगते हैं ऐसे में यदि इन्हें गलती से अपना account details दे दिये जाँएँ तो ये आपके खाते से पैसे उड़ा सकते हैं।
- **डार्क वेब:** आपको जानकर हैरानी होगी की हम इंटरनेट पर उपलब्ध वेबसाइट में से केवल 5% का उपयोग करते हैं जबकि बाकी के 95% हिस्से से हम अनजान हैं जो की कई तरह के गलत काम जैसे ड्रग्स, हथियार बेचने जैसे गैरकानूनी काम किये जाते हैं इस हिस्से को **डार्क वेब** कहते हैं।
- **अफवाह और झूठी खबरें:** आपने social media पर ऐसे कई सारी खबरों को पढ़ा होगा जिनका सच से कोई लेना देना नहीं होता लेकिन फिर भी ये बड़ी तेज़ी से viral होते हैं इस तरह की झूठी और भड़काऊ खबरों से लोगों की सोच को प्रभावित करता है जो की एक तरह से बहुत बड़ा खतरा है।
- **समय और पैसे की बर्बादी:** अगर इंटरनेट का सही तरीके से उपयोग नहीं किया जाये तो समय और पैसे दोनों की बर्बादी का होना तय है।

### परिचय (Introduction)

इंटरनेट से तात्पर्य एक ऐसे नेटवर्क से है जो दुनिया भर के लाखों करोड़ों कम्प्यूटरों से जुड़ा है। कहने का मतलब यह है कि किसी नेटवर्क का कोई सिस्टम किसी अन्य नेटवर्क के सिस्टम से जुड़ कर कम्प्यूनिकेट कर सकता है। अर्थात् सूचनाओं का आदान-प्रदान कर सकता है। सूचनाओं के आदान प्रदान के लिए जिस नियम का प्रयोग किया जाता है उसे ट्रांसमिशन कंट्रोल प्रोटोकॉल या इंटरनेट प्रोटोकॉल (टीसीपी/आईपी) कहा जाता है।

### इंटरनेट की सेवाएं

इसकी सेवाओं में कुछ का जिक्र यहां किया जा रहा है-

**फाइल ट्रांसफर प्रोटोकॉल (एफ टी पी)-** फाइल ट्रांसफर प्रोटोकॉल का उपयोग एक कम्प्यूटर नेटवर्क से किसी दूसरे कम्प्यूटर नेटवर्क में फाइलों को ट्रांसफर करने के लिए किया जाता है।

**इलेक्ट्रॉनिक मेल ई-मेल-** इसको संक्षिप्त रूप से ई-मेल कहा जाता है। इस माध्यम के द्वारा बड़ी से बड़ी सूचनाओं व संदेशों को इलेक्ट्रॉनिक प्रणाली द्वारा तेज गति से भेजा या प्राप्त किया जा सकता है। इसके द्वारा पत्र, ग्रीटिंग या सिस्टम प्रोग्राम को दुनिया के किसी भी हिस्से में भेज सकते हैं।

**गोफर-** यह एक यूजर फ्रेंडली इंटरफेज है। जिसके जरिए यूजर, इंटरनेट पर प्रोग्राम व सूचनाओं का आदान प्रदान किया जा सकता है। गोफर के द्वारा इंटरनेट की कई सेवाएं आपस में जुड़ी होती है। (गोफर एक एप्लिकेशन-लेयर प्रोटोकॉल है जो दूरस्थ वेब सर्वर पर संग्रहीत वेब दस्तावेजों को निकालने और देखने की क्षमता प्रदान करता है। गोफर की कल्पना 1991 में टीसीपी / आईपी नेटवर्क के शीर्ष पर चलने के लिए इंटरनेट के पहले डेटा / फ़ाइल एक्सेस प्रोटोकॉल में से एक के रूप में की गई थी।)

**वर्ल्ड वाइड वेब -** इसके द्वारा यूजर अपने या अपनी संस्था आदि से सम्बंधित सूचनाएं दुनिया में कभी भी भेज सकता है, और अन्य यूजर उससे सम्बंधित जानकारियां भी प्राप्त कर सकता है।

**टेलनेट-** डाटा के हस्तांतरण के लिए टेलनेट का प्रयोग किया जाता है। इसके द्वारा यूजर को रिमोट कम्प्यूटर से जोड़ा जाता है। इसके बाद यूजर अपने डाटा का हस्तांतरण कर सकता है। टेलनेट पर कार्य

करने के लिए यूजर नेम व पास वर्ड की जरूरत होती है।(टेलनेट, 1969 में विकसित किया गया, एक प्रोटोकॉल है जो एक दूरस्थ डिवाइस या सर्वर के साथ संचार के लिए कमांड लाइन इंटरफ़ेस प्रदान करता है, जिसे कभी-कभी दूरस्थ प्रबंधन के लिए नियोजित किया जाता है लेकिन नेटवर्क हार्डवेयर जैसे प्रारंभिक डिवाइस सेटअप के लिए भी।)

**यूजनेट-** अनेक प्रकार की सूचनाओं को एकत्र करने के लिए इंटरनेट के नेटवर्क, यूजनेट का प्रयोग किया जाता है। इसके माध्यम से कोई भी यूजर विभिन्न समूहों से अपने लिए जरूरी सूचनाएं एकत्र कर सकता है।(यूजनेट कंप्यूटरों पर उपलब्ध विश्वव्यापी वितरित चर्चा प्रणाली है। इसे सामान्य-उद्देश्य यूनिक्स-टू-यूनिक्स कॉपी (UUCP) डायल-अप नेटवर्क आर्किटेक्चर से विकसित किया गया था। यूजनेट कई मामलों में बुलेटिन बोर्ड सिस्टम (BBS) जैसा दिखता है और इंटरनेट फ़ोरम का अग्रदूत है जो व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है।)

**वेरोनिका-** वेरोनिका प्रोटोकॉल गोफर के माध्यम से काम करता है। यूजर, गोफर व वेरोनिका का प्रयोग एक साथ करके किसी भी डाटा बेस पर आसानी से पहुंच सकता है। इनके प्रयोग से जरूरी सूचनाएं तेजी से प्राप्त की जा सकती हैं।( वेरोनिका एक प्रोग्राम है जिसने आपको इंटरनेट के गोफर सर्वर की फ़ाइलों को किसी विशेष खोज स्ट्रिंग के लिए खोज करने की अनुमति दी है। आर्ची की तरह, एफ़टीपी सर्वर के लिए वेरोनिका के समकक्ष कार्यक्रम, वेरोनिका एक इंडेक्सिंग स्पाइडर है जो गोफर साइटों पर जाता है, सभी निर्देशिका और फ़ाइल नामों को पढ़ता है, और फिर उन्हें एक बड़े सूचकांक में अनुक्रमित करता है।)

**आर्ची-** फाइल ट्रांसफर प्रोटोकॉल (एफटीपी) में स्टोर फाइलों को खोजने के लिए आर्ची का प्रयोग किया जाता है।

### इंटरनेट से संबंधित शब्दावली

**प्रोटोकॉल-** यह एक ऐसी मानक औपचारिक प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से कम्प्यूटर नेटवर्क में अंकीय संचार किया जाता है।

**ब्राउजर-** यह एक ऐसा सॉफ्टवेयर है, जिसकी मदद से यूजर सूचनाओं को प्राप्त करने के लिए इंटरनेट में प्रवेश करता है।

**वेब सर्वर-** यह प्रोग्राम वेब ब्राउजर के द्वारा संसाधनों को प्राप्त करने के लिए यूजर द्वारा दिए गए अनुरोध को पूरा करता है।

**नेटवर्क-** कई सिस्टमों को एक साथ जोड़कर बनाए गए संजाल को नेटवर्क कहते हैं। इसके द्वारा एक साथ कई जगहों पर सूचनाओं का आदान-प्रदान करना संभव है।

**आन-लाइन-** जब यूजर इंटरनेट पर जान-करियों व सेवाओं का अध्ययन करता है। तब कहा जाता है कि यूजर ऑन लाइन है।

**होम पेज-** यह किसी भी साइट का शुरूआती प्रदर्शित पेज है। जिसमें सूचनाएं हार्डपरलिनक द्वारा जोड़ी जाती है।

**ऑफ लाइन-** इसमें यूजर इंटरनेट में मौजूद सूचनाओं को अपने अपने सिस्टम में संग्रहित कर इंटरनेट संपर्क काट देता है।

**हाइपर टेक्स्ट मार्कअप लैंग्वेज (एचटीएमएल)-** इसका प्रयोग वेब पेज बनाने में किया जाता है। शुरूआत में इसका प्रयोग वेब पेज डिजाइन करने में किया जाता था।

**हाइपर टेक्स्ट ट्रांसफर प्रोटोकॉल-** इसका प्रयोग एचटीएमएल में संग्रहित दस्तावेजों व दूसरे वेब संसाधनों को स्थानांतरित करने में किया जाता है।

**टीसीपी/आईपी-** इसका प्रयोग सूचनाओं के आदान-प्रदान में किया जाता है।

**यूनिफॉर्म रिसोर्स लोकेटर(यूआरएल)-** इसका प्रयोग वेब पर किसी विशेष सूचना को संचालित करने में किया जाता है।

**वेब पेज-** होम पेज पर बने हाइपर लिंक पर क्लिक करने पर जो पेज हमारे सामने प्रस्तुत होता है, उसे वेब पेज कहते हैं।

**वेबसाइट-** वेब पेजों के समूहों को वेबसाइट कहते हैं। जिसमें आडियो, वीडियो, इमेजेस का समावेश होता है।

**हाइपर लिंक-** वेब पेज में मौजूद वे विशेष शब्द या चित्र जिस पर क्लिक करने पर उस शब्द या चित्र से सम्बंधित एक अलग वेब पेज पर आ जाती है। उसे वेब पेज को हाइपर लिंक कहते हैं।

**डाउनलोड-** इंटरनेट या किसी अन्य कम्प्यूटर से प्राप्त सूचनाओं को अपने कम्प्यूटर में एकत्रित करना डाउनलोड कहलाता है।

**अपलोड-** अपने कम्प्यूटर से किसी अन्य कम्प्यूटर में सूचनाएं भेजना अपलोड कहलाता है। जैसे ई-मेल भेजना।

**सर्वर-** वह कम्प्यूटर जो इंटरनेट प्रयोग करने वाले सिस्टम को सूचनाएं प्रदान करने की क्षमताएं रखता है, सर्वर कहलाता है।

**सर्फिंग-** इंटरनेट के नेटवर्कों में अहम सूचनाओं को खोजने का काम सर्फिंग कहलाता है।

**इंटरनेट एड्रेस-** इंटरनेट में प्रयुक्त एड्रेस के मूलभूत हिस्से को डोमेन कहा जाता है। इंटरनेट से जुड़े हर कम्प्यूटर का एक अलग डोमेन होता है। जिसे डोमेन नेम सिस्टम कहते हैं। जिसे 3 भागोंमें बांटा जा सकता है।

1.जेनेरिक डोमेन

2.कंट्री डोमेन

3.इनवर्स डोमेन

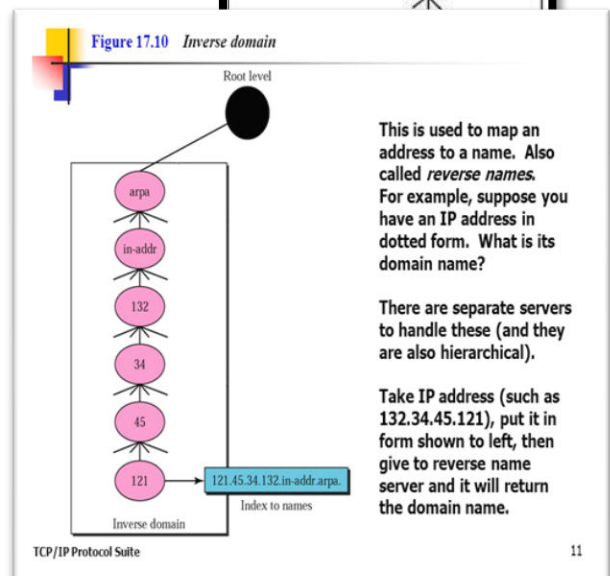
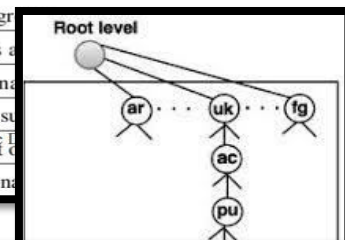
**जेनेरिक डोमेन:-** जेनेरिक डोमेन अपने सामान्य व्यवहार के अनुसार पंजीकृत होस्ट को परिभाषित करते हैं। पेड़ में प्रत्येक नोड एक डोमेन को परिभाषित करता है, जो डोमेन नाम स्पेस डेटाबेस के लिए एक सूचकांक है।

**कंट्री डोमेन:-** कंट्री डोमेन अनुभाग दो-चरित्र वाले देश संक्षिप्त (जैसे नेपाल और संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए) का उपयोग करता है। दूसरा लेबल संगठनात्मक हो सकता है, या वे अधिक विशिष्ट, राष्ट्रीय पदनाम हो सकते हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका, उदाहरण के लिए, राज्य के संक्षिप्तकरण का उपखंड के रूप में उपयोग करता है (जैसे, ca.us.)।

**इनवर्स डोमेन:-** इनवर्स डोमेन का उपयोग एक पते को एक नाम पर मैप करने के लिए किया जाता है। यह तब हो सकता है, उदाहरण के लिए, जब सर्वर को किसी क्लाइंट से एक कार्य करने के लिए अनुरोध प्राप्त हुआ हो। इस प्रकार की केरी को इनवर्स या पॉइंटर (PTR) केरी कहा जाता है। पॉइंटर केरी को हैंडल करने के लिए, इनवर्स डोमेन को प्रथम-स्तर नोड के साथ डोमेन नाम स्थान में जोड़ा जाता है जिसे अरपा

Dr. Ashwini Bhardwaj  
GCW,Narnaul

Label	Description
aero	Airlines and aerospace companies
biz	Businesses or firms (similar to "com")
com	Commercial organizations
coop	Cooperative business organizations
edu	Educational institutions
gov	Government institutions
info	Information service providers
int	International organizations
mil	Military gr
museum	Museums a
name	Personal na
net	Network su
org	Fig: Generic I Nonprofit o
pro	Professiona



(ऐतिहासिक कारणों के लिए) कहा जाता है। दूसरा स्तर एक एकल नोड भी है जिसका नाम एड-इनर (इनवर्स पता के लिए) है। बाकी डोमेन IP पते को परिभाषित करता है।

### इंटरनेट के उपकरणों का परिचय

- पीसी (PC-Personal Computer)
- माडेम (Modem)
- संचार माध्यम - टेलीफोन लाइन या
- वायरलेस तकनीक
- इंटरनेट साफ्टवेयर (वेब ब्राउसर)
- इंटरनेट सर्विस प्रदाता (ISP-Internet Service Provider)

**इंटरनेट सर्विस प्रदाता:-** इंटरनेट सेवा प्रदाता को निर्धारित शुल्क देकर इंटरनेट खाता, यूजर नेम तथा पासवर्ड प्राप्त किया जाता है। यूजर नेम इंटरनेट से जुड़ने के लिए तथा पासवर्ड सुरक्षा और गोपनीयता के लिए आवश्यक है।

**वेब ब्राउसर (Web Browser):-** यह एक Application Software है जो वलूड वाइड वेब (www) से सूचना तथा डाटा प्राप्त करने तथा उसे उपयोगकर्ता के कम्प्यूटर पर प्रदर्शित करने का कार्य करता है। इसे वेब सर्च इंजन (web search engine) भी कहा जाता है। यह सर्चिंग करते समय उपयोगकर्ता को सूचना प्राप्त करने में सहायता करता है तथा समय की बचत भी करता है। यह पूर्व में प्रयोग किए गए इंटरनेट साइट का विवरण रखता है तथा डाटा को डाउनलोड करने की सुविधा भी प्रदान करता है। वलूड वाइड वेब से सूचना प्राप्त करने के लिए वेब ब्राउसर पर Uniform Resource Identifier (जैसे-Google.com) डाला जाता है।

कुछ प्रचलित वेब ब्राउसर हैं-

- Internet Explorer
- Netscape Navigator
- Mozilla Firefox
- Apple's Safari
- Google Chrome
- Avant

Opera मोबाइल फोन में प्रचलित

**वेब सर्वर (Web Server):-** वह कम्प्यूटर जो वेब पेज को भंडारित करता है तथा नेटवर्क से जुड़े अन्य कम्प्यूटरों के अनुरोध पर उन्हें वेब पेज उपलब्ध कराता है, वेब सर्वर कहलाता है।

**माडेम (Modem):-** यह Modulator-De-Modulator का संक्षिप्त रूप है। कम्प्यूटर डिजिटल संकेत उत्पन्न करता है जबकि संचार माध्यम पर केवल एनालॉग संकेत भेजा जा सकता है। माडेम वह युक्ति है जो कम्प्यूटर के डिजिटल संकेतों (Digital Signals) को एनालॉग संकेत में बदलकर संचार माध्यम पर भेजता है तथा आने वाले एनालॉग संकेतों को डिजिटल संकेतों में बदलकर कम्प्यूटर के प्रयोग के योग्य बनाता है।

### माडेम के प्रकार (Types of Modem):

बाह्य संरचना के आधार पर माडेम दो प्रकार के होते हैं-

- (a) आंतरिक माडेम (**Internal Modem**): इसे सिस्टम यूनिट के अंदर स्थापित किया जाता है।
- (b) बाह्य माडेम (**External Modem**): इसे सिस्टम यूनिट के बाहर रखा जाता है।

### डोमेन नेम सिस्टम (Domain Name System)

यह नेटवर्क पर कम्प्यूटर, सर्वर या वेबसाइट के निश्चित नामकरण की प्रणाली है ताकि उसे अलग पहचान दी जा सके। यह सामान्य भाषा में दिए गए नाम को अंकीय पता (IP Address) में बदलता है तथा उससे संपर्क स्थापित करता है।

उदाहरण के लिए, यदि हम इंटरनेट पर [www.example.com](http://www.example.com) लिखते हैं तो कम्प्यूटर इसे अंकीय पता 192.0.32.10 में बदलकर इस वेबसाइट को खोजता है। इस प्रकार, यह अंकीय पता की जगह याद रखने योग्य आसान पता का प्रयोग संभव बनाता है।

### डोमेन नेम (Domain Name):-

नेटवर्क में प्रत्येक कम्प्यूटर को एक विशेष नाम दिया जाता है जिसे डोमेन नेम कहते हैं। डोमेन नेम के दो भाग होते हैं-

(a) नाम (Name)

(b) एक्सटेंशन (Extension Name)

यहां नाम कुछ भी रखा जा सकता है, पर एक्सटेंशन उपलब्ध विकल्पों में से ही कोई एक हो सकता है। जैसे-Example.com में example नाम है जबकि .com एक्सटेंशन है।

- डोमेन नेम में अंक या अक्षर या दोनों हो सकते हैं।
- इसमें अधिकतम 64 कैरेक्टर हो सकते हैं।
- इसमें एकमात्र विशेष कैरेक्टर प्रयोग किया जा सकता है।

#### कुछ प्रमुख डोमेन नेम इस प्रकार हैं-

- .com – Communication (नेटवर्क प्रदाता)
- .net – Network
- .gov – Government सरकारी संस्था
- .edu – Education शैक्षिक संस्था
- .org – Organisation स्वैच्छिक संस्थान
- .mil – Military सैनिक
- .int – International अंतर्राष्ट्रीय
- .in – India भारत
- .us – United State

### यूनीफार्म रिसोर्स लोकेटर (Uniform Resource Locator)

यह कम्प्यूटर नेटवर्क की व्यवस्था है जो बताता है कि वांछित सूचना कहां उपलब्ध है और उसे कैसे प्राप्त किया जा सकता है। वलूड वाइड वेब पर किसी वेब पेज का एड्रेस URL का उदाहरण है।

URL में शामिल होता है-

- Protocol का नाम
- Colon तथा दो //(Slash)
- Host Name (IP Address)
- Domain Name

जैसे -<http://www.google.com>

### ट्रांसमिशन कंट्रोल प्रोटोकाल/इंटरनेट प्रोटोकाल (TCP/IP)

इन दोनों सम्मिलित रूप से इंटरनेट प्रोटोकाल सूट (Internet Protocol Suite) कहा जाता है। ट्रांसमिशन कंट्रोल प्रोटोकाल (Transmission Control Protocol) का प्रयोग कर इंटरनेट पर दूरस्थ कम्प्यूटर के बीच संचार स्थापित किया जाता है। टीसीपी डाटा को पैकेट्स में विभाजित कर उन्हें भेजे जाने का रास्ता तय करता है। यह प्राप्त किए गए पैकेट्स को पुनः व्यवस्थित कर डाटा में परिवर्तित भी करता है। वल्ड वाइड वेब, ईमेल, फाइल ट्रांसफर आदि इसके कुछ व्यवहारिक उपयोग है।

इंटरनेट प्रोटोकाल (Internet Protocol) इंटरनेट पर संचार व्यवस्था सुनिश्चित करता है। इंटरनेट से जुड़े प्रत्येक कम्प्यूटर को एक विशेष अंकीय पता (Numerical Address) दिया जाता है जिसे आईपी एड्रेस (IP Address) कहा जाता है। वर्तमान में Internet Protocol Version 6 (IPv6) का उपयोग किया जा रहा है जो 128 बिट एड्रेस का प्रयोग करता है।

### वर्ल्ड वाइड वेब क्या है?

यह हाइपरटेक्स्ट मार्क-अप भाषा या HTML का उपयोग करके हाइपरमीडिया को संदर्भित करता है। इसे WWW, W3 या web के नाम से भी जाना जाता है। यह इंटरनेट पर सबसे ज्यादा इस्तेमाल होने वाली सर्विस है। इसके जरिये कई सारे वेब servers और क्लाइंट्स एक साथ जुड़ते हैं। ये हम सब जानते हैं कि वेब सर्वर के HTML डॉक्यूमेंट्स में images, videos और अलग-अलग प्रकार के ऑनलाइन कंटेंट्स स्टोर रहते हैं जिन्हें वेब की मदद से एक्सेस किया जा सकता है। यहीं आपको बता दें कि हाइपरटेक्स्ट डॉक्यूमेंट में कोई भी शब्द एक पॉइंटर के रूप में एक अलग हाइपरटेक्स्ट डॉक्यूमेंट में निर्दिष्ट किया जा सकता है जहाँ उस शब्द से संबंधित अधिक जानकारी मिल सकती है।

WWW एक प्रकार का इनफार्मेशन स्पेस है जहां पर डॉक्यूमेंट्स और अन्य संसाधनों की पहचान यूनिकॉर्म् रिसोर्स लोकेटर यूआरएल जैसे <https://www.example.com> द्वारा की जाती है जो हाइपरटेक्स्ट द्वारा इंटरलिंक हो सकते हैं और इंटरनेट के माध्यम से एक्सेस किए जा सकते हैं। WWW संसाधनों को वेब ब्राउज़र के रूप में जाना जाने वाले सॉफ्टवेयर एप्लिकेशन के माध्यम से उपयोगकर्ताओं द्वारा एक्सेस किया जाता है।

इसलिए, ऐसा कहना गलत नहीं होगा कि दुनियाभर में जितने भी वेबसाइट्स और वेब पेजेज हैं जिन्हें आप अपने वेब ब्राउज़र पर देखते हैं वे सभी वेब से जुड़े होते हैं और इन्हें एक्सेस करने के लिए हाइपरटेक्स्ट ट्रांसफर प्रोटोकॉल का इस्तेमाल किया जाता है। ये सारे वेब servers का एक प्रकार का कलेक्शन ही तो है। अधिक समझने के लिए जब किसी ब्राउज़र के एड्रेस बार पर किसी वेबसाइट के URL से पहले www लगा हो तो इसका अर्थ है कि वह वेबसाइट किसी वेब सर्वर पर स्टोर है जो कि वेब से जुड़ा हुआ है इसीलिए ही तो उसे एक्सेस करने के लिए www की मदद ली जाती है।

### क्या आप जानते हैं कि हाइपरटेक्स्ट क्या होता है?

हाइपरटेक्स्ट का मतलब है कि यह एक ऐसा टेक्स्ट है जिसमें अन्य टेक्स्ट के 'लिंक' होते हैं और जरूरी नहीं है कि वह लीनियर हों। यह शब्द 1965 के आसपास टेड नेल्सन द्वारा इस्तेमाल किया गया था।

### वर्ल्ड वाइड वेब का इतिहास?

1989 में, CERN में काम करते हुए, ब्रिटिश वैज्ञानिक टीम बर्नर्स-ली ने वर्ल्ड वाइड वेब (WWW) का आविष्कार किया। यह दुनिया भर के विश्वविद्यालयों और संस्थानों में वैज्ञानिकों के बीच स्वचालित सूचना-साझाकरण की मांग को पूरा करने के लिए विकसित किया गया था। क्या आप जानते हैं कि CERN एक अलग प्रयोगशाला नहीं है; इसमें 100 से अधिक देशों के लगभग 17,000 वैज्ञानिक शामिल हैं। WWW का मूल विचार कंप्यूटर, डेटा नेटवर्क और हाइपरटेक्स्ट की विकसित तकनीकों को वैश्विक सूचना प्रणाली का एक शक्तिशाली और आसान उपयोग में विलय करना था।

आपको बता दें कि मार्च 1989 में टीम बर्नर्स-ली ने WWW के लिए पहला प्रस्ताव और मई 1990 में अपना दूसरा प्रस्ताव लिखा था। नवंबर 1990 में, रॉबर्ट कैलियू (Robert Cailliu) के साथ बेल्जियम के सिस्टम इंजीनियर के रूप में इस प्रणाली को प्रबंधन प्रस्ताव के रूप में औपचारिक रूप दिया गया था। इस डाक्यूमेंट्स में हाइपरटेक्स्ट डॉक्यूमेंट के वेब ब्राउज़र को देखा जा सकता है। 1992 में इलिनोइस विश्वविद्यालय ने पहला वेब ब्राउज़र पेश किया, एक ऑनलाइन सर्च टूल, जो वेब पर मौजूद सभी सूचनाओं को "surfs" करता है, मैच का पता लगाता है, और फिर रिजल्ट्स को रैंक करता है।

टिम बर्नर्स-ली और, कुछ हद तक, रॉबर्ट कैओ को वर्ल्ड वाइड वेब के आविष्कारक माना जाता है। टिम बर्नर्स-ली HTTP, URI / URL और HTML तकनीकों के लेखक हैं। 1980 में उन्होंने यूरोपियन काउंसिल फॉर न्यूक्लियर रिसर्च (Conseil Européen la Recherche Nucléaire, CERN) में एक सॉफ्टवेयर सलाहकार के रूप में काम किया। यह जिनेवा (स्विट्जरलैंड) में था, कि उन्होंने अपनी जरूरतों के लिए पूछताछ कार्यक्रम लिखा था। पूछताछ, शिथिल "अन्वेषक" के रूप में अनुवादित (Interrogative, loosely translated as "investigator"), जिसने डेटा को स्टोर करने के लिए यादृच्छिक (random) संघों का उपयोग किया और वर्ल्ड वाइड वेब के लिए वैचारिक नींव रखी।

दुनिया की पहली वेब साइट 6 अगस्त, 1991 को बर्नर्स-ली द्वारा होस्ट की गई थी, जो पहले वेब सर्वर (http://info.cern.ch/) पर उपलब्ध थी। संसाधन परिभाषित अवधारणा वर्ल्ड वाइड वेब, एक वेब सर्वर की स्थापना के लिए निर्देश, एक ब्राउज़र का उपयोग करना, आदि। यह साइट दुनिया की पहली इंटरनेट निर्देशिका भी थी, क्योंकि बाद में टिम बर्नर्स-ली ने अन्य साइटों के लिंक की एक सूची पोस्ट की और उसे बनाए रखा।

वर्ल्ड वाइड वेब पर पहली तस्वीर में एक पैरोडी फिलक समूह लेस होरिबल्स सर्नेट्स दिखाया गया था। टिम बर्नर्स-ली ने सर्न हार्डिक फेस्टिवल के बाद बैंड नेता से अपने स्कैन के लिए कहा।

फिर भी वेब की सैद्धांतिक नींव बर्नर्स-ली की तुलना में बहुत पहले रखी गई थी। 1945 में वापस, Wannáver Bush ने Memex अवधारणा विकसित की (अंग्रेज़ी)रूसी - "मानव स्मृति का विस्तार" का सहायक यांत्रिक साधन। मेमेक्स एक ऐसा उपकरण है जिसमें एक व्यक्ति अपनी सभी पुस्तकों और रिकॉर्डों (और, आदर्श रूप से, अपने सभी ज्ञान को औपचारिक विवरण के लिए उधार देता है) को संग्रहीत करता है और जो पर्याप्त गति और लचीलेपन के साथ आवश्यक जानकारी देता है। यह एक व्यक्ति की स्मृति का विस्तार और जोड़ है। बुश ने ग्रंथों और मल्टीमीडिया संसाधनों की एक व्यापक अनुक्रमणिका की भी भविष्यवाणी की, जिससे आपको आवश्यक जानकारी जल्दी से मिल सके। वर्ल्ड वाइड वेब की ओर अगला महत्वपूर्ण कदम हाइपरटेक्स्ट (1965 में टेड नेल्सन द्वारा गढ़ा गया एक शब्द) का निर्माण था।

- सिमेंटिक वेब नए मेटाडेटा स्वरूपों की शुरुआत के माध्यम से वर्ल्ड वाइड वेब पर सूचना की स्थिरता और प्रासंगिकता में सुधार के बारे में है।
- सामाजिक वेब, वेब पर सूचनाओं को व्यवस्थित करने के काम पर निर्भर करता है, जो वेब उपयोगकर्ताओं द्वारा स्वयं किया जाता है। दूसरी दिशा में, घटनाक्रम जो अर्थ वेब का हिस्सा हैं, सक्रिय रूप से टूल (आरएसएस [Really Simple Syndication] और अन्य वेब फीड फॉर्मेट, ओपीएमएल [Optical Position Measurement System], एक्सएचटीएमएल [Extensible Hypertext Markup Language] माइक्रोफॉर्मेट्स) के रूप में उपयोग किया जाता है। विकिपीडिया श्रेणी ट्री के आंशिक रूप से शब्दार्थ अनुभाग उपयोगकर्ताओं को सूचना स्थान में सचेत रूप से स्थानांतरित करने में मदद करते हैं, हालांकि, उपश्रेणियों के लिए बहुत नरम आवश्यकताएं ऐसे वर्गों के विस्तार के लिए आशा का कारण नहीं देती हैं। इस संबंध में, नॉलेज एटलस को संकलित करने के प्रयास रुचि के हो सकते हैं।

वेब 2.0 की लोकप्रिय अवधारणा भी है, जो वर्ल्ड वाइड वेब के विकास की कई दिशाओं का सार प्रस्तुत करती है।

### वर्ल्ड वाइड वेब कैसे कार्य करता है?

जब कोई यूजर वेब डॉक्यूमेंट को खोलता है तो वह इसके लिए एक प्रकार की एप्लीकेशन का इस्तेमाल करता है जिसे वेब ब्राउज़र कहते हैं। जब किसी वेब ब्राउज़र में डोमेन या URL का नाम लिखा जाता है तो ब्राउज़र http के डोमेन एड्रेस को खोजने की रिक्वेस्ट generate करता है क्योंकि हर डोमेन का अपना अलग एड्रेस होता है। इसके बाद ब्राउज़र डोमेन name को सर्वर IP एड्रेस में बदल देता है। जिसको www उस सर्वर में सर्च करता है। जब एड्रेस वह सर्वर जिससे डोमेन को होस्ट किया गया है वह मैच हो जाता है तो सर्वर उस पेज को ब्राउज़र के पास वापस भेज देता है। जिसको आप अपने वेब ब्राउज़र पर आसानी से देख सकते हैं।

### वर्ल्ड वाइड वेब के लाभ

- जानकारी की उपलब्धता और दुनिया भर से आसानी से कांटेक्ट स्थापित किया जा सकता है।
- प्रकटीकरण (divulgateion, inauguration) की लागत को कम करता है।
- रैपिड इंटरैक्टिव संचार जो विभिन्न सेवाओं के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।
- प्रोफेशनल कांटेक्ट की स्थापना के साथ-साथ सूचनाओं का आदान-प्रदान।
- प्रारंभिक कनेक्शन की कम लागत।
- जानकारी के विभिन्न स्रोतों तक पहुंच को सुगम बनाता है, जो लगातार अपडेट किया जाता है।
- यह एक प्रकार का वैश्विक मीडिया (global media) बन गया है।

### कुछ नुकसान इस प्रकार हैं:

- ओवरलोड और अधिक जानकारी का खतरा।
- कुशल सूचना खोज रणनीति की आवश्यकता है।
- सर्च धीमा हो सकता है।
- जानकारी को फ़िल्टर करना और प्राथमिकता देना मुश्किल हो सकता है।
- नेट भी ओवरलोड हो जाता है क्योंकि बड़ी संख्या में उपयोगकर्ता इसका इस्तेमाल करते हैं।
- उपलब्ध डेटा इत्यादि पर गुणवत्ता का नियंत्रण करना कठिन हो सकता है।

ऐसा कहना गलत नहीं होगा कि वर्ल्ड वाइड वेब हाइपरटेक्स्ट मार्कअप लैंग्वेज या HTML का उपयोग करने वाला हाइपरमीडिया है। यह अनूठी भाषा उपयोगकर्ता को उन सूचनाओं तक पहुंचने में मदद करेगी जो लिंक की जाती हैं ताकि जब कोई व्यक्ति किसी लिंक के एक हिस्से पर चयन या क्लिक करे तो स्वचालित रूप से निर्दिष्ट जानकारी मिल जाए। अनूठी विशेषता यह है कि यह उपयोगकर्ताओं को एक शब्द पर 'क्लिक' करने का अधिकार देता है और इससे संबंधित वेब स्थान पर भी ले जाता है।

### वर्ल्ड वाइड वेब का प्रचार , प्रसार :-

पहला वेब सर्वर दिसंबर 1991 में संयुक्त राज्य अमेरिका में ऑनलाइन आया था। इस समय, केवल दो प्रकार के ब्राउज़र थे; मूल विकास संस्करण जो केवल NeXT मशीनों और 'लाइन-मोड' ब्राउज़र पर उपलब्ध था, जो किसी भी प्लेटफॉर्म पर इंस्टॉल और रन करना आसान था, लेकिन उपयोगकर्ता के अनुकूल नहीं था और इसमें सीमित शक्ति थी।

आगे के सुधार के लिए, बर्नर्स-ली ने अन्य डेवलपर्स को इंटरनेट के माध्यम से इसके विकास में योगदान करने के लिए कहा। कई डेवलपर्स ने एक्स-विंडो सिस्टम के लिए ब्राउज़र लिखे। यूरोप के बाहर पहला वेब सर्वर, 1991 में संयुक्त राज्य अमेरिका में मानक विश्वविद्यालय में पेश किया गया था। उसी वर्ष, दुनिया भर में केवल दस ज्ञात वेब सर्वर थे।

बाद में 1993 की शुरुआत में, नेशनल सेंटर फॉर सुपरकंप्यूटिंग एप्लिकेशन (NCSA) ने अपने **मोज़ेक ब्राउज़र** का पहला संस्करण पेश किया। यह एक्स विंडो सिस्टम वातावरण में चला। बाद में, NCSA ने PC और Macintosh (Macs) वातावरण के लिए संस्करण जारी किए। इन कंप्यूटरों पर उपयोगकर्ता के अनुकूल ब्राउज़रों की शुरुआत के साथ, डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू ने दुनिया भर में जबरदस्त प्रसार करना शुरू कर दिया।

आखिरकार, यूरोपीय आयोग ने उसी वर्ष अपने पहले वेब प्रोजेक्ट को सर्न के साथ अपने एक साथी के रूप में मंजूरी दे दी। अप्रैल 1993 में, CERN ने WWW के स्रोत कोड को रॉयल्टी-फ्री आधार पर उपलब्ध कराया और इस तरह इसे मुफ्त सॉफ्टवेयर बनाया। रॉयल्टी-मुक्त का अर्थ है किसी को रॉयल्टी या लाइसेंस शुल्क का भुगतान किए बिना कॉपीराइट सामग्री या बौद्धिक संपदा का उपयोग करने का अधिकार है। इस प्रकार, सर्न ने लोगों को मुफ्त में कोड और वेब प्रोटोकॉल का उपयोग करने की अनुमति दी। डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू बनाने के लिए विकसित की गई तकनीकें लोगों को मुफ्त में उपयोग करने की अनुमति देने के लिए एक खुला स्रोत बन गईं। आखिरकार, लोगों ने जानकारी और अन्य समान उद्देश्यों को प्रदान करने के लिए, ऑनलाइन व्यवसायों के लिए वेबसाइट बनाना शुरू कर दिया।

1993 के अंत में, 500 से अधिक वेब सर्वर थे, और WWW के पास कुल इंटरनेट ट्रैफ़िक का 1% है। मई 1994 में, CERN में पहला अंतर्राष्ट्रीय वर्ल्ड वाइड वेब सम्मेलन आयोजित किया गया था और इसमें लगभग 400 उपयोगकर्ताओं और डेवलपर्स ने भाग लिया और लोकप्रिय रूप से "वुडस्टॉक ऑफ़ द वेब" के रूप में जाना गया। उसी वर्ष, दूरसंचार कंपनियों ने इंटरनेट का उपयोग प्रदान करना शुरू किया, और लोगों के पास अपने घरों पर उपलब्ध डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू तक पहुंच है।

उसी वर्ष, संयुक्त राज्य में एक और सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसमें 1000 से अधिक लोगों ने भाग लिया। यह NCSA और नवगठित अंतर्राष्ट्रीय WWW सम्मेलन समिति (IW3C2) द्वारा आयोजित किया गया था। इस वर्ष (1994) के अंत में, वर्ल्ड वाइड वेब के लगभग 10000 सर्वर और 10 मिलियन उपयोगकर्ता थे। बढ़ती जरूरतों और सुरक्षा को पूरा करने के लिए तकनीक में लगातार सुधार किया गया और जल्द ही ई-कॉमर्स उपकरणों को जोड़ने का निर्णय लिया गया।

इंटरनेट पर कार्य करते समय, संभवतः आपको डाउनलोड करने और अपलोड करने की शर्तों का सामना करना पड़ा है। डाउनलोड करने का अर्थ है आपके कंप्यूटर पर इंटरनेट से डेटा या एक फ़ाइल प्राप्त करना। अपलोड करने का मतलब इंटरनेट पर कहीं से आपके कंप्यूटर से डेटा या एक फाइल भेजना है। ये शर्तें उन गतिविधियों का वर्णन करती हैं जैसे आप कोई डॉक्यूमेंट अपने कंप्यूटर ओपन कर रहे हैं या सेव कर रहे हैं तो आपने वह फ़ाइल डाउनलोड कर ली है। यदि आपने कभी कोई फोटो फेसबुक या किसी अन्य सोशल मीडिया साइट पर साझा की है, तो आपने वह फोटो अपलोड किया है।



### डाउनलोड

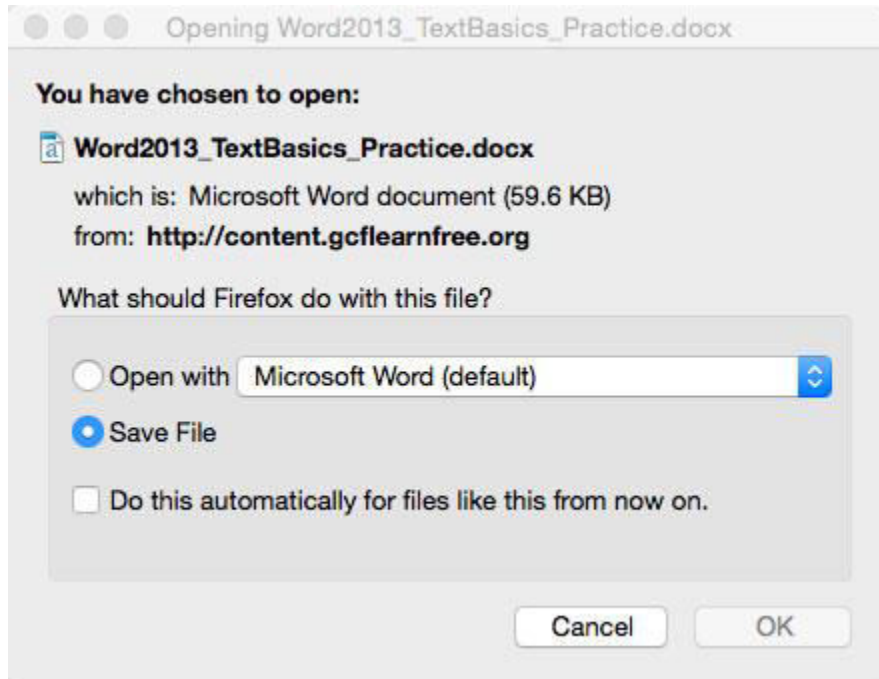
आमतौर पर, जब आप कोई फ़ाइल डाउनलोड करते हैं तो आप उस फ़ाइल के लिंक पर क्लिक करके डाउनलोड शुरू करेंगे।

#### → लिंक फॉर डाउनलोड

यदि आप लिंक पर क्लिक करते हैं, तो आपका ब्राउज़र आपको फ़ाइल डाउनलोड करने के दो तरीकों में से एक का चयन करने के लिए संकेत देगा।

फ़ाइल को डाउनलोड करें और इसे निर्दिष्ट कार्यक्रम में तुरंत लोड करें।

सेव फ़ाइल इसे डाउनलोड करेगी और इसे आपकी हार्ड ड्राइव में सेव करेगी।



किसी भी तरह, ठीक क्लिक करते ही, डाउनलोड शुरू हो जाता है। आपका ब्राउज़र डाउनलोड पर प्रगति और शेष समय का संकेत देगा।



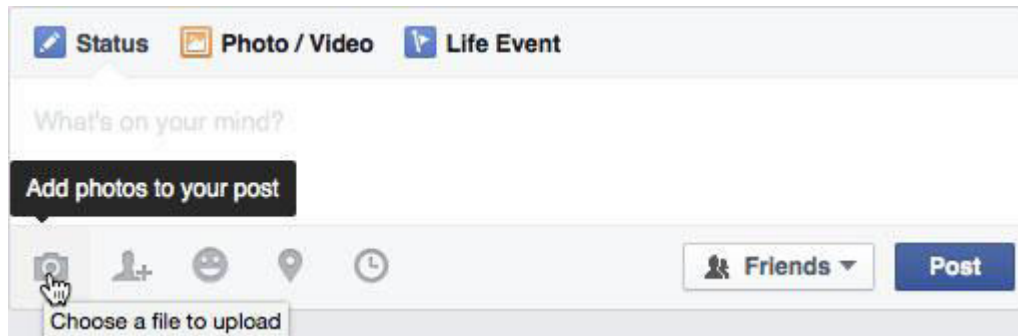
एक बार डाउनलोड पूरा हो जाने के बाद, या तो फ़ाइल आपके कंप्यूटर में सेव हो जाएगी या आपके द्वारा चुने गए प्रोग्राम में खुल जाएगी। यदि आपके पास इसे डाउनलोड करने के बाद फ़ाइल दूँढने में समस्या है, तो आपके डाउनलोड फ़ोल्डर की जाँच करें।

जब आप किसी फ़ाइल के लिंक पर क्लिक करते हैं तो कुछ ब्राउज़र हमेशा यह डाउनलोड प्रक्रिया शुरू नहीं करते हैं। इन मामलों में, आप लिंक पर राइट-क्लिक कर सकते हैं, फिर सेव लिंक को क्लिक करें, फिर फ़ाइल डाउनलोड करने के लिए एक स्थान चुनें।

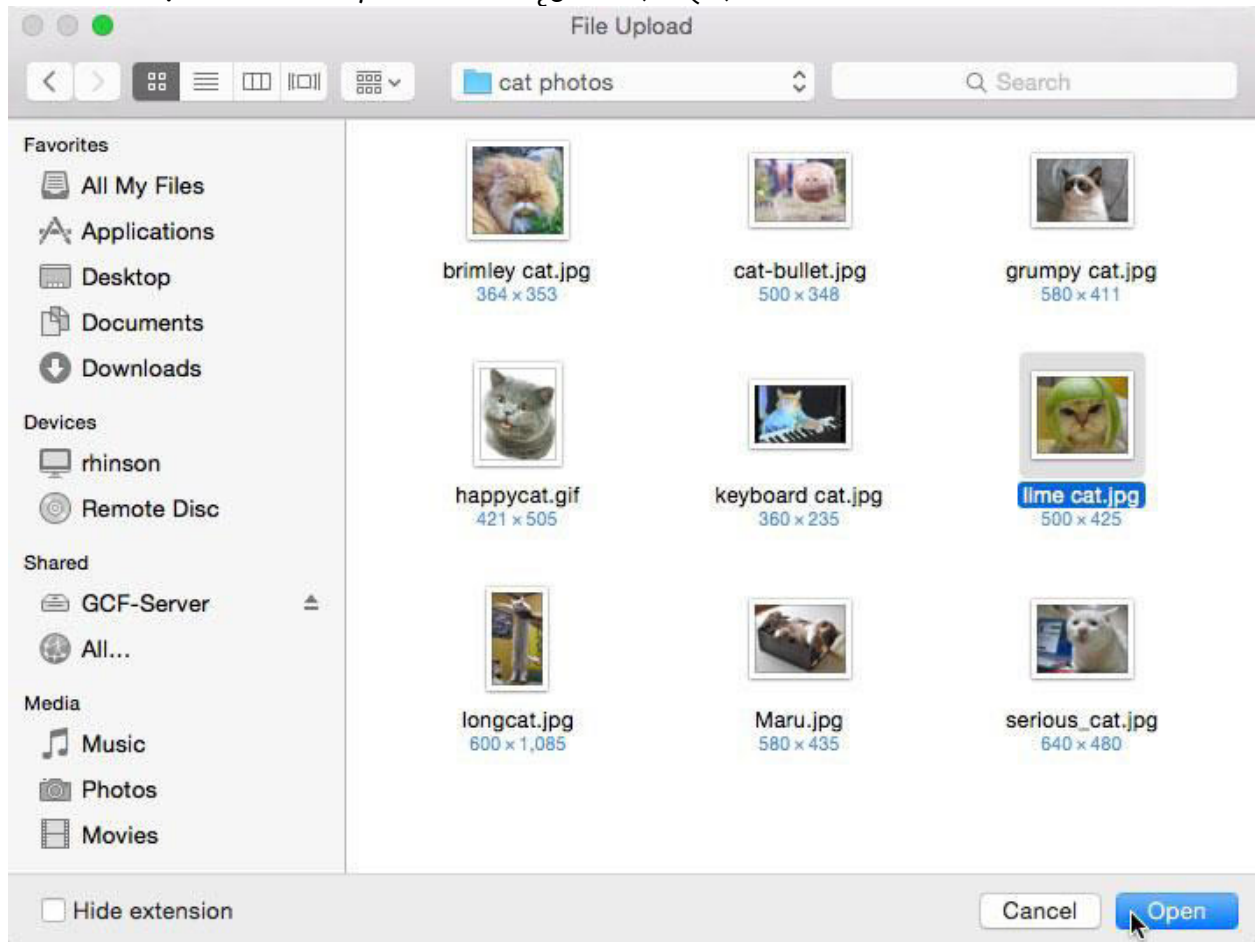
### अपलोडिंग

यदि कोई साइट अपलोड करने की अनुमति देती है, तो फ़ाइल ट्रांसफ़र करने में मदद करने के लिए उसकी अपलोड उपयोगिता होगी। प्रत्येक साइट इस प्रक्रिया को अलग तरीके से संभालती है, लेकिन हम कुछ सामान्य उदाहरण देंगे। आमतौर पर, साइट में अपलोड प्रक्रिया के माध्यम से आपको चलने में पृष्ठों की मदद मिलेगी।

कई साइटों में एक अपलोड बटन है जो एक संवाद बॉक्स खोलता है। उदाहरण के लिए, फेसबुक में एक कैमरा आइकन है जो अपलोड प्रक्रिया शुरू करता है।



एक डायलॉग बॉक्स दिखाई देगा, जो आपको एक फाइल चुनने के लिए प्रेरित करेगा। उस स्थान पर ब्राउज़ करें जहाँ आपकी फ़ाइल संग्रहीत है, इसे चुनें, फिर ओपन बटन पर क्लिक करें। बाद में, अपलोड प्रक्रिया पर नज़र रखने वाला एक प्रगति बार पृष्ठ पर दिखाई देगा।



कुछ साइटें ड्रैग-एंड-ड्रॉप इंटरफ़ेस का समर्थन करती हैं। उदाहरण के लिए, जब ड्रॉपबॉक्स में लॉग इन किया जाता है तो आप फ़ाइलों को अपने कंप्यूटर पर एक फ़ोल्डर से खींच सकते हैं और उन्हें ब्राउज़र विंडो में छोड़ सकते हैं।

Dropbox &gt; Cat photos



Search

Name ▾

Kind

Modified



brimley cat.jpg

image

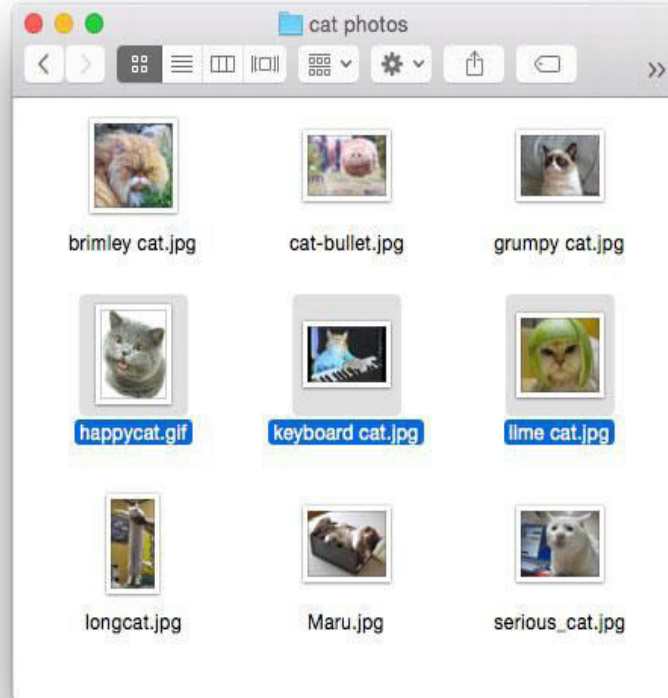
1 min ago



grumpy cat.jpg

image

1 min ago



कई अन्य अपलोड उपयोगिताओं में समान विशेषताएं हैं।

i.e. -> <https://edu.gcfglobal.org/en/internetbasics/downloading-and-uploading/1/>

**UNIT 3****वेबसाइट्स का परिचय**

इस यूनिट में हम वेबसाइट क्या होती हैं उसके बारे में जानेंगे जैसे तो किसी भी विषय से सम्बंधित बहुत सारी परिभाषाएं होती होती हैं। हम सीधे व सरल शब्दों में वेब साइट को समझने की कोशिश करते हैं। लेकिन वेबसाइट का सही मायने में क्या मतलब है? अगर बही का एक कागज हो, तो उसे पत्रा (पेज) कहते हैं। उसी तरह से इंटरनेट पेज को 'वेब पेज' कहा जाता है। और ऐसे 100-200 कागज एकसाथ बांध दे, तो? उसे बही या नोटबुक कहते हैं। इसी प्रकार जब बहुत सारी वेब पेज्स इंटरनेट पर किसी एक जगह (सेंट्रल लोकेशन) संकलित हो जाते हैं, वो वेबसाइट होती है। एक वेबसाइट में सैंकडो वेब पेजेस होती है। नोटबुक का सबसे पहला पेज जैसे 'कव्हर पेज' होता है, उसी तरह वेबसाइट का पहला पेज 'होम पेज' माना जाता है। होम पेज वेबसाइट की पहचान हो सकती है।

**परिभाषा:-**

एक वेबसाइट (Website) सार्वजनिक रूप से इंटरनेट पर उपलब्ध वेब पेजों और संबंधित सामग्री का एक संग्रह है जिसे एक सामान्य डोमेन नाम (Domain Name) से पहचाना जाता है और कम से कम एक वेब सर्वर पर प्रकाशित किया जाता है। उल्लेखनीय उदाहरण wikipedia.org, google.com और amazon.com हैं।

सभी सार्वजनिक रूप से सुलभ वेबसाइटें सामूहिक रूप से वर्ल्ड वाइड वेब का गठन करती हैं। ऐसी निजी वेबसाइटें भी हैं जिन्हें केवल एक निजी नेटवर्क पर ही एक्सेस किया जा सकता है, जैसे कि अपने कर्मचारियों के लिए कंपनी की आंतरिक वेबसाइट।

वेबसाइट आमतौर पर किसी विशेष विषय या उद्देश्य, जैसे समाचार, शिक्षा, वाणिज्य, मनोरंजन या सामाजिक नेटवर्किंग के लिए समर्पित होती हैं। वेब पृष्ठों के बीच हाइपरलिंकिंग साइट के नेविगेशन को निर्देशित करती है, जो अक्सर होम पेज से शुरू होती है। उपयोगकर्ता डेस्कटॉप, लैपटॉप, टैबलेट और स्मार्टफ़ोन सहित कई उपकरणों पर वेबसाइटों तक पहुँच सकते हैं। इन उपकरणों पर उपयोग किए जाने वाले सॉफ़्टवेयर एप्लिकेशन को वेब ब्राउज़र कहा जाता है। हिंदी भाषा की बेहतर समझ और पकड़ बनाने में आपकी मदद के लिए ढेर सारे ऐप और पॉडकास्ट (पॉडकास्ट या **Podcasting** का अर्थ एक रेडियो शो होता है जो इंटरनेट पर चलता है। इसे इंटरनेट का रेडियो भी कहा जा सकता है। यह किसी रेडियो शो के समान ही होता है, लेकिन यहां On-Demand यानी अपनी इच्छानुसार कोई भी पॉडकास्ट लगा कर सुन सकते हैं।) हैं। एक याद के रूप में यहां सर्वश्रेष्ठ हिंदी भाषा पॉडकास्ट की जांच करें। हालाँकि, हिंदी सीखने के अन्य साधन भी हैं। बहुत सारी वेबसाइटें सामग्री प्रदान करती हैं जो आपके कौशल को उन्नत करने में सहायता कर सकती हैं। हिंदी भारत की सबसे व्यापक रूप से बोली जाने वाली भाषा है, इसलिए इसकी अच्छी समझ होना आवश्यक है। ये वेब-पेज मुफ्त सामग्री का एक बुफे प्रदान करते हैं और कुछ उन्नत पाठ्यक्रमों के लिए मामूली शुल्क लेते हैं। लेकिन आपको मिलने वाले लाभ और अपनी गति से सीखने की सुविधा सही होना बहुत अच्छा है!

जब सीखने की बात आती है तो हर किसी की क्षमता अलग होती है। चुनने के लिए असंख्य वेबसाइटें हैं जिनसे सभी प्रकार के व्यक्तियों के लिए हिंदी भाषा के विकास में मदद मिल सकती है। यदि आप किसी विशेष वेब-पेज से हिंदी सीखने में सहज नहीं हैं, तो आप एक अधिक उपयुक्त खोज और खोज कर सकते हैं, जो आपकी आवश्यकता को पूरा कर सके। आप हिंदी बोलने के तरीके पर हिंदी की कक्षा ले सकते हैं या पाठ्यक्रम में दाखिला ले सकते हैं। एक नई भाषा सीखना मुश्किल हो सकता है इसलिए अच्छे भाषा स्कूलों की वेबसाइटों को खोजने की कोशिश करें जो भाषा कार्यक्रम संचालित करने के लिए प्रशिक्षित हैं।

**हिंदी भाषा सीखने में इंटरनेट कैसे मदद कर सकता है**

इंटरनेट एक अंतहीन संसाधन बैंक है। धाराप्रवाह हिंदी बोलना सीखने के लिए आपको समय निवेश करने की आवश्यकता है। कई हिंदी भाषा सीखने के ऐप और वेबसाइट हैं जैसे डुओलिंगो, रोसेटा स्टोन, बेबेल, आदि। रिसर्च किस साइट पर आपके लिए अधिक उपयुक्त है। चयन का विकल्प इस बात पर निर्भर करेगा कि आप क्या सीखना चाहते हैं, आपको कितनी तेज़ी से सीखने की ज़रूरत है, आप किस स्तर तक पहुँचना चाहते हैं। भाषा पाठ्यक्रमों से चयन करें, हिंदी भाषा कैसे बोलें या हिंदी साहित्य के बारे में जानें या भाषा कार्यक्रमों के लिए साइन अप करें। ट्यूटर्स आपको सही दिशा में मार्गदर्शन कर सकते हैं। धाराप्रवाह हिंदी बोलने के लिए, आपके पास एक मजबूत शब्दावली होनी चाहिए। उच्चारण और व्याकरण पर विशेष ध्यान दें। एक सही वाक्य बनाने में स्वर, व्यंजन, क्रिया, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और काल का सही उपयोग सीखें।

इंटरनेट के पास आपके लिए बहुत सारे विकल्प हैं- चाहे वह उपमहाद्वीप के अंतरराष्ट्रीय लेखकों के प्रशंसित लेखकों द्वारा ब्लॉग हों। विभिन्न वेबसाइटों पर जाएं और अपने सुनने के कौशल, पढ़ने और लिखने की तकनीकों को परिष्कृत करने के लिए निःशुल्क सबक लें। जो लोग बहुभाषी होते हैं या अन्य भाषाओं को जानते हैं वे अधिक पसंदीदा और सम्मानित होते हैं।

### सामाजिक (social) नेटवर्किंग की भूमिका

अगर सही तरीके से इस्तेमाल किया जाए तो सोशल नेटवर्किंग तकनीक की दुनिया में एक बड़ा उछाल है। आप पूरे भारत और दुनिया के लोगों के साथ साइन अप, कनेक्ट और संवाद कर सकते हैं और एक दूसरे को सीखने में मदद कर सकते हैं। हिंदी भारत की आधिकारिक भाषाओं में से एक है, इसलिए यदि आप इसके मास्टर हैं, तो आपको भारत के किसी भी हिस्से में बातचीत करने में कभी कठिनाई नहीं होगी, चाहे वह उत्तर भारत, मध्य प्रदेश या पश्चिम बंगाल हो। बस अपडेट, ब्लॉग, कहानियाँ और विभिन्न लोगों के फोटो के कैप्शन के माध्यम से ब्राउज़ करके आप अपनी हिंदी शब्दावली, लेखन शैली, और पढ़ने की तकनीक में सुधार कर सकते हैं।

सोशल मीडिया आपको हिंदी भाषा का एक नया दृष्टिकोण देगा और आप वर्तमान लिंगो या प्रवृत्ति के साथ तालमेल बिठाएंगे। इंटरनेट से समाचार पढ़ने से हमारे सोचने और संवाद करने के तरीके को बेहतर बनाने में भी मदद मिलती है। आप परिवेश के बारे में अधिक जागरूक होंगे। आसान पहुँच के कारण, अधिकांश मुख्य समाचार चैनलों के पास अपने वेब-पेज और एप्लिकेशन होते हैं ताकि बड़े दर्शकों तक पहुँच बनाई जा सके। आपको 5 बजे की खबर का इंतजार करने की ज़रूरत नहीं है। आप कार्यालय से वापस आते समय दिन के मुख्य आकर्षण पढ़ सकते हैं और उनकी वेबसाइट को खोलकर केवल एक क्लिक पर! यह आपकी मातृभाषा नहीं हो सकती है, लेकिन इंटरनेट से वेब-पृष्ठों की सहायता से बार-बार अभ्यास आपको सीखने की प्रक्रिया में मदद कर सकता है।

जानें कि हिंदी संस्कृत से कैसे निकली और हिंदी वर्णमाला देवनागरी लिपि में कैसे लिखी गई। हिंदी और उर्दू एक साथ चलते हैं ताकि आप एक ही बार में दोनों भाषाओं का लाभ उठा सकें। फ़ारसी और अरबी भाषा ने भी हिंदी को प्रभावित किया। आप इन सभी को इंटरनेट पर और बहुत कुछ पा सकते हैं। इंटरनेट एक खजाना है यदि आप जानते हैं कि कहाँ देखना है।

### हिंदी सीखने के लिए शीर्ष वेब-पेज

इंटरनेट पर बहुत सारे वेब-पेज हैं, लेकिन सुनिश्चित करें कि आप विश्वसनीय और उच्च श्रेणी के लोगों में पंजीकृत हैं ताकि आप गुमराह या गुमराह न हों। हालाँकि, यहां तक कि नए वेब-पेजों में ठोस सामग्री हो सकती है, या आप किसी विशेष वेब-पेज की सामग्री के माध्यम से जाने में सहज महसूस कर सकते हैं, जो सुर्खियों में नहीं है। जब तक यह आपके लिए फायदेमंद है और आप अपनी ज़रूरत के अनुसार सीख रहे हैं तब तक आप कहीं से भी कोर्स कर सकते हैं।

**यहाँ इंटरनेट पर हिंदी पढ़ाने वाले कुछ शीर्ष कमाई करने वाले मुफ्त वेब-पेज देखें-**

**1. Loecsen:** - यह वेबसाइट मूल बातें से हिंदी सीखने में आपकी मदद कर सकती है। आपको उन शब्दों और वाक्यांशों को पढ़ना, दोहराना और याद रखना चाहिए जिन्हें आप दैनिक आधार पर उपयोग कर सकते हैं। यह आपको हिंदी भाषा की आवश्यक चीजों के माध्यम से ले जाता है ताकि आप कहीं भी संवाद कर सकें। यदि आप पर्याप्त रूप से आश्वस्त हैं तो आप सीधे इंटरमीडिएट स्तर से शुरू कर सकते हैं या एक उन्नत कोर्स कर सकते हैं।

**2. मौखिक ग्रह :-** अपनी गति से जानें और विभिन्न भाषा कार्यक्रमों से चुनें और चुनें। सप्ताह के कितने दिनों का चयन करें जो आप कमिट करना चाहते हैं। पूर्ण-विकसित पाठ्यक्रमों से लेकर प्रकाश पढ़ने तक आप अपनी सीखने की भूख को संतुष्ट करने के लिए बहुत सारी सामग्री पा सकते हैं। ऐसे ट्यूटर हैं जो आपको सलाह दे सकते हैं और आपको एक उचित दिशा में ले जा सकते हैं ताकि आप तेजी से सीख सकें।

**3. लाइव लिंगुआ:-** यह आपके सभी हिंदी भाषा सीखने की जरूरतों को पूरा करने के लिए एक पूरी तरह से मुफ्त वेबसाइट है। कोई भी पंजीकरण कर सकता है और ई-बुक्स, ऑडियो-बुक्स, लेक्चर्स आदि तक पहुंच प्राप्त कर सकता है। लोग इंटरनेट कनेक्शन न होने पर भी सामग्री डाउनलोड कर सकते हैं और उनसे सीख सकते हैं। जब आप यात्रा कर रहे हों तब भी बस हिंदी डाउनलोड करें और सीखें!

**4. Duolingo:** - यह एक अन्य वेब-पेज है (ऐप के रूप में भी उपलब्ध है) जो आपको व्यक्तिगत पाठ्यक्रम लेने में मदद करता है, आपकी प्रगति को दर्शाता है और आपको प्रेरणा को उच्च बनाए रखने के लिए पुरस्कृत करता है। मूल बातें स्वतंत्र हैं और एक छोटी राशि के साथ, आप डुओलिंगो प्लस तक पहुंच प्राप्त कर सकते हैं जो आपके लिए हिंदी भाषा सीखने और मास्टर करने के लिए बहुत अधिक विकल्प खोलता है।

**5. Mindurhindi:** - यह वेबसाइट आपको हिंदी वर्णमाला सीखने में मदद करती है और आपको अंग्रेजी में हिंदी पाठ सिखाती है। जो लोग अंग्रेजी में प्रवीण हैं, वे इस वेब-पेज का विकल्प चुन सकते हैं और सामान्य अंग्रेजी वाक्यों को हिंदी में अनुवाद करके मूल बातें सीख सकते हैं। यह आपको हिंदी भाषी समुदाय में आसानी से संवाद करने में मदद करेगा।

**6. Linguanaut:** - सबसे अधिक उपयोग किए जाने वाले हिंदी शब्दों जैसे नमस्ते, सुक्रिया से हिंदी अनुवाद के लिए, आप इस वेबसाइट पर कई प्रकार के विकल्प पा सकते हैं। आप अपनी हिंदी को मजबूत करने के लिए हिंदी वाक्यांशों और शब्दों के बारे में जान सकते हैं।

**7. हिंदी सीखना:-** ई-बुक्स, ऑडियो-बुक्स, व्याकरण में पाठ, उच्चारण, शुरुआती गाइड, मध्यवर्ती स्तर की हिंदी, कुछ विकल्प यहाँ उपलब्ध हैं। भारत के लिंगुआ फ्रेंका को विकसित करने के लिए अपनी इच्छा के अनुसार पाठ्यक्रमों को दोहराकर अभ्यास करें।

**8. रॉकेट भाषाएँ:-** इस वेब-पेज में उच्च-स्तरीय ट्यूटर हैं जिनकी मदद से आप हिंदी वार्तालाप में महारत हासिल कर सकते हैं या अपने हिंदी उच्चारण को सटीक बनाने के लिए इंटरैक्टिव ऑडियो पाठों को सुनकर स्वयं सीख सकते हैं। आपके लिए सीखने के लिए हिंदी शब्दों और वाक्यांशों की विस्तृत सूची भी है!

**यूट्यूब :-** YouTube को किसी परिचय की आवश्यकता नहीं है। बस टाइप करें जो आप सीखना चाहते हैं जैसे कि सबसे आम हिंदी शब्द या हिंदी भाषा में महारत हासिल करने के लिए और आपको कई वीडियो मिलेंगे। उनकी संख्या या आपकी रुचि के अनुसार उनका चयन करें। आप जब चाहें तब वीडियो डाउनलोड कर सकते हैं और उन्हें चला सकते हैं।

**Portal:** - पोर्टल इंटरनेट और विश्वव्यापी वेब के संदर्भ में जालस्थलों (वेबसाइट्स) के समूह को कहा जाता है। पोर्टल का शाब्दिक अर्थ होता है प्रवेशद्वार। एक पोर्टल वास्तव में स्वयं भी एक जालस्थल होता है,

जिससे दूसरे कई अन्य संबंधित जालस्थलों पर पहुंचा जा सकता है। इंटरनेट से जुड़ने पर कई प्रकार के पोर्टल मिलते हैं।

**Def:** - वेबसाइट्स के समूह को पोर्टल कहा जाता है। पोर्टल का शाब्दिक अर्थ होता है प्रवेशद्वार। पोर्टल वास्तव में स्वयं भी एक वेबसाइट होती है, जिससे दूसरे कई अन्य संबंधित वेबसाइट पर पहुंचा जा सकता है। इंटरनेट से जुड़ने पर कई प्रकार के पोर्टल मिलते हैं। पोर्टल्स पर विभिन्न स्रोतों से जानकारियां जुटाकर व्यवस्थित रूप में उपलब्ध करायी जाती हैं। इसके साथ ही पोर्टल पर कई तरह की सेवाएं भी दी जाती हैं।

जैसे- कई पोर्टल यूजर को सर्च इंजन की सुविधा देते हैं, इसके अलावा, कम्युनिटी चैट फोरम, होम पेज, और ईमेल की सुविधाएं देते हैं। पोर्टल पर सर्च इंजन, सब्जेक्ट डायरेक्ट्री, और अन्य सर्विस जैसे- न्यूज़, इंटरटेनमेंट, स्टॉक, मार्केट, शॉपिंग आदि की लिंक होती है। इन लिंक के द्वारा आप उस वेबसाइट तक पहुंच सकते हो। पोर्टल पर समाचार, स्टॉक मूल्य और फिल्म आदि की गपशप भी देख सकते हैं। बहुत से पोर्टल्स को यूजर अपनी आवश्यकता के अनुसार कस्टमाइज भी कर सकता है।

पोर्टल बड़े सर्च इंजन और ब्राउज़र प्रोवाइडर द्वारा प्रायोजित (Sponsored) होते हैं। पोर्टल साइट पर सभी इंटरनेट सर्विस प्रोवाइडर अपना ध्यान दो सर्विस पर अधिक लगाते हैं- मनोरंजन और इनफार्मेशन। वेब साइट के पहले पेज पर यूजर के लिए ये दोनों सर्विस उपलब्ध होती है। साधारण अर्थों में कह सकते हैं की पोर्टल वो वेब साइट होती है जो यूजर को मनोरंजन और इनफार्मेशन की सर्विस प्रोवाइड कराती है और जहाँ यूजर इंटरनेट पर अधिक अनुभव प्राप्त करता है।

### वेब पोर्टल क्या है?

दरअसल यह एक प्रकार का वेबसाइट ही है जहाँ अलग-अलग sources से कई सारे सूचनाओं को एकत्रित कर एक single platform पर उपलब्ध कराया जाता है। लेकिन इसे access करने के लिए यूजर को लॉग इन करना पड़ता है जिसके लिए username और password की जरूरत पड़ती है।

यह एक प्रकार का विशेष रूप से डिजाइन किया गया वेबसाइट होता है जो किसी विशेष काम के लिए उपयोग होता है। आजकल लगभग हर बिज़नेस या आर्गेनाइजेशन में पोर्टल की जरूरत होती है जिसमें वहाँ के employee को एक ही स्थान पर सारी जानकारियाँ मिल जाती हैं।

उदाहरण के लिए किसी हॉस्पिटल के लिए एक patient portal बनाया जा सकता है। जिसपर वहाँ के डॉक्टर्स लॉग इन करके उस हॉस्पिटल के सारे मरीजों की जानकारी एक ही स्थान पर देख सकते हैं। यह एक प्रकार का प्राइवेट पोर्टल होगा जो सिर्फ उस हॉस्पिटल के स्टाफ के लिये उपयोगी होगा।

इसके अलावा कई सारे पब्लिक पोर्टल्स भी होते हैं जहाँ पर कोई भी अपना account बना कर पोर्टल की सुविधाओं का लाभ उठा सकता है।

ज्यादातर पोर्टल्स किसी विशेष category पर बनाये जाते हैं और user को personalized information दिया जाता है यानी यूजर को उनके जरूरत के अनुसार अलग-अलग तरह की जानकारियाँ दी जाती हैं।

जैसे job portal, जहाँ सिर्फ नौकरी और रोजगार जैसी सूचनाएं यूजर तक पहुंचाई जाती हैं। लेकिन हर नौकरी की सूचना हर यूजर को नहीं भेजी जाती यह निर्भर करता है यूजर की योग्यता पर।

जब naukri.com जैसे जॉब पोर्टल पर आप register करते हैं तो वहाँ आप अपना resume डाल सकते हैं और अपनी शिक्षा, अनुभव और योग्यता की जानकारी दे सकते हैं। इसके बाद आपके द्वारा दी गयी इन सारी जानकारियों के अनुसार आपके योग्य नौकरी की सूचनाएं आपको दी जाती हैं।

इन वेब पोर्टल्स को डेस्कटॉप, मोबाइल फ़ोन जैसे किसी भी डिवाइस के द्वारा इंटरनेट के जरिये कहीं से भी access किया जा सकता है।

### पोर्टल कितने प्रकार के होते हैं?

वैसे तो वेब पोर्टल के कई प्रकार के होते हैं लेकिन उनमें से मुख्य प्रकारों के नाम नीचे दिए गये हैं:

- **Vertical Portals:** इस प्रकार के पोर्टल में किसी एक विषय, इंडस्ट्री, या क्षेत्र के बारे में जानकारी होती है। उदाहरण के लिए यदि कोई बिज़नेस पोर्टल है तो उसमें केवल बिज़नेस के बारे में ही जानकारियाँ होंगी।
- **Horizontal Portals:** इसे "मेगा पोर्टल" भी कहा जाता है, क्योंकि यहाँ कई सारे topics के बारे में contents उपलब्ध होते हैं।
- **Enterprise Portals:** यह privat portal होता है जो किसी organization के कर्मचारियों के लिए बनाया जाता है। इसपर employee की सुविधा और सहायता के लिए तरह-तरह के information और services provide किये जाते हैं।
- **Knowledge Portals:** इस पोर्टल का उद्देश्य होता है की जानकारियों को सही और आसान तरीके यूजर तक पहुँचाया जाय।
- **Market Place Portals:** इसका उपयोग business to business (B2B), business to customer (B2C) के support के लिए किया जाता है। जैसे ecommerce की site जहाँ customer आसानी से products ढूँढ पाता है, इसे मार्केटप्लेस पोर्टल कहा जा सकता है।

### वेब पोर्टल की विशेषताएं (Features of Web Portal)

- **लॉग इन करना जरूरी होता है:** पोर्टल में दी गयी सुविधाओं को पाने के लिए यूजर को login करना पड़ता है।
- **पोर्टल के मेम्बर्स ही access कर सकते हैं:** यदि आप registered member नहीं हैं तो आप इसपर नहीं कर पायेंगे।
- **Personalized Information:** हर यूजर सारी जानकारियों को देख नहीं सकता उसको उसके role और permission के अनुसार ही जानकारियां दिखाई जाती हैं।
- **Domain Specific:** किसी एक category या एक विशेष क्षेत्र के लोगों के लिए हो सकता है।
- **Dynamic Contents:** एक वेबसाइट के मुकाबले पोर्टल पर information लगातार बदलते रहते हैं क्योंकि अलग-अलग यूजर को उनके काम की ही जानकारी और services दी जाती हैं।
- **Communication:** यह भी पोर्टल का एक feature होता है जिससे मेम्बर आपस में बात कर सकते हैं और एक दुसरे के संपर्क में रह सकते हैं।
- पोर्टल की सहायता से अन्य वेब साइट्स से इनफार्मेशन प्राप्त की जा सकती है।
- पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन करने की व्यवस्था सरल होती है।
- पोर्टल वेब साइट से जुड़ने के लिए एक गेट की भांतिकार्य करते है।
- पोर्टल वेब होस्टिंग की सुविधा प्रदान करते है।
- पोर्टल पर लगभग सभी प्रकार की मशीने जुड़ सकती है।

### वेब पोर्टल्स के कुछ उदाहरण

Web portals के कई सारे examples हैं जिनमे से कुछ ऐसे भी हैं जिन्हें हम हर रोज use करते हैं। ऐसे popular web portals के नाम नीचे दिए गये हैं।

- Google
- Yahoo!
- Facebook
- YouTube
- Twitter
- Blogger

- Amazon
- Flipkart
- PayTM
- Naukri
- Monster
- OnlineSBI
- UIDAI – Aadhar Card Portal
- TimesOfIndia
- 99acres
- Yatra
- aol.com
- netscape.com
- yahoo.com
- excite.com

ये सारे पोर्टल्स अपने users को personalized information provide करते हैं। जैसे यदि हम गूगल की बात करें तो user के country, area और personal settings के अनुसार search results दिखाता है।

### पोर्टल और वेबसाइट में क्या अंतर है?

वेबसाइट	वेब पोर्टल्स
इसे कोई भी publically access कर सकता है।	यह private होता है और इसे केवल registerd users ही access कर सकते हैं।
लॉग इन करने की जरूरत नहीं पडती।	लॉग इन करना पड़ता है।
इसके content सभी के लिए एक सामना होते हैं।	अलग-अलग यूजर के लिए अलग-अलग कंटेंट हो सकते हैं।
Website में communication की सुविधा नहीं होती।	यहाँ पर two-way communication होता है। users पोर्टल पर बात कर सकते हैं।
वेबसाइट का उद्देश्य किसी कंपनी, प्रोडक्ट आदि के प्रचार के लिए किया जाता है इस लिए इस पर अधिक से अधिक traffic drive करने की कोशिश की जाती है ताकि यह ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुँच सके।	जबकि एक portal का काम users, clients, employees आदि को सुविधाएँ प्रदान करना होता है। यानी इसे विशेष ग्रुप के लोगों को ध्यान में रख कर बनाया जाता है।

### पोर्टल का स्वरूप

एक वेब पोर्टल एक विशेष रूप से डिज़ाइन की गई वेबसाइट है जो विभिन्न स्रोतों से जानकारी लाती है, जैसे ईमेल, ऑनलाइन फ़ोरम और खोज इंजन, एक समान तरीके से। आमतौर पर, प्रत्येक सूचना स्रोत को सूचना प्रदर्शित करने के लिए पृष्ठ पर एक समर्पित क्षेत्र (पोर्टलेट) मिलता है; अक्सर, उपयोगकर्ता जो प्रदर्शित करने के लिए कॉन्फ़िगर कर सकते हैं। पोर्टल के वेरिएंट में अधिकारियों और प्रबंधकों के लिए

मैशअप (A Web application that combines functionality or data from multiple sources into a single, integrated service, application, or medium.) और इंटरनेट "डैशबोर्ड" शामिल हैं। सामग्री को "समान तरीके से" प्रदर्शित किया जाता है, यह संबंधित उपयोगकर्ता और इच्छित उद्देश्य और साथ ही सामग्री की विविधता पर निर्भर हो सकता है। बहुत बार डिजाइन जोर सामग्री की प्रस्तुति को कॉन्फ़िगर करने और अनुकूलित करने के लिए एक निश्चित "रूपक" पर होता है (उदाहरण के लिए, डैशबोर्ड या मानचित्र) और चुने हुए कार्यान्वयन ढांचे या कोड लाइब्रेरी। इसके अलावा, किसी संगठन में उपयोगकर्ता की भूमिका यह निर्धारित कर सकती है कि किस सामग्री को पोर्टल में जोड़ा जा सकता है या पोर्टल कॉन्फ़िगरेशन से हटाया जा सकता है।

एक पोर्टल खोज इंजन के एप्लिकेशन प्रोग्रामिंग इंटरफेस (एपीआई) का उपयोग कर सकता है ताकि उपयोगकर्ताओं को इंटरनेट सामग्री को खोजने के लिए अनुमति दे सके कि जो डोमेन खोजा जा सकता है उसे प्रतिबंधित करके एक्स्ट्रानेट सामग्री का विरोध किया जाए। इस सामान्य खोज इंजन सुविधा के अलावा, वेब पोर्टल ई-मेल, समाचार, स्टॉक कोट्स, डेटाबेस से जानकारी और यहां तक कि मनोरंजन सामग्री जैसी अन्य सेवाओं की पेशकश कर सकते हैं। पोर्टल उद्यमों और संगठनों को कई अनुप्रयोगों और डेटाबेस के लिए अभिगम नियंत्रण और प्रक्रियाओं के साथ एक सुसंगत "लुक एंड फील" प्रदान करने का एक तरीका प्रदान करते हैं, जो अन्यथा विभिन्न यूआरएल पर अलग-अलग वेब इकाइयां होती। उपलब्ध सुविधाएं प्रतिबंधित या अधिकृत उपयोगकर्ता (कर्मचारी, सदस्य) या अनाम वेबसाइट विज़िटर द्वारा उपयोग की जा सकती हैं।

वेब पोर्टल को कभी-कभी क्षैतिज या ऊर्ध्वाधर के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। एक क्षैतिज पोर्टल का उपयोग एक ही आर्थिक क्षेत्र में कई कंपनियों या एक ही प्रकार के निर्माताओं या वितरकों के लिए एक मंच के रूप में किया जाता है। [१] एक ऊर्ध्वाधर पोर्टल (जिसे "वोर्टल" के रूप में भी जाना जाता है) एक विशिष्ट बाजार या उद्योग के आला, विषय, या रुचि के लिए एक विशेष प्रवेश बिंदु है। [२] कुछ ऊर्ध्वाधर पोर्टल्स को "ऊर्ध्वाधर सूचना पोर्टल्स" (VIP) के रूप में जाना जाता है। VIP समाचार, संपादकीय सामग्री, डिजिटल प्रकाशन और ई-कॉमर्स क्षमताएं प्रदान करते हैं। पारंपरिक ऊर्ध्वाधर पोर्टल्स के विपरीत, VIP सोशल नेटवर्किंग, वीडियो पोस्टिंग और ब्लॉगिंग सहित डायनामिक मल्टीमीडिया एप्लिकेशन भी प्रदान करते हैं।

### व्यक्तिगत पोर्टल

एक व्यक्तिगत पोर्टल वर्ल्ड वाइड वेब या जावास्क्रिप्ट सहित एक स्थानीय HTML होम पेज पर एक वेब साइट पर एक वेब पेज है और शायद एक संशोधित वेब ब्राउज़र में चल रहा है। एक व्यक्तिगत पोर्टल आम तौर पर अपने आगंतुकों या अपने स्थानीय उपयोगकर्ता को व्यक्तिगत क्षमता प्रदान करता है, अन्य सामग्री के लिए मार्ग प्रदान करता है। इसे विभिन्न स्रोतों से कई सेवाएं प्रदान करने के लिए वितरित अनुप्रयोगों, विभिन्न नंबरों और प्रकार के मिडलवेयर और हार्डवेयर का उपयोग करने के लिए डिज़ाइन किया जा सकता है और यह एक गैर-मानक स्थानीय वेब सर्वर पर चल सकता है। इसके अलावा, व्यावसायिक स्थानों को साझा करने और कार्यस्थलों में सहयोग के लिए डिज़ाइन किया जा सकता है। पोर्टलों की एक और व्यवसाय-संचालित आवश्यकता यह है कि सामग्री को कई प्लेटफार्मों जैसे व्यक्तिगत कंप्यूटर, लैपटॉप, टैबलेट कंप्यूटर, व्यक्तिगत डिजिटल सहायक (पीडीए), सेल फोन और स्मार्टफोन पर प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

सूचना, समाचार और अपडेट सामग्री के उदाहरण हैं जिन्हें इस तरह के पोर्टल के माध्यम से वितरित किया जा सकता है। व्यक्तिगत पोर्टल किसी भी विशिष्ट विषय से संबंधित हो सकते हैं जैसे कि किसी सामाजिक

नेटवर्क पर दोस्तों को जानकारी प्रदान करना या बाहरी सामग्री के लिंक प्रदान करना जो आपकी सेवाओं की पहुंच से परे दूसरों की मदद कर सकते हैं। पोर्टल केवल लिंक प्रदान करने तक सीमित नहीं हैं। व्यापार इंटरनेट उपयोगकर्ता के बाहर, बहुत अक्सर सरल पोर्टल्स को अमीर मैशअप (एक वेब एप्लिकेशन जो एकल, एकीकृत सेवा, एप्लिकेशन या माध्यम में कई स्रोतों से कार्यक्षमता या डेटा को जोड़ती है।) डिजाइनों के साथ बदल दिया जाता है। उद्यमों के भीतर, शुरुआती पोर्टल्स को अक्सर अधिक शक्तिशाली "डैशबोर्ड" डिजाइनों द्वारा प्रतिस्थापित किया जाता था। कुछ ने नए प्रोटोकॉल पर भी भरोसा किया है जैसे कि आरएसएस एकीकरण के कुछ संस्करण और कुछ वेब कटाई में शामिल हो भी सकते हैं या नहीं भी।

### सरकार

1990 के दशक में डॉट-कॉम बूम के अंत में, कई सरकारें पहले ही अपने नागरिकों के लिए सरकारी वेब पोर्टल साइट बनाने के लिए प्रतिबद्ध थीं। इनमें सरकारों के साथ-साथ विशिष्ट शाखाओं (जैसे, एक विशेष सरकारी मंत्रालय, विभाग या एजेंसी), या विशिष्ट उप-श्रोताओं (जैसे, वरिष्ठ नागरिक, माता-पिता, उत्तर-माध्यमिक छात्र, आदि) के लिए विकसित प्राथमिक पोर्टल शामिल थे। उल्लेखनीय सरकारी वेब पोर्टल में शामिल हैं:

- ऑस्ट्रेलिया के लिए my.gov.au।
- संयुक्त राज्य अमेरिका में विकलांग नागरिकों के लिए विकलांगता।
- Europa (वेब पोर्टल) प्रेस कॉन्फ्रेंस से प्रेस विज्ञप्ति और दृश्य-श्रव्य सामग्री के अलावा सभी यूरोपीय संघ एजेंसियों और संस्थानों के लिए लिंक करता है।
- संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए GobiernoUSA.gov (स्पेनिश में)।
- यूनाइटेड किंगडम में व्यवसायों के लिए नागरिकों और businesslink.gov.uk के लिए gov.uk।
- हेल्थ-ईयू पोर्टल पूरे यूरोप से सभी प्रासंगिक स्वास्थ्य विषयों को इकट्ठा करता है।
- india.gov.in भारत के लिए।
- संयुक्त राज्य सेवा के सदस्यों, दिग्गजों और उनके परिवारों के लिए संसाधनों के लिए राष्ट्रीय संसाधन निर्देशिका लिंक।
- संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए USA.gov (अंग्रेजी में)।

### सांस्कृतिक

सांस्कृतिक पोर्टलों ने दीर्घाओं, पुस्तकालयों (देखें: पुस्तकालय पोर्टल), अभिलेखागार और संग्रहालयों के सांस्कृतिक संग्रह को डिजिटल रूप दिया। इस प्रकार का पोर्टल अदृश्य वेब सांस्कृतिक सामग्री तक पहुंच का एक बिंदु प्रदान करता है जिसे मानक खोज इंजन द्वारा अनुक्रमित नहीं किया जा सकता है। डिजिटल संग्रह में पुस्तकों, कलाकृतियों, फोटोग्राफी, फोटोग्राफी, पत्रिकाओं, अखबारों, नक्शों, डायरियों और पत्रों और संगीत, साउंड रिकॉर्डिंग्स, फ़िल्मों, और संग्रहीत वेबसाइटों की डिजिटल फ़ाइल्स के साथ-साथ वर्णनात्मक मेटाडेटा (डेटा का एक सेट जो अन्य डेटा के बारे में वर्णन और जानकारी देता है।) में प्रत्येक प्रकार की सांस्कृतिक से जुड़ी स्कैन या डिजिटल तस्वीरें शामिल हो सकती हैं काम (जैसे, मेटाडेटा लेखक, प्रकाशक, आदि के बारे में जानकारी प्रदान करता है)। ये पोर्टल अक्सर संस्थानों के एक विशिष्ट राष्ट्रीय या क्षेत्रीय समूहों के आसपास आधारित होते हैं। उल्लेखनीय सांस्कृतिक पोर्टल्स में शामिल हैं:

- ❖ अमेरिका की डिजिटल पब्लिक लाइब्रेरी (विकास में)
- ❖ डिजिटलएनजेड - न्यूजीलैंड के राष्ट्रीय पुस्तकालय के नेतृत्व में एक सांस्कृतिक पोर्टल, न्यूजीलैंड डिजिटल सामग्री पर केंद्रित है।
- ❖ यूरोपा - नीदरलैंड के राष्ट्रीय पुस्तकालय में स्थित यूरोपीय संघ के लिए एक सांस्कृतिक पोर्टल और यूरोपा फाउंडेशन द्वारा इसकी देखरेख की जाती है।
- ❖ TUT.by - एक वाणिज्यिक सांस्कृतिक पोर्टल बेलारूसी डिजिटल सामग्री पर केंद्रित है।

**कॉर्पोरेट****मुख्य लेख: इंटरनेट पोर्टल**

1990 के दशक के दौरान कॉर्पोरेट इंटरनेट आम हो गए। जैसे-जैसे इंटरनेट आकार और जटिलता में बढ़ता गया, संगठन वेबमास्टर्स को बढ़ती सामग्री और उपयोगकर्ता प्रबंधन चुनौतियों का सामना करना पड़ा। कंपनी की जानकारी का एक समेकित दृश्य अपर्याप्त माना गया था; उपयोगकर्ता वैयक्तिकरण और अनुकूलन चाहते थे। वेबमास्टर्स, यदि पर्याप्त कुशल हैं, तो कुछ क्षमताओं की पेशकश करने में सक्षम थे, लेकिन अधिकांश भाग के लिए उपयोगकर्ताओं को इंटरनेट का उपयोग करने से दूर रखा गया। कई कंपनियों ने वेबमास्टर्स को अपने डेटा, एप्लिकेशन और सूचनाओं को अधिक आसानी से प्रबंधित करने में मदद करने के लिए, और अलग-अलग उपयोगकर्ताओं को अलग-अलग विचारों को प्रदान करने के लिए उपकरण पेश करना शुरू किया। पोर्टल समाधान में वर्कफ़्लो प्रबंधन, कार्य समूहों या शाखाओं के बीच सहयोग और नीति-प्रबंधित सामग्री प्रकाशन भी शामिल हो सकते हैं। अधिकांश सुरक्षित प्रमाणीकरण या एकल साइन-ऑन का उपयोग करके विशिष्ट कॉर्पोरेट जानकारी के लिए आंतरिक और बाहरी उपयोग की अनुमति दे सकते हैं।

JSR168 मानक 2001 के आसपास उभरे। जावा स्पेसिफिकेशन रिक्वेस्ट (JSR) 168 मानक विभिन्न पोर्टल प्लेटफार्मों पर पोर्टलेट्स की इंटरऑपरेबिलिटी की अनुमति देते हैं। ये मानक पोर्टल डेवलपर्स, प्रशासकों और उपभोक्ताओं को विभिन्न प्रकार के विक्रेता समाधानों में मानकों पर आधारित पोर्टल और पोर्टलेट को एकीकृत करने की अनुमति देते हैं। सामग्री एकीकरण की अवधारणा अभी भी गति प्राप्त कर रही है और पोर्टल समाधान संभवतः अगले कुछ वर्षों में महत्वपूर्ण रूप से विकसित होता रहेगा। गार्टनर ग्रुप ने एक ही तंत्र के माध्यम से विभिन्न प्रकार की सूचना, उपकरण, एप्लिकेशन और एक्सेस पॉइंट देने के लिए बिजनेस मैशअप कॉन्सेप्ट पर विस्तार करने के लिए 8 पोर्टल्स की पीढ़ी की भविष्यवाणी की है।

उपयोगकर्ता-जनित सामग्री (ब्लॉग पोस्ट, टिप्पणियां, फोटो) में वृद्धि के साथ, डेटा फाइलो को अलग करना, और फ़ाइल स्वरूपों, सूचना आर्किटेक्ट और करदाताओं को उपयोगकर्ताओं को डेटा (सामग्री) को टैग (वर्गीकृत) करने की क्षमता प्रदान करने की आवश्यकता होगी। उदाहरण के लिए, यदि कोई उपाध्यक्ष ब्लॉग पोस्ट बनाता है, तो इस पोस्ट को उसके नाम, शीर्षक और पोस्ट के विषय के साथ टैग किया जा सकता है। टैगिंग से इंटरनेट के उपयोगकर्ताओं के लिए उस सामग्री को खोजना आसान हो जाता है जिसमें वे रुचि रखते हैं। यह अंततः एक लहर प्रभाव पैदा करेगा जहां उपयोगकर्ता तदर्थ नेविगेशन और सूचना प्रवाह भी उत्पन्न करेंगे। कॉर्पोरेट पोर्टल ग्राहकों और कर्मचारियों को स्वयं-सेवा के अवसर भी प्रदान करते हैं।

**खोज(Search)**

खोज पोर्टल कई खोज इंजनों को एक पृष्ठ में एकत्रित करते हैं। आप किसी उत्पाद में खोज किए गए पोर्टल्स को खोज सकते हैं, उदाहरण के लिए प्रॉपर्टी सर्च पोर्टल्स। लाइब्रेरी सर्च पोर्टल्स को डिस्कवरी इंटरफेस के रूप में भी जाना जाता है।

**संपत्ति खोज(Property Search)**

संपत्ति खोज पोर्टल अचल संपत्ति एजेंटों द्वारा बिक्री के लिए संपत्तियों के बारे में समग्र डेटा को दर्शाते हैं। यूके में उल्लेखनीय संपत्ति खोज पोर्टलों में नेस्टोरिया, नूरो, ओनमार्केट, राइटमोव और जूपला शामिल हैं।

**निविदा (Tender)**

सामान और सेवाएं प्रदान करने के लिए बोली लगाने के लिए एक निविदा पोर्टल सरकारी आपूर्तिकर्ताओं के लिए एक प्रवेश द्वार है। टेंडर पोर्टल्स उपयोगकर्ताओं को पूर्ण ऑनलाइन टेंडरिंग प्रक्रिया प्रदान करने

के लिए डेटा को खोजने, संशोधित करने, प्रस्तुत करने, समीक्षा करने और संग्रह करने की अनुमति देते हैं। ऑनलाइन टेंडरिंग का उपयोग करते हुए, बोलीदाता निम्नलिखित में से कोई भी कर सकते हैं:

- ❖ निविदाओं की सूचना प्राप्त करें।
- ❖ ऑनलाइन निविदा दस्तावेज प्राप्त करें।
- ❖ फॉर्म ऑनलाइन भरें।
- ❖ प्रस्ताव और दस्तावेज जमा करें।
- ❖ बोली ऑनलाइन जमा करें।

### मेजबानी(Hosted)

होस्ट किए गए वेब पोर्टल्स ने लोकप्रियता हासिल की और कई कंपनियों ने उन्हें होस्ट की गई सेवा के रूप में पेश करना शुरू किया। होस्ट किए गए पोर्टल बाजार ने मूल रूप से पोर्टलों की संरचना को बदल दिया। कई मायनों में, उन्होंने विरासत अनुप्रयोगों को एकीकृत करने या वितरित डेटाबेस से सहसंबद्ध डेटा प्रस्तुत करने के उदात्त लक्ष्यों के बजाय सूचना प्रकाशित करने के लिए एक उपकरण के रूप में सेवा की। हाइपरऑफिस डॉट कॉम या अब डिफंक्ट इंटरनेटपार्टल डॉट कॉम जैसी शुरुआती मेज़बान पोर्टल कंपनियां कॉर्पोरेट डेटा के वितरण के अलावा सहयोग और शेड्यूलिंग पर केंद्रित हैं। होस्ट किए गए वेब पोर्टल्स की लोकप्रियता में वृद्धि के रूप में उनके फीचर सेट होस्ट डेटाबेस, दस्तावेज़ प्रबंधन, ईमेल, चर्चा मंचों और अधिक शामिल करने के लिए बढ़े हैं। होस्ट किए गए पोर्टल अपने उपयोगकर्ताओं को व्यक्तिगत अनुभव प्रदान करने के लिए अपने मॉड्यूल से उत्पन्न सामग्री को स्वचालित रूप से वैयक्तिकृत करते हैं। इस संबंध में वे पहले के कॉर्पोरेट वेब पोर्टल्स के मूल लक्ष्यों के लिए सही बने हुए हैं।

**क्लाउड पोर्टल्स** नामक इंटरनेट पोर्टल्स की उभरती नई कक्षाएं एपीआई (एप्लिकेशन प्रोग्रामिंग इंटरफेस) की शक्ति को प्रदर्शित कर रही हैं ताकि अधिक तरल उपयोगकर्ता का निर्माण करके मशीन से मशीन इंटरएक्शन को समायोजित करने के लिए SOA (सेवा-उन्मुख वास्तुकला, वेब सेवाओं और कस्टम डेटा एक्सचेंज) { SOA, or service-oriented architecture, defines a way to make software components reusable via service interfaces. These interfaces utilize common communication standards in such a way that they can be rapidly incorporated into new applications without having to perform deep integration each time. } का लाभ उठाया जा सके। किसी दिए गए "सत्र" के दौरान कई डोमेन वाले उपयोगकर्ताओं को जोड़ने के लिए अनुभव। Nubifer Cloud Portal जैसे क्लाउड पोर्टल्स दिखाते हैं कि क्लाउड पोर्टल्स के निर्माण के लिए एंटरप्राइज़ मैशप और वेब सेवा एकीकरण दृष्टिकोणों का उपयोग करना क्या संभव है।

### डोमेन-विशिष्ट (Domain Specific)

कई पोर्टल्स आए हैं जो एक विशेष डोमेन- विशिष्ट के लिए हैं, जो संबंधित कंपनियों और सेवाओं तक पहुंच प्रदान करते हैं; इस प्रवृत्ति का एक प्रमुख उदाहरण संपत्ति पोर्टलों में वृद्धि होगी जो संपत्ति एजेंटों, निष्कासन फर्म, और सॉलिसिटर जैसी सेवाओं तक पहुंच प्रदान करता है जो संदेश प्रदान करते हैं। उसी लाइनों के साथ, उद्योग-विशिष्ट समाचार और सूचना पोर्टल दिखाई दिए हैं, जैसे नैदानिक परीक्षण-विशिष्ट पोर्टल।

### वेबसाइट से आप क्या समझते हैं ? यह कितने प्रकार की होती है। वर्णन करें ।

बहुत सारे **Webpages** के Collections को Website कहते हैं। यह भी कहा सकते हैं एक website या site एक ऐसा Location है जहाँ बहुत सारे webpages को रखा जाता है। हर webpage में कुछ ना कुछ Information होती है। जैसे अभी आप एक website के एक पेज पे हैं जिस पेज पे "website क्या है" इसकी जानकारी है। और यह webpage हमारी Website जिसका नाम है **hindime.net** (<https://hindime.net>) का ही एक हिस्सा है।

Website को Open करने के लिए हम एक application या software का इस्तमाल करते हैं। जिसको हम कहते हैं web Browser. EX- Google chrome, Operamini, UC Browser. अगर अभी भी आपको समझ में नहीं आया तो मेरा ये ex को पढ़ें-आपके सारे संदेह दूर कर देगा, जैसे की मैंने कहा <https://hindime.net> यह website है और इस site के Home page पे जब आप होंगे आपको बहुत सारे post देखने को मिलेंगे जो कुछ और नहीं वो अलग अलग webpage के address/link हैं. ऐसे webpages हमारे साईट पे करीबन 300-400 होंगे. हर पेज में कुछ जानकारी होती है हर रोज आप कुछ ना कुछ जानकारी हासिल करने के लिए Internet का इस्तमाल करते हैं और कई तरह तरह के Blogs या Website को Open करते हैं.

ये सभी वेबसाइट के अलग अलग प्रकार हैं. किंतु इन सभी प्रकार को अगर देखा जाए तब इन्हें हम दो हिस्सों में बाँट सकते हैं.

1. Static website

2. Dynamic website

तो चलिए लिए अब वेबसाइट के प्रकार के बारे में विस्तार से जानते हैं.

### **Static Web Page**

Static Web Page इसके नाम से ही आप समझ गए होंगे की ये एसा page है। जहाँ सारे पेज कभी भी नहीं बदलते है page fixed रहते हैं. जिनको कोई भी बदल नहीं सकता है. ये static web pages हर नए और पुराने user के लिए एक जैसे ही होते हैं. आप जब भी website open करते है देखे होंगे जिन pages के content कभी नहीं बदलते है. वो पेज हर किसी के लिए एक जैसे दिखाई देते हैं. लेकिन कुछ site है, जैसे Facebook.com जिनके page के content हर वक्त बदलते रहते हैं और अलग अलग यूजर के लिए अलग webpage होते हैं.

यहाँ कुछ static web page के कुछ उदहारण है. EX- about us page और Contact us page जिनके content कभी भी नहीं बदलते हैं. उमीद है अब आपको आसानी हो गई होगी static page को समझने में. अब जानते हैं dynamic webpage.

Static website एक ऐसी वेबसाइट है जिसके web pages को store किया जाता है एक ऐसी फ़ॉर्मेट में जिसे की भेजा जाता है एक client web browser को. आसान शब्दों में कहें तब Static website बहुत ही basic type की website होती है जिन्हें की आसानी से create किया जा सकता है।

इसके लिए आपको किसी प्रकार की कोई web programming और database design का ज्ञान होना ज़रूरी नहीं होती, बल्कि इसके बिना भी आप आसानी से एक static website बना सकते हैं. इसकी web pages को code किया गया होता है HTML में.

इसके codes fixed होती हैं प्रत्येक page के लिए जिससे की जो भी जानकारी महजूद होती है एक पेज में वो बदलती नहीं है और इसलिए ये ठीक एक printed page के तरह ही दिखते हैं.

### **Dynamic Web Sites**

सायद आप static web page को समझ गए हैं तो इसे भी बड़ी आसानी समझ जाओगे. क्योंकि Dynamic web page content हमेसा बदलते रहते हैं. यहाँ पे हर user मतलब आपके लिए जो पेज खुले हागा वो मेरे लिए कुछ और होगा. जैसे fb में जब मै login करता हूँ तो मेरा पेज आपके fb page से काफी अलग होगा.

Dynamic का मतलब है, जो पेज बार बार बदलता रहता है। वैसे ही और एक example लेलो shopping sites के हर web pages भी हर user के लिए बदलते रहते हैं. क्योंकि आप कुछ search करते होंगे

लेकिन मैं कुछ दूसरा page shopping करने के लिए पेज OPEN कर सकता हूँ. ये दोनों dynamic webpage के उदाहरण हैं. क्या आप अपनी वेबसाइट अपने पसंद की Design की बनाना चाहते हो तो आपको php सिखाना होगा चलिए अब इसके बारे में ही बात करेंगे.

Dynamic website एक ऐसी वेबसाइट होती है जो की खुद को बदलती है या customize करती है बहुत बार और वो भी automatically. आसान शब्दों में बताया जाए तब Dynamic website एक ऐसी collection होती है dynamic web pages की जिसके content dynamically बदलते रहते हैं.

ये वेबसाइट अपने कंटेंट access करती हैं एक database या Content Management System (CMS) से. ऐसे में जब आप किसी भी प्रकार का बदलाव करते हैं database के कंटेंट में, तब वेबसाइट के content भी अपने आप भी बदल जाते हैं या अपडेट हो जाते हैं।

Dynamic website में client-side scripting या server-side scripting, या दोनों का इस्तमाल होता है dynamic content generate करने के लिए.

### Home Page

Website के पहले Page को Homepage कहते हैं। या जब कोई Website को Visit करते हैं तब जो Page खुलता है उसे ही Home Page कहते हैं. ex: <https://hindime.net> इसमें click करने के बाद जो page खुलेगा उसे इस Site का Home Page कहते हैं. Website के root Directory में ये Page रहता है. इस पेज में ये सारे Files भी रहते हैं index.html, index.htm, index.shtml, index.php, default.html और home.html

### Search Engine

Search Engine एक प्रोग्राम है. या ये बोल सकते हो ये एक ऐसा web प्रोग्राम है जो Internet के असीमित database में से User जो Information या सवाल को Internet में search करता है. उससे संबंधित जो Information Search Engine (Google, Yahoo, Bing) को मिलती है उसको Search Result page में दिखता है. जैसे Google करता है. हर query (सवाल) को world wide web में सर्च किया जाता है.

### Web Address/URL

URL का full form होता है Uniform Resource Locator. ये एक formatted text string है जिसे की Web Browser, email clients या किसी अन्य Software में इस्तमाल किया जाता है किसी Network Resource को ढूँढने के लिए. Network Resource कोई भी फाइल्स हो सकती हैं जैसे की Web Pages, Text Document, Graphics या Programs.

### Domain

एक domain name ही आपके Website का नाम बताता है. इसके जरिये ही लोग Website तक लोग पहुँच पाते हैं, यह website की पहचान है. Letter और Number से ही Website का नाम लिखा जा सकता है. Domain name का इस्तमाल एक या एक से अधिक IP Address की पहचान करने के लिए किया जाता है. जैसे Microsoft.com यह एक domain का नाम है सायद आप सभी इसे वाकफ होंगे. एक निर्दिष्ट Webpage की पहचान करने के लिए Domain name को URL में लिखा जाता है.

<https://hindime.net/about> इस URL में अगर आप ध्यान से देखेंगे तो hindime.net Domain Name का नाम है.

आप देखे ही होंगे हर Blog/Website के अंत में एक नाम जुदा रहता है. जैसे .net, .com, .in, .org, ये सभी Top Level Domain को दर्शाते हैं. चलिए अब कुछ उदाहरण समझते हैं.

**.Gov – Government agencies**

**.Edu – Educational institutions**

**.Org – Organizations (nonprofit)**

**.Mil – Military**

**.Com – commercial business**

**.Net – Network organizations**

**.In – India**

**.Ca – Canada**

**.Th – Thailand**

**Webpage, Website, Web Server और Search Engine में क्या अंतर होता है ?**

प्राय लोगों को इन चारों Technical terms के विषय में ज्यादा पता नहीं होता है क्योंकि ये बहुत ही confusing होते हैं। इसलिए चलिए इनके विषय में जानते हैं और उनके बीच स्थित अंतर को भी जानते हैं।

**Web page**

ये documents होते हैं जिन्हें की एक web browser में display किया जा सकता है। Web Browsers जैसे की Firefox, Google Chrome, Opera, Microsoft Internet Explorer, या Apple's Safari. इन documents को "pages" भी कहा जाता है।

**Website**

ये एक collection होता है web pages का जिन्हें की एक साथ group किया जाता है और usually ये connected होते हैं एक दुसरे के साथ. अक्सर एक a "web site" को simply एक "site" भी कहा जाता है।

**Web Server**

यह एक computer होता है जो की एक website को host करता है Internet में।

**Search Engine**

यह एक ऐसा website होता है जो की users को मदद करता है दुसरे web pages को ढूंढने के लिए, उदाहरण के लिए Google, Bing, या Yahoo.

ऊपर बताये गए चीजों को समझने के लिए चलिए एक simple analogy का इस्तमाल करते हैं — एक public library. हम एक

**Library में जो कुछ भी करते हैं चलिए उसे समझते हैं :**

1. सबसे पहले search index को खोजें और फिर उस book का title खोजें जिसे आप चाहते हैं।
2. Book का catalog number का एक note करें।
3. फिर उस particular section को जाएँ जिसमें की आपको वह book होगी, फिर सही catalog number को खोजें, और इससे आप अपनी book ले सकते हैं।

**चलिए अब इस Library को एक Web Server के साथ compare करते हैं :**

- एक library एक web server के जैसे होता है. इसमें बहुत से sections होते हैं, जो की similar होते हैं एक web server के समान जिसमें multiple websites को host (एक नेटवर्क होस्ट एक कंप्यूटर या अन्य डिवाइस है जो कंप्यूटर नेटवर्क से जुड़ा है। एक होस्ट एक सर्वर के रूप में काम कर सकता है जो सूचना संसाधनों, सेवाओं और उपयोगकर्ताओं या नेटवर्क पर अन्य होस्ट को एप्लिकेशन प्रदान करता है।) किया जाता है।

- Library की अलग अलग sections होते हैं जैसे की science, math, history, इत्यादि. ये sections websites के समान होते हैं. प्रत्येक section एक unique website के तरह होते हैं (जैसे दो sections में समान books नहीं होते हैं)।

- Sections में मौजूद books Webpages के तरह होते हैं। एक website के बहुत सारे webpages होते हैं, जैसे की Science section (जो की एक website है) उसमें किताबें अलग अलग विषय के हो सकते हैं जैसे heat, sound, thermodynamics, statics, इत्यादि। (इन्हें आप webpages कह सकते हैं)।
- इसमें वो search index एक search engine के समान होता है। प्रत्येक book की एक unique location होती है library में (जैसे दो books को एक स्थान या एक जगह में नहीं रह सकते हैं) और जिन्हें एक catalog number से specify किया जाता है।
- वहीं webpages के भी unique addresses होते हैं। इन unique addresses का इस्तमाल होता है एक webpage को एक web server से retrieve करने के लिए बस address को web browser के address bar में type करना होता है।

## घटकों के आधार पर वेबसाइट का वर्गीकरण

### Websites की श्रेणियाँ (Websites Categories)

आज इंटरनेट पर अरबों वेबसाइट हैं जिन्हें निम्न प्रकार की श्रेणियों में जोड़ा जा सकता है।

वेब साइट के विषय के अनुसार जानकारी दर्शाई जाती हैं। कुछ वेब साइट सूचनात्मक होती हैं, तथा कुछ वेब साइट मनोरंजन के लिए होती हैं। वेबसाइट के घटकों के आधार पर या साइट के कार्य के आधार पर वेब साइट को निम्न श्रेणियों में बांट सकते हैं।

- **Personal Websites**

इस प्रकार की वेब साइट साधारणतः छोटी होती हैं एवं कम प्रयोग में आती हैं। इस प्रकार की साइट में : कोई व्यक्ति अपने एवं परिवार की जानकारी, फोटो, घटनाएं डालता है इस प्रकार के साइट को देखने वालों की संख्या बहुत कम होती है।

- **Photo Sharing Websites**

इस प्रकार की वेब साइट में प्रयोगकर्ता अपने फोटो को साइट पर अपलोड कर सकते हैं, उन्हें साझा सकते हैं, संग्रहित कर सकते हैं। आप इस वेब साइट पर इच्छित फोटो देख सकते हैं, किसी फोटो पर अपनी राय दे सकते हैं। इस प्रकार के साइट में फोटो को उनके विषय, रचना आदि पर वर्गीकृत कर दर्शाते हैं।

- **Community Building Websites**

इस प्रकार की वेब साइट एक समान विचारधारा के लोगों को जोड़ने के लिए बनाई जाती हैं। इस प्रकार की साइट में उस में जुड़े लोग अपने विचार साझा करते हैं। Facebook इस प्रकार की साइट में आती है। इस प्रकार की साइट इच्छित व्यक्ति को उससे जुड़ कर अपने विचारों को बहुत से लोगों तक पहुँचाने की सुविधा देती है।

- **Mobile Device Websites:-** कुछ वेब साइट पोर्टेबल मोबाइल डिवाइस जैसे iPad, mobile phone, आदि के लिए बनाई जाती हैं। इस प्रकार की साइट पोर्टेबल डिवाइस पर आसानी से खुल जाती हैं, एवं इन डिवाइस के माध्यम से कार्य किया जा सकता है।

- **Blogs**

इस प्रकार की वेब साइट में कोई भी व्यक्ति अपनी जानकारी, विचार, राय डाल सकता है। यह एक व्यक्तिगत डायरी के समान होती है, जिसमें व्यक्ति विभिन्न घटनाओं पर आवश्यकता के अनुसार अपनी राय डालता है। इसमें व्यक्त करने वाले विचार सामान्य भी हो सकते एवं विशेष भी हो सकते हैं। वर्तमान में बहुत से मशहूर व्यक्ति विचार इस साइट के माध्यम से लोगों तक पहुँचाते हैं।

- **Informational Websites**

किसी वांछित विषयो की जानकारी दर्शाने के लिए वेब साईट का उपयोग सबसे आम हैं। कुछ वेब साईट कि एक विषय पर जानकारी दर्शाती हैं, तथा कुछ वेब साईट मे विभिन्न विषयों की जानकारी दी जाती हैं, उदाहरण Wikipedia.com । कुछ वेब साईट जानकारी दर्शाने के लिए शुल्क भी लेती हैं।

- **Online Business Brochure/Catalog**

व्यापारिक संस्थाए वेब साईट का प्रयोग करती हैं। कंपनी जिस उत्पाद का व्यापार करती हैं, उनकी जानकारी आकर्षक तरीके से दर्शाई जाती हैं। कुछ वेबसाईट विभिन्न कंपनियों के एक समान उत्पाद को दर्शाती हैं।

- **Search Engine Website:** - Search engine website एक ऐसी वेबसाइट है जो लोगों को इंटरनेट पर जानकारी खोजने में मदद करता है। जैसे - Google, Yahoo, Bing. वर्तमान में, सबसे लोकप्रिय Google है। अन्य search engine website में AOL, Ask.com, Baidu, Bing, और Yahoo शामिल हैं।

- **Social networking website**

Social networking website आपको दोस्तों, परिवार, मशहूर हस्तियों और संगठनों से जुड़ने में मदद करती हैं। यह आमतौर पर मुफ्त होती हैं। Facebook, Twitter, Instagram, Pinterest और LinkedIn सोशल नेटवर्किंग वेबसाइटों के उदाहरण हैं।

- **eCommerce Website**

eCommerce Website ऐसे website को कहते हैं जहाँ आप कोई भी सामान Online खरीद या बेच सकते हैं। पिछले कुछ सालों से ई-कॉमर्स वेबसाइट भारतीय लोगों की जरूरत बन गई है, तो आइए आपको बताते हैं कि भारत में टॉप ई-कॉमर्स वेबसाइट कौन-कौन सी हैं? Amazon.in, Flipkart.com, Jabong.com, Snapdeal.com, Myntra.com, Shopclues.com, Paytm mall.com, 1mg.com, firstcry.com, bookmyshow.com and indiamart.com

- **Forum Website**

Forum Website ऐसे website को कहते हैं जहाँ आप कोई भी सवाल पूछ सकते हैं और सवाल के जवाब भी दे सकते हैं। ये बहुत ही महत्वपूर्ण websites होते है, और साथ ही अगर आपको किसी टॉपिक में अच्छी जानकारी है तो लोगो के सवाल के जवाब देकर आप उनकी मदद कर सकते हो। जैसे- Quora, Yahoo! Groups, Google Forums, Ubuntu Forums, Reddit, Stack Overflow, Final Thoughts इत्यादि।

- Business Website
- Entertainment Website
- Portfolio Website
- Media Website
- Brochure Website
- Nonprofit Website
- Educational Website
- Personal Website

- Web Portal
- Classified Websites

### वेबसाइट से होने के फायदे (Benefits of having a website):-

- वेबसाइट को दुनिया की भी जगह से देखा जा सकता है और जानकारी प्राप्त की जा सकती है।
- अगर आपका website है तो printing material (Brochure, Flyer, Leaflet) की जरूरत ज्यादा नहीं होती उससे काम लगत में website बन जाता है।
- आजकल लगभग सभी जानकारी इंटरनेट पर उपलब्ध (Available) हैं, website से आपका या आपके काम के बारे में internet में जानकारी उपलब्ध रहता है, जिसे कोई भी आसानी देख सकता है।
- Website में किसी भी जानकारी को update आसानी से किया जा सकता है इसमें ज्यादा खर्चा भी नहीं होता printing material (Brochure, Flyer, Leaflet) की तुलना में।

### पहली website कब बनाई गई थी?

पहली वेबसाइट टिम बर्नर्स-ली (Tim Berners-Lee) द्वारा सर्न (CERN – Conseil Europeen pour la Recherche Nuclaire) में बनाया गया था और 6 अगस्त, 1991 को लॉन्च किया गया था।

### Website कैसे खोले? (How to open a website?)

Website को देखने के लिए एक ब्राउज़र (Internet Explorer, Edge, Safari, Firefox, or Chrome) की आवश्यकता होती है। आप ब्राउज़र (browser) के Address bar में website का URL type करके website खोल सकते हैं। उदाहरण के लिए, ब्राउज़र (browser) के Address bar में "www.truevidya.com" टाइप करके True Vidya का website खोल सकते हैं।

### हिन्दी साहित्य की वेब पत्रिकाएँ एक परिचय :

इंटरनेट, कम्प्यूटर और स्मार्टफोन के सहयोग से आज हम लोगों के मध्य एक तीसरी दुनिया है जिसे सभी 'वर्चुअल' (आभासी) दुनिया के नाम से पुकारते हैं। इस दुनिया का निर्माण वैज्ञानिकों, शोधार्थियों तथा कर्मचारियों के लाखों करोड़ों प्रयोग के द्वारा असंख्य कलपुर्जों के उपयोग से- बना है। इस दुनिया में जाने के लिए ना तो हमें पासपोर्ट की आवश्यकता है और ना ही वीजा की। कम्प्यूटर, स्मार्टफोन और इंटरनेट के पारस्परिक सहयोग से आप इसमें दाखिल हो सकते हैं और जब तक मन करे तब तक रुक सकते हैं। वर्चुअल दुनिया दिनोंदिन अपने आधार को मजबूत कर रही है। हकीकत की दुनिया के ना जाने कितने काम इस दुनिया से हो रहे हैं शायद यही इसकी मजबूती और सफलता का कारण है। आज इसका उपयोग विश्व के समस्त देशों में हो रहा है। विश्व के लोगों को एक ऐसा पटल मिला जहाँ पर खड़े होकर वह अपनी बात पूरी दुनिया तक पहुँचा सकते हैं।

इंटरनेट की तमाम खूबियों में से एक खूबी है 'संचार'। इसी खूबी के कारण लोग एक दूसरे से संवाद स्थापित करने लगे किन्तु विश्व भर में फैले भारतीयों को वहाँ भी समस्या आयी जो अपनी ही बात को अपने लोगों तक पहुँचा पाने में असमर्थ थे। इसका प्रमुख कारण कम्प्यूटर और इंटरनेट का जन्म अंग्रेजियत की गोद में होने के कारण हुआ, सो उसकी मातृभाषा अंग्रेजी थी ऐसे में हिन्दी में संवाद और संचार दूर की कौड़ी थी। हिन्दी के विकास हेतु नए नए निर्माण होने लगे। हिन्दी में कई प्रकार के नए नए टूल्स और फॉण्ट बनाये गए किन्तु फॉण्टों की विविधता के कारण हिन्दी का पूर्ण रूप से संचार नहीं हो पा रहा था। कुछ हिन्दी प्रेमियों ने हिन्दी को पर्दर्शित और इंटरनेट की मुख्यधारा में लाने के लिए उन्होंने ने एक नई तकनीक अपनाई ताकि उनका लिखा हुआ सभी हिन्दी नेटीजनों तक पहुँचे ऐसे में उन्होंने ने विभिन्न उपकरणों के

सहयोग से हिंदी लिखते फिर उसको (टूल्स) JPG (फोटो) फॉर्मेट बनाते और उसके बाद उसे इन्टरनेट पर लगाते जबकि दूसरी तरफ अंग्रेजी बिना अप्प के प्रदर्शित हो जाती थी।

इन्टरनेट पर देवनागरी लिपि के विकास की भी अपनी कहानी है। हिन्दी प्रेमियों की इसको लेकर अपनी तड़प और विकास को लेकर अपनी गाथाएँ हैं। 90 दशक के मध्य में जब भारत में इन्टरनेट जनता के लिए खोला गया तब तक विश्व के विकसित देशों में इसने अपना स्थान बना लिया था किन्तु हिन्दी का कोई अता-पता नहीं था अगर था तो वह JPG(फोटो)फॉर्मेट में या रोमन लिपि में या उन फाण्टों में जो सभी के पास उपलब्ध नहीं थे। इसी दौर में भारत से पहला अंग्रेजी समाचार पत्र 'द हिन्दू' इन्टरनेट पर आया, इसके आते ही भारत के हिन्दी समाचार पत्र के चैनलों में इन्टरनेट पर आने की होड़ लग गई। समय के साथ दैनिक जागरण, दैनिक हिन्दुस्तान, अमर उजाला आदि ने अपना-अपना स्थान बना लिया किन्तु सभी के अपने-अपने फाण्ट होने के कारण किसी में एकरूपता नहीं थी। शायद इसी लिए हिन्दी को वह गति नहीं मिल सकी जो अंग्रेजी को मिली।

इन्टरनेट पर हिन्दी फाण्टों और टूल्सों का सीमित दायरा था इन सब के बाद भी दिसम्बर 1996-जनवरी 1997 में रोहित कुमार 'हैप्पी' ने न्यूजीलैण्ड से अपनी पत्रिका 'भारतदर्शन' को ऑनलाइन कर दिया। यह हिन्दी साहित्य की प्रथम वेब पत्रिका थी जो भारत से दूर न्यूजीलैण्ड से निकली थी। हरियाणा से सम्बन्ध रखने वाले रोहित कुमार 'हैप्पी' ने इन्टरनेट जगत में हिन्दी साहित्य की वेब पत्रिका के झण्डाबदार (फ्लैग-बेयरर) बने। इनके बाद भारत से 22 सितम्बर 1999 को 'वेबदुनिया' नामक वेब पोर्टल आता है। यह वेब पोर्टल हिन्दी सहित आठ अन्य भारतीय भाषा में निकला। इसके बाद शारजाह से पूर्णिमा वर्मन की 'अभिव्यक्ति' और 'अनुभूति' नामक वेब पत्रिका आयीं, जिनमें से एक 'गद्य' को और दूसरी 'पद्य' को समर्पित थी।

यह वही समय था जब हिन्दी अपने अस्तित्व को स्थापित कर रही थी दूसरी ओर लोग, संस्थाएँ तथा देश अपने-अपने माध्यम से फाण्टों की विभिन्न-ता के बावजूद देवनागरी में लिखने का प्रयास कर रहे थे। 2003 के इसी दौर में आलोक कुमार ने 'नौ दो ग्यारह' नाम से हिन्दी का पहला ब्लॉग बनाया। इस ब्लॉग के बनने से पहले अखबारों के पोर्टलों एवं वेब पत्रिकाओं ने हिन्दी में 'न्यू मीडिया' की उपस्थिति ने दस्तक दे दी। इसी न्यू मीडिया को ईपत्रकारिता-, साइबर पत्रकारिता, वेब पत्रकारिता आदि विभिन्न नामों से जाना जाने लगा। लगभग इसी समय 'यूनीकोड फाण्ट' आता है जो इन्टरनेट पर देवनागरी सहित विश्व की तमाम भाषाओं को एकरूपता प्रदान करता है।

यूनीकोड के आ जाने से हिन्दी वेब पत्रकारिता को एक नई दिशा मिली और इन्टरनेट जगत में हिन्दी का विस्तार होने लगा। आज इन्टरनेट पर हिन्दी के हजारों वेब पोर्टल्स एवं वेब साइट्स हैं। इन वेब पोर्टलों एवं वेब साइटों में शिक्षा, चिकित्सा, व्यवसाय, सोशल नेटवर्क, पत्रकारिता तथा राजव्यवस्था आदि की हैं। हमारा ध्येय उन पत्रिकाओं तक पहुँचने का है जो हिन्दी साहित्य को समर्पित है तथा दैनिक, साप्ताहिक, मासिक, अर्द्ध वार्षिक रूप से इन्टरनेट के माध्यम से प्रकाशित होती हैं। ऐसी पत्रिकाएं आज भारत सहित विश्व के कई देशों से निकल रही हैं। हमारी कोशिश रहेगी कि हम उन पत्रिकाओं तक पहुँचें जो हिन्दी के लिए अपनी उत्कृष्ट सेवा अपने पाठकों तक पहुँचा कर हिन्दी साहित्य का विस्तार कर रहे हैं।

### **भारत से प्रकाशित हिन्दी साहित्य की वेब पत्रिकाएँ**

**वेब दुनिया** <http://www.webdunia.com>

15 अगस्त 1995 का दिन भारत के लिए सूचना प्रौद्योगिकी के संदर्भ में किसी त्योहार से कम नहीं था क्योंकि इसी दिन भारत में इन्टरनेट जनता के लिए खोला गया था। इन्टरनेट आने के लगभग चार वर्ष बाद "22 सितम्बर 1999 को जन जन के लिए सूचना प्रौद्योगिकी के घोष के साथ विश्व के पहले-हिन्दी वेब पोर्टल के रूप में 'वेब दुनिया' का जन्म हुआ जिसमें भारत के हिन्दी मानस के लिए समाचार सहित विविध विषयों पर हिन्दी में स्तरीय सामग्री उपलब्ध कराने के अभियान की शुरुआत हुई।" यह वेब पोर्टल इस लिए भी

महत्वपूर्ण है कि जिस समय इन्टरनेट पर हिन्दी के क्षेत्र में पोर्टल की संभावनाएं न के बराबर थी उस समय वेब दुनिया ने भारतीय भाषाओं को वेब पर लाने की दिशा में मील का पत्थर साबित हुई। आज इस पोर्टल पर पैंतीस (35) से अधिक चैनल उपलब्ध है। जिसके द्वारा हिन्दी पाठकों की आवश्यकता की हर सामग्री प्रस्तुत की जाती है। यह पोर्टल सात भारतीय भाषाओं में काम करता है।

आज यह पोर्टल मूलतः समाचार के रूप में काम कर रहा है किन्तु जिस प्रकार समाचार के अंगों में व्यापार, चिकित्सा, ज्योतिष, मनोरंजन तथा खेल की खबरें होती हैं ठीक ऐसे ही इस पोर्टल पर हिन्दी साहित्य की उपस्थिति है।

**रचनाकार** <http://www.rachanakar.com>

इस पत्रिका के सम्पादक रविशंकर श्रीवास्तव 'रतलामी' हैं। यह पत्रिका आज हजारों लाखों लोगों द्वारा पढ़ी जा रही है। इस पत्रिका की बढ़ती लोकप्रियता के चलते इसने अपना मोबाइल अनुप्रयोग भी जारी कर दिया है। एक समय था जब यह ब्लॉग के रूप में निकलती थी किन्तु सम्पादक की अधिक मेहनत और कर्मठता ने इसे वेब पत्रिकाओं के शीर्ष पर पहुँचा दिया है। आज इस पत्रिका पर हिन्दी की विभिन्न विधाओं का विपुल साहित्य उपलब्ध है। जो इस प्रकार है कविता -(2534), गज़लें (451), लघुकथा (570) व्यंग्य (1702) बालकथा (302) आदि है। इस पत्रिका का प्रकाशन 2005 से हो रहा है। इस पत्रिका के प्रमुख भाग हैं – मुख्यपृष्ठ, कहानी, उपन्यास, लघुकथा, कविता, आलेख तथा व्यंग्य आदि हैं। आज यह पत्रिका हिन्दी की विभिन्न विधाओं में काम कर रही है। साइबर संसार में हिन्दी साहित्य की यह पत्रिका एक नया कीर्तिमान स्थापित करने की ओर बढ़ रही है।

**हिन्दी समय** <http://www.hindisamay.com>

यह पत्रिका महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय वर्धा द्वारा प्रकाशित होती है। इसके वर्तमान संपादक प्रो आनंद वर्धन शर्मा हैं। इस पत्रिका का "एकमात्र उद्देश्य दुनिया भर में फैले व्यापक हिन्दी पाठक समुदाय तक हिन्दी की श्रेष्ठ रचनाओं की पहुँच आसानी से संभव बनाना है।" इस वेब पत्रिका में विधाओं के सापेक्ष 27 स्तम्भ बनाए गए हैं। जिनमें से प्रमुख स्तम्भ – उपन्यास, कहानी, कविता, व्यंग्य, नाटक, निबन्ध, आलोचना, विमर्श, बाल साहित्य, संस्मरण, यात्रावृत्तांत-, सिनेमा, अनुवाद, विशेषांक आदि हैं। यह पत्रिका साहित्य की महत्वपूर्ण विधाओं को अपनी पत्रिका के द्वारा लोगों तक पहुँचाने में कारगर हो रही है। इस पत्रिका में रचनाकारों की संख्या लगभग 221 है। यह पत्रिका एक पंजीकृत पत्रिका है। इसका पंजीयन क्रमांक ISSN 3294-6687 है। इस पत्रिका के पाठकों में निरन्तर वृद्धि हो रही है। किसी विश्वविद्यालय से निकलने वाली साहित्य की यह पहली वेब पत्रिका है।

**लघुकथा** <http://www.laghukatha.com>

लघुकथा सुकेश साहनी एवं रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' सम्पादकद्वय के द्वारा प्रकाशित होती है। यह वेब पत्रिका हिन्दी साहित्य की 'लघुकथा' विधा पर आधृत है। इस वेब पत्रिका में नौ महत्वपूर्ण स्तम्भ हैं जो इस प्रकार हैं अध्ययन कक्ष -, चर्चा में, दस्तावेज, देश, देशान्तर, पुस्तक, भाषान्तर, मेरी पसन्द तथा संचयन। 'अध्ययन कक्ष' के अन्तर्गत समय, समाज और विमर्श की लघुकथाओं को स्थान मिला है। इसी तरह 'चर्चा में' के अन्तर्गत नये चर्चित लघुकथाओं को रखा गया है। 'देश' स्तम्भ के अन्तर्गत देश के अन्दर के लेखकों की लघुकथाएँ हैं तथा 'देशान्तर' स्तम्भ में विदेशी लेखकों की लघुकथाओं को स्थान मिला है। 'भाषान्तर' स्तम्भ में अन्य भारतीय भाषाओं की अनुदित लघुकथाओं को रखा गया है। यह वेब पत्रिका पूर्ण रूप से लघुकथा विधा को समर्पित है। आभाषी दुनिया में इस वेब पत्रिका का लघुकथा विधा के क्षेत्र में कोई सानी नहीं है।

**हिन्दी नेस्ट** <http://www.hindinest.com>

इस पत्रिका की सम्पादक मनीषा कुलश्रेष्ठ हैं। यह वेब पत्रिका बोलोजी ([www.boloji.com](http://www.boloji.com)) की सहगामी है जो हिन्दी में निकलती है किन्तु 'बोलोजी' अंग्रेजी में निकलने वाली पत्रिका है। 'बोलोजी' वेब पत्रिका मूलतः हिन्दी की है किन्तु यह अंग्रेजी में निकलती है। बोलोजी का उद्देश्य हिन्दी के साहित्य को अंग्रेजी के माध्यम

से हिन्दी साहित्य का विस्तार है। ऐसे प्रयास हिन्दी के क्षेत्र में कम ही हुए हैं। 'हिन्दी नेस्ट' इन्ही पुनीत कार्यों का प्रतिफल है। यह पत्रिका हिन्दी में कहानी, कविता, निबन्ध, संस्मरण, साक्षात्कार, व्यंग्य आदि विधाओं पर केन्द्रित है। इन विधाओं के साथसाथ इस वेब पत्रिका में कार्टून-, कैशोर्य, दृष्टिकोण, देशपरदेश-, बच्चों की दुनिया, रसोई, व्यक्तित्व जैसे स्तम्भ हैं। उक्त स्तम्भों को समाज के विभिन्न संदर्भों से जोड़ कर प्रस्तुत किया गया है। यह पत्रिका इन्टरनेट पर हिन्दी वेब पत्रिकाओं के शुरूआती दौर से चल रही है। इस पत्रिका ने इन्टरनेट पर हिन्दी तथा साहित्य को विस्तार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

**हस्ताक्षर** <http://www.hastaksher.com>

हस्ताक्षर वेब पत्रिका प्रज्ञा प्रकाशन, सांचोर राजस्थान से निकलने वाली हिन्दी की व्यवस्थित पत्रिकाओं में एक है। इस पत्रिका का प्रकाशन अभी हाल ही के वर्ष 2015 में हुआ है। जब से यह पत्रिका निकली है तब से आज तक यह सुचारू रूप से प्रकाशित हो रही है। अब तक इस पत्रिका के 29 अंक आ चुके हैं। इस पत्रिका के प्रधान सम्पादक के अनमोल हैं वहीं .पी.संस्थापक एवं सम्पादक प्रीति 'अज्ञात' है। सम्पादक एवं सम्पादन मण्डल के अथक परिश्रम से यह पत्रिका हिन्दी वेब पत्रिकाओं में 'हस्ताक्षर' बनती जा रही है। इस पत्रिका का आदर्श वाक्य "उत्कृष्ट साहित्य का मासिक दस्तावेज" है। यह वेब पत्रिका साहित्य की विविध विधाओं एवं विमर्शों को अपने पाठकों तक पहुँचाने में सफल रही है। यह पत्रिका मुख्य रूप से छः स्तम्भों में विभक्त है जो इस प्रकार हैं - 'मुख्यपृष्ठ', 'पूर्व अंक', 'रचनाकार', 'मूल्यांकन', 'ईबुक्स-', 'PDF अंक' आदि। हस्ताक्षर एक पंजीकृत पत्रिका है इसका पंजीयन क्रमांक ISSN 2454-6984 है। साहित्यिक वेब पत्रिका के साथसाथ यह शोध उत्कृष्ट शोध पत्रों को भी प्रकाशित करती है। इस वेब पत्रिका पर उपलब्ध - साहित्य व आलेख के अवलोकनोपरान्त कहा जा सकता है कि उपलब्ध साहित्य पठनीय, विमर्श समकालीन, तथा आलेख स्तरीय है।

**हिन्दी कुंज** <http://www.hindikunj.com>

यह वेब पत्रिका पूर्णतः हिन्दी को समर्पित है। "हिन्दी कुंज संपूर्णतः साहित्यिक पत्रिका है जिसका उद्देश्य हिन्दी के छात्रों, पाठकों एवं जिज्ञासु सुधी जनों का सहयोग करना है, इसके माध्यम से हिन्दी साहित्य से सम्बन्धित लगभग सभी विधाएँ इसमें संकलित करने का प्रयास किया जा रहा है।" यह पत्रिका आशुतोष दुबे के संपादन में निकलती है। इसका होम पेज एक आदर्श पत्रिका के प्रारूप से आच्छादित है। इसके प्रमुख स्तम्भ हिन्दी बुक, हिन्दी व्याकरण, रचनाकारों की सूची, हिन्दी निबन्ध, लेखसंग्रह आदि हैं। इस - पत्रिका की सबसे खास बात है लेटेस्ट न्यूज। लेटेस्ट न्यूज में नई प्रकाशित रचना को एक पट्टी में बराबर समाचार हेड लाइन के अनुसार चलाया जाता है। यह पत्रिका हिन्दी वेब पत्रिकाओं में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यह पत्रिका हिन्दी की समृद्ध वेब पत्रिकाओं में से एक है।

**पूर्वाभास** <http://www.poorvabhas.in>

पूर्वाभास उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद से प्रकाशित होती है इसके सम्पादक अवनीश सिंह चैहान हैं। इस वेब पत्रिका का आदर्शवाक्य "शब्द साधकों की साधनास्थली है।" इस वेब पत्रिका का उद्देश्य "हिन्दी साहित्य के सेवार्थ वरिष्ठ रचनाकार और उभरते रचनाकारों को एक ही मंच पर उपस्थित कर हिन्दी को और अधिक सशक्त बनाना है।" वर्तमान में इस वेबसाइट पर हजारों पृष्ठों में साहित्य की उपलब्धता है। इस वेब पत्रिका के मुख्य स्तम्भों में आलेख, कविता, कहानी, समीक्षा, साक्षात्कार तथा विविध आदि हैं। "इस वेब पत्रिका को 2012 में 'मिशीगन अमेरिकी द थिंक क्लब' द्वारा 'बुक ऑफ द ईयर अवार्ड' से सम्मानित किया गया है।"

**कलायन** <http://www.kalayan.org>

कलायन पत्रिका हिन्दी वेब पत्रिका के शुरूआती दौर से चल रही है। इस पत्रिका का प्रकाशन 'बैंगलोर' से होता है इसके सम्पादक 'मथुरा कलौनी' जी हैं। आप एक सफल सम्पादक होने के साथसाथ अच्छे - नाटककार भी हैं। आपकी इस पत्रिका में साहित्य की प्रमुख विधाओंके अनुसार स्तम्भ विभाजित किए गये

हैं जैसेकहानी -, कविता, हास्यव्यंग्य-, ललितनिबन्ध-, उपन्यास, नाटक, मथुरा कालौनी की रचनाएँ, विचार विमर्श, किशोरकिशोरियों के लिए तथा विविधा आदि है। इस पत्रिका में नये पुराने दोनों प्रकार की - रचनाकारों उपलब्ध रचनाएँ हैं।

**शब्दांकन** <http://www.shabdankan.com>

शब्दांकन हिन्दी की उन वेब पत्रिकाओं में है जो साहित्य के साथसाथ राजनीति की उन खबरों को भी - महत्त्व देती है जो समाज से जुड़ी हैं और गम्भीर हैं। ऐसी खबरों पर किसी लेखक द्वारा लेख लिखवाकर प्रकाशित किया जाता है। इस पत्रिका के प्रमुख स्तम्भ कहानी, कविता, आलेख, खबर, राजनैतिक, सम्पादकीय आदि है। यह पत्रिका समसामयिक घटनाओं पर पैनी नजर रखती है। समाज में जो घटनाएँ असाधारण घटती हैं उनका मूल्यांकन कर विमर्श रूप में आलेख निकालती है। 'शब्दांकन' हिन्दी वेब पत्रिकाओं में अपना विशिष्ट स्थान बनाए हुए हैं।

**अनुरोध** <http://www.anurodh.net>

मध्य प्रदेश हिन्दी वेब के विकास में अग्रणी राज्य है। यहीं से हिन्दी का पहला वेबपोर्टल 'वेबदुनिया' की शुरूआत हुई थी। अनुरोध भोपाल से प्रकाशित होने वाली प्रमुख जाल पत्रिका है। इस पत्रिका के सम्पादक दुर्गेश गुप्त 'राज' हैं। इस पत्रिका का आदर्श वाक्य "भारतीय भाषाओं के प्रतिष्ठापन को समर्पित पत्रिका से है" इस पत्रिका का उद्देश्य "विश्व जाल पत्रिका अनुरोध भारतीय भाषाओं के प्रतिष्ठापन के लिए समर्पित समस्त संस्थाओं को एक मंच पर लाने हेतु प्रयासरत है।" इस विश्व जाल पत्रिका का प्रकाशन एवं सम्पादन अवैतनिक, अव्यावसायिक एवं मानव सेवी होकर समस्त हिन्दी प्रेमियों को समर्पित है। इसका मूल उद्देश्य राष्ट्रभाषा हिन्दी एवं भारतीय भाषाओं की रक्षा एवं देवनागरी लिपि एवं अन्य भारतीय लिपियों की रक्षा करना है। इस जाल पत्रिका को अक्टूबर 2009 से अद्यतन किया गया है। पहले ये पत्रिका प्रिंट फार्मेट में निकलती थी अब यह इण्टरनेट के माध्यम से खूब पढ़ी जा रही है।

**प्रतिलिपि** <http://www.hindi.pratilipi.com>

प्रतिलिपि डाटकॉम एक ऑनलाइन, पब्लिशिंग साहित्यिक अभियान है। यह पूर्ण रूप से वेब पत्रिका है। इसका कोई प्रिंट संस्करण नहीं निकलता है। प्रतिलिपि डाटकॉम की स्थापना बैंगलोर के सात युवा आई0टी0 प्रोफेशन से जुड़े लोगों के द्वारा की गयी है और इसका संचालन इन्हीं सात लोगों द्वारा किया जा रहा है। प्रतिलिपि का प्रकाशन हिन्दी के अलावा गुजराती, मराठी, तमिल और मलयालम में भी हो रहा है। यह पत्रिका समय - समय पर लेखन के लिए आयोजित करती हैं जिनमे से कुछ प्रमुख पुरस्कार हैं - 'बोलो के लव आजाद है', 'प्रतिलिपि कविता सम्मान', 'प्रतिलिपि कथा सम्मान', 'पत्र लेखन', 'सीधा सवाल' आदि। इस पत्रिका में जो मुख्य स्तम्भ है उनमें प्रेम कथाएं, संस्पेंस और थ्रीलर, हारर, अन्य कहानियाँ, उपन्यास, हास्य-व्यंग्य, काव्यवाटिका-, लेख, जीवनी एवं आत्मकथा, विचारविमर्श-, प्राचीन साहित्य, यात्रावृत्तांत-, स्वाविकास एवं विकास, स्वास्थ्य सुख आदि हैं। संस्पेंस और थ्रीलर तथा हॉरर जैसे स्तम्भ को देखकर कहा जा सकता है कि यह सिनेमा से प्रभावित हिन्दी वेब पत्रिका है।

**आरम्भ** <http://www.arambh.co.in>

'आरम्भ' ऑनलाइन निकलने वाली पत्रिका है। इसका पहला अंक जुलाई सितम्बर-2014 को निकला था। अब तक इसके आठ अंक प्रकाशित हो चुके हैं। इस पत्रिका के संचालक व प्रधान सम्पादक विकास कुमार है। यह पत्रिका नई दिल्ली से निकलती है। इस पत्रिका के प्रमुख स्तम्भ सम्पादकीय, आमनेसामने-, यात्रा वृत्तान्त, विशेष लेख, कुछ कलम से, शोध पत्र, चिन्तन, विचार, लघुकथा, समीक्षा तथा ब्लॉग की गली आदि है। इस पत्रिका के द्वारा समयसमय पर विशेषांक भी प्रकाशित किये जाते हैं।-

**कृत्या** <http://www.kritya.in>

'कृत्या' एक ऑनलाइन पत्रिका है और साथ ही यह एक कविता की पत्रिका है। जो हिन्दी सहित सभी भारतीय एवं वैश्विक भाषाओं में लिखी जाने वाली आधुनिक एवं प्राचीन कविता को हिन्दी के माध्यम से

प्रस्तुत करती है। इस पत्रिका का उद्देश्य हिन्दी भाषा के प्रति सम्मान जगाना है। इस पत्रिका का पंजीकरण भी है जिसका पंजीयन क्रमांक ISSN : 0976-5158 है। यह पत्रिका डॉरति सक्सेना के सम्पादन में . त्रिवेन्द्रम, केरल से निकलती है। इसकी शुरूआत 2009 में हुई थी। इस पत्रिका के प्रमुख स्तम्भ में मेरी बात, समकालीन कविता, कविता के बारे में आदि है। यह पत्रिका कविता पर ही निकलती है। यह पत्रिका हिन्दी और अंग्रेजी दोनों में प्रकाशित होती है।

**उदन्ती** <http://www.udanti.com>

‘उदन्ती’ का प्रकाशन रायपुर से होता है। “उदन्ती डाटकॉम एक मासिक वेब पत्रिका है। जो 2008 अगस्त से निरंतर जारी है।” इस पत्रिका ने समसामयिक मुद्दों पर जैसे पर्यटन, पर्यावरण, प्रदूषण, लोककला, संस्कृति आदि विभिन्न विषयों के साथसाथ साहित्य की विभिन्न विधाओं को भी शामिल कर रखा है। इस -

पत्रिका की सम्पादक डॉ रत्ना वर्मा हैं। **सृजनगाथा** <http://www.srijangatha.com>

यह हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं से युक्त वेब पत्रिका है। “सृजनगाथा हिन्दी की एक ऑनलाइन वेब पत्रिका है। इसके सम्पादक जय प्रकाश मानस है।” यह पत्रिका इण्टरनेट पर एक अग्रणी पत्रिका है। इस पत्रिका के प्रमुख स्तम्भ हैं लघुकथा -, आलेख, कहानी, हलचल, कविता, व छन्द हैं। जय प्रकाश मानस वेब के अच्छे जानकार हैं। इनका अपना एक ब्लॉग है जिसका ई पता-

[www.jayprakashmanas.blogspot.in](http://www.jayprakashmanas.blogspot.in) है। सृजनगाथा में जय प्रकाश मानस की कई रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं।

**जनकृति** <http://www.jankritipatrika.in>

जनकृति पत्रिका की शुरूआत मार्च 2015 से हुई। इसने कम समय में हिन्दी जगत में अपनी पहचान बनाई है। इस पत्रिका के सम्पादक कुमार गौरव मिश्रा है। यह पत्रिका विमर्श केन्द्रित अंतरराष्ट्रीय मासिक ई-पत्रिका है। “जनकृति विमर्श केन्द्रित अंतरराष्ट्रीय पत्रिका है सृजन के प्रत्येक क्षेत्र कविता ., नवगीत, कहानी, लघु कथा, व्यंग्य, नाटक, सिनेमा, रंगमंच, आलोचना, समीक्षा में विमर्श को स्थापित करने के उद्देश्य से इस पत्रिका को निकाला जा रहा है। इसके अतिरिक्त पत्रिका में कई विमर्श स्तंभ है जैसे शोध विमर्श, बाल विमर्श, लोक विमर्श, सिने विमर्श, रंग विमर्श, स्त्री विमर्श, दलित एवं जनजाति विमर्श, भाषिक विमर्श, शिक्षा विमर्श एवं सम्पूर्ण विश्व में हिंदी के विकास हेतु हो रही गतिविधियों के लिए हिंदी विश्व नाम से स्तंभ रखा गया है। हम सृजन क्षेत्र से जुड़े सभी सृजनकर्मियों का पत्रिका में स्वागत करते हैं एवं आशा करते हैं कि आप विमर्श की दृष्टि से सार्थक लेखन की दिशा में हमारा सहयोग करेंगे। यह पत्रिका जहाँ एक ओर विश्व पटल पर सृजन क्षेत्र के प्रमुख हस्ताक्षरों को प्रस्तुत करती है वहीं दूसरी ओर सृजन क्षेत्र में कदम रख रहे नव लेखकों के लिए एक अंतरराष्ट्रीय मंच भी प्रदान करती है।” इसकी वेबसाइट पर मार्च 2015 से लेकर अप्रैल 2016 तक की पत्रिका PDF फॉर्मेट में पड़ी हुई है। जिसको भी पढ़ना है वह आसानी से इन पत्रिकाओं को पढ़ सकता है। इस पत्रिका का प्रकाशन गोरख पाण्डेय छात्रावास महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा से होता है।

उपर्युक्त जितनी पत्रिकाओं को लिया गया है वे सभी हिन्दी साहित्य की वेब पत्रिका हैं साथ ही ये सभी भारत से निकलने वाली पत्रिकाएँ हैं। इनमें उन पत्रिकाओं को नहीं लिया गया है जो पुरानी हैं तथा अपडेट नहीं की जा रही हैं। ऊपर जितनी भी पत्रिकाएँ हैं उनको देखकर यह प्रतीत होता है कि इनकी संख्या पर्याप्त नहीं है। आने वाले समय में इन पत्रिकाओं का गुणात्मक विकास होना आवश्यक है नहीं तो हिन्दी को आपेक्षित स्थान मिल पाना मुश्किल हो जायेगा।

**विदेश से प्रकाशित हिन्दी साहित्य की वेब पत्रिकाएँ**

हिन्दी साहित्य की वेब पत्रिकाएँ सिर्फ भारत से ही नहीं निकलती अपितु विदेशों से भी खूब निकल रही हैं इनका परिचय इस प्रकार है-

भारत दर्शन <http://www.bharatdarshan.co.nz>

भारत दर्शन पत्रिका न्यूजीलैण्ड से प्रकाशित होती है। इसके सम्पादक रोहित कुमार 'हैप्पी' है। पहले यह पत्रिका प्रिंट प्रारूप में छपती थी किन्तु इण्टरनेट के आ जाने से यह अब ऑनलाइन है। भारत दर्शन का इण्टरनेट पर प्रथम प्रकाशन दिसम्बर जनवरी-1996-97 में हुआ इस तरह "इण्टरनेट की दुनिया में हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता का उदय भारतदर्शन के रूप में हो चुका था।" इस पत्रिका को हिन्दी साहित्य की प्रथम वेब पत्रिका होने का गौरव प्राप्त है। इण्टरनेट पर हिन्दी शिक्षण की शुरुआत भारत दर्शन ने की वो अलग बात है कि इसको विशेष उपलब्धि नहीं मिली।

भारत दर्शन की योजनाएं भारत दर्शन हिन्दी के विकास में उत्तरोत्तर वृद्धि कर रहा है। इसी दृष्टि से रोहित : कुमार हैप्पी ने दो योजनाएं बनाई जिस पर भारत दर्शन पिछले दो वर्षों से कार्य कर रहा है। पहली योजना दर्शन को लेकर।-कहत कबीर को लेकर थी और दूसरी योजना साहित्य -

कहतकहत कबीर भारत दर्शन का ही एक हिस्सा है बस यह कबीर के दोहों :कबीर-, सबद, साखी तथा किंवदंतियों पर आधारित है। "कहत कबीर पर कबीर का समग्र साहित्य प्रकाशित करने की योजना है। इसमें मुद्रित सामग्री, चित्र व वीडियो सम्मिलित होंगे कबीर की जीवनी उनके दोहे, भजन व प्रचलित किंवदन्तियां प्रकाशित हो। हम निरंतर इसमें और सामग्री सम्मिलित कर रहे हैं।" इस परियोजना के अन्तर्गत कबीर के साहित्य को इण्टरनेट के माध्यम से अन्तर्राष्ट्रीय मंच देना है। कहत कबीर का ई-पता <http://www.kahatkabir.com> है। इसका भी संचालन न्यूजीलैण्ड से ही होता है।

साहित्य दर्शन: इस परियोजना पर अभी कार्य चल रहा है। इसके अन्तर्गत प्रवासी भारतीयों के साहित्य को विशेष रूप से स्थान देने का कार्य किया जायेगा। जिससे हिन्दी जगत में प्रवासियों के द्वारा लिखा जा रहा साहित्य प्रकाश में आ सके।

अभिव्यक्ति <http://www.abhivyakti-hindi.org>

1996 के अन्त तक हिन्दी इण्टरनेट पर अपना विकास नहीं कर पायी, अगर थी तो वह रोमन के रूप में, एक हिन्दी प्रेमी होने के नाते पूर्णिमा वर्मन ने सोचा कि ऐसे काम चलेगा नहीं, उन्होंने हिन्दी को उचित स्थान दिलाने के लिए एक टीम बनाई इस टीम में देश और विदेश से कई लोगों को जोड़ा। इस टीम में अश्विन गाँधी ने तकन (कनाडा) की का काम सम्भाला। प्रवीन सक्सेना अर्थ की मदद की। कला और सम्पादन खुद पूर्णिमा वर्मन ने सम्भाला तथा टाइपिंग व अन्य सहयोग दीपिका जोशी ने की। इन सब लोगों को मिलाकर जो टीम बनी उसमें सभी ने अपनेअपने इण्टरनेट खर्च का वहन करने का निर्णय लिया। हर्ष - कुमार जो कि भारतीय रेलवे में नौकरी करते थे इन्होंने अपने द्वारा बनाए गये फाण्ट को मुफ्त में पत्रिका को दिया। सबके सहयोग एवं कड़ी मेहनत से अभिव्यक्ति का पहला व्यवस्थित अंक 15 अगस्त 2000 को प्रकाशित हुआ। इस बार इसे 66 लोगों ने पढ़ा। "12 सितम्बर को इसका दूसरा अंक निकला जिसकी यात्रा के लिए 226 लोग आये और अगले महीने 338।" इस तरह धीरेधीरे यह पत्रिका चर्चित हुई और - इण्टरनेट पर खूब पढ़ी जाने लगी। इस पत्रिका में जो प्रमुख स्तम्भ हैं उनमें आज सिरहाने, उपन्यास, उपहार, कहानियाँ, कला दीर्घा, कविताएँ, गौरवगाथा, पुराने अंक, नगरनामा, रचना प्रसंग, घरपरिवार-, चौपाल, नाटक, परिक्रमा, पर्वपरिचय-, प्रकृति, पर्यटन, प्रेरक प्रसंग, प्रौद्योगिकी, फुलवारी, रसोई, लेखक, विज्ञान वार्ता, विशेषांक, साहित्य, संगम, संस्करण, साहित्य, समाचार, साहित्यिक निबंध आदि हैं। इस पत्रिका का प्रकाशन संयुक्त अरब अमीरात के शारजाह से पाक्षिक होता है।

अनुभूति <http://www.anubhuti-hindi.org>

यह पत्रिका पूर्णरूप से कविता को समर्पित पत्रिका है। जब अभिव्यक्ति पर कविताओं के प्रकाशन हेतु दबाव बनने लगा तो तत्काल पूर्णिमा वर्मन ने इण्टरनेट पर एक नई वेब पत्रिका बनाई जो अनुभूति के नाम से जानी जाती है। "इस तरह 1 जनवरी, 2001 को अनुभूति का जन्म हुआ।" इस पत्रिका के द्वारा देश विदेश के साहित्यकारों एवं नवोदित साहित्यकारों की रचनाओं का प्रकाशन किया गया।

1 सितम्बर 2007 को इन पत्रिकाओं को यूनिकोड फाण्ट पर ले आया गया। अब इनका प्रकाशन यूनिकोड में होने लगा और पुराने अंकों को भी यूनिकोड में बदला जाने लगा। पूर्णिमा वर्मन के अनुसार अभिव्यक्ति और अनुभूति केवल पत्रिकाएँ नहीं हैं, यह एक ऐसा पुस्तकालय है जिसमें हमने साहित्यिक रूचि के लोगों की प्रिय रचनाओं और उनके प्रत्यक्षों को सहेजा है। इस पत्रिका पर कई उदीयमान रचनाकारों को प्रसिद्धि मिली है। इन दोनों पत्रिकाओं का प्रकाशन आज भी निर्बाध रूप से संयुक्त अरब अमीरात से हो रहा है। ये दोनों पत्रिकाएँ हिन्दी वेब पत्रिकाओं में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं।

साहित्य कुंज <http://www.sahityakunj.net>

साहित्य कुंज पत्रिका का प्रकाशन कनाडा से होता है। यह पत्रिका जुलाई 2016 तक अपने 111 अंक निकाल चुकी है। इस पत्रिका के सम्पादक सुभाष कुमार घई है। यह पत्रिका पंजीकृत पत्रिका है। इसका पंजीयन नं० ISSN 2292-9754 है। इस पत्रिका का आदर्श वाक्य "अन्तरजाल पर साहित्य प्रेमियों की विश्राम स्थली है।" इस पत्रिका को दो भागों में बाँटा जा सकता है। 1. प्रकाशनगत, 2. विधागत प्रकाशनगत इसके अनुसार इसको एक पत्रिका के प्रारूप में ढाला गया :है और इसके जो स्तम्भ हैं उनमें इस अंक की कहानियाँ, हास्यव्यंग्य-, सांस्कृतिक कथा, बाल साहित्य, लघु कथा, साक्षात्कार, आलेख श्रृंखला, साहित्य और सिनेमा, शोधनिबन्ध-, आलेख, अनुदित साहित्य, कविताएं, शायरी, यात्रा संस्मरण, संकलन आदि हैं।

### baVjusV ij fgUnh dh miyC/krk

lwpuk प्रौद्योगिकी ds cnyrs ifjos'k esa fgUnh Hkk"kk us viuk LFkku /khjs&/khjs izklr dj fy;k gSA vk/kqfudhdj.k ds bl ;qx esa Hkk"kk dk egRoiw.kZ LFkku gSA baVjusV ij fgUnh i<+uk ,oa iz;ksx Lor% fgUnh dks ykdsfiz; cuk ldrk gSA ekbØkslkW¶V us vkWfQl fgUnh ds }kjk Hkkjrh;ksa ds fy;s dEI;wVj dk iz;ksx vklku dj fn;k gSA lgh dkj.k gS fd vc fgUnh u tkuus okys Hkh baVjusV tfj;s viuk dke vklkuh ls dj jgs gSaA lekpkj] lkfgR;] lwpuk प्रौद्योगिकी] O;kikj] T;ksfr"k vkfn ds osc ist vyx&vyx izdkj dh tkudkj miyC/k dj ldrs gSaA dEI;wVj vkSj lwpuk प्रौद्योगिकी ds {ks= esa vkt tks u;k Kku foLQksV gqvk gS og Hkk"kk esa Hkh ,d ekSu ØkfUr dk okgd cudj vk;k gSA

baVjusV ij fgUnh] vaxzsth ftruh ykdsfiz; rks ugha gS] ysfdu fiNys dqN o"ksaZ esa baVjusV ij fgUnh dh osclkbVksa dh la;k esa dkQh rsth ls o`f) gqbZ gSA pwjfd baVjusV dkQh NksVh txgksa rd Hkh igqip x;k gS] blfy;s fgUnh lkbVksa dh vko';drk Hkh dkQh rsth ls eglwl dh tk jgh gSA vc rks lcls cM+h ckr ;s gS fd fgUnh esa bZ&esy dh lqfo/kk Hkh dbZ osclkbVksa }kjk miyC/k djkbZ tk jgh gSA

baVjusV ds ek/;e ls lekt ds NksVs&cM+s lHkh O;fDr;ksa dks nwjLFk LFkkuksa rd vfoyEc mi;ksxh vkSj bfPNr lwpuk miyC/k gks tkrh gS] ftlls os vius O;olkf;d] lkekftd vkSj okf.kfT;d dk;Zdykiksa esa o`f) dj ldrs gSaA

### lkekU;r% fgUnh dh fuEu rjg dh osclkbVsa ns[kus dks feyrh gSa &

i. dqN osclkbVsa fgUnh lekpkjksa rFkk v[kckjksa dh gSaA budk mn~ns'; fgUnh esa lekpkj miyC/k djkk gSA

ii. dqN osclkbVsa tks iwjh rjg ls lkfgfR;d if=dkvksa ds fy;s lefiZr gSa rFkk lkbVksa ij lkfgfR;d ds vfrfjDr vU; fdlh rjg dh lwpuk dks izklr ugha fd;k tk ldrA ;s ewyr% Hkwe.Myh; lkfgfR;d osciksVZy gksrs gSaA

iii. dqN osclkbVsa ljdkjh] v/kZljdkjh] Lok;Ùk laLFkkvksa vkSj lkoZtfud {ks= dh laLFkkvksa dh gSa tksfd vius ckjs esa lkjh tkudkj fgUnh esa Hkh miyC/k djkr gSaA ;s osclkbVsa jktHkk"kk fu;eksa ds rgr fgUnh esa cukbZ tkrh gSaA

iv. dqN osclkbVsa fgUnh Hkk"kk] lekt] lkfgR; ls tqM+h tkudkj iznku djrh gSaA

v. dqN osclkbVsa fgUnh esa bZ&esy dh lqfo/kk gh iznku djrh gSaA

vi. fons'kh osclkbVksa ds vykok dqN Hkkjrh; osclkbVsa Hkh gSa] tksfd lpZ batuksa dh rjg dk;Z djrs gSa rFkk vklkuh ls] vko';drkuqlkj fdlh Hkh rjg dh lwpuk dks [kkstk tk ldrk gSA mi;ZqDr lHkh rjg dh osclkbVksa ds dqN uke rFkk mu lkbVksa ij miyC/k lwpuk dk laf{klr fooj.k vkxs fd;k tk jgk gS &

### **bUVjusV ij fgUnh lkfgR; dh izeqq[k osclkbVsasasa**

dqN osciksVZy fgUnh lkfgR; dh cgqr lkjh tkudkj miyC/k dj jgs gSa] muesa ls dqN iksVZy dk o.kZu ;gki ij fd;k tk jgk gS &

1. www.webdunia.com -

;g fo'o dh izFke fgUnh osclkbV gSA bldh 'kq;vkr Qjoh 1999 esa gqbZ FkhA blesa lkfgR; ds varxZr ukVd] dfork] vkys[k] laLej.k] yksd lkfgR;] leh{kk vkfn lkfgR; miyC/k gSA bl osclkbV ij miyC/k lkfgR; dks ikBd bZ&esy ds tfj;s vius fe=ksa dks Hkh Hkst ldrs gSaA

2. www.vagarth.com -

Hkkjrh; jktHkk"kk ifj"kn }kjk fgUnh lkfgR; vkSj laLd`fr dh ekfld if=dk gSA

3. www.abhivkti-hindi.org -

;g ,d lkfgfR;d if=dk gSA blesa vkys[k] lk{kkRdkj] dgkfu;kj rFkk laLej.k miyC/k gSaA fgUnh ds vf/kdrj lkfgR;dkjksa dk ifjp; bl ij miyC/k gSA blesa dbZ miU;kl] gkL;&O;ax rFkk lkfgfR;d fuoZ/k iwjs&ds&iwjs miyC/k gSaA lkfgR; dh n`f"V ls ,d fofo/krk Hkjk oscist gSA

4. www.anubhuti-hindi.org –

;g Hkh fgUnh dkO; dh ,d vkuWykbu lkfgfR;d if=dk gSA ;gki fo'o dh yxHkx 450 vkSj fgUnh dh 2500 ls vf/kd izfl) if=dkvksa dk laxzg gSA lkFk gh izeq[k jpukdkjksa ds ckjs esa Hkh tkudkj izklr dh tk ldrh gSA

5. www.jagransahitya.com –

;g fgUnh nSfud lepkj i= nSfud tkxj.k dh osclkbV gS ftl ij dgkfu;kj] dfork;sa] fuca/k] ys[kd ifjp; rFkk dbZ miU;kl ,oa vU; lkfgR; dks'kksa dk laiw.kZ o.kZu fgUnh esa miyC/k gSA

6. www.bharatdarshan.com –

bl osciksVZy ij dbZ xtydkjksa dh xtysa rFkk y?kqdfkk;sa fgUnh esa miyC/k gSaA

7. www.literatureworld.com –

bl osclkbV ij leh{kk ds iqjkus vadksa ds lkFk&lkFk 150 ls vf/kd fgUnh lkfgR;dkjksa dk ifjp; miyC/k gSA ;gki ls iqjkuh ,oa ubZ vyx&vyx fo/kkvksa ,oa vuqfnr iqLrdksa dh tkudkjH Hkh izklr dh tk ldrh gSA

8. www.hindinest.com –

;g fgUnh lkfgR; dks iwjh rjg lefiZr ,d vkWu ykbu iksVZy gSA yxHkx 150 ls Hkh vf/kd izfl) rFkk dqN mHkjrS lkfgR;dkjksa dh dfork,i rFkk dgkfu;kj bl ij miyC/k gSaA fgUnh ds lkfgR;dkj viuh jpuk,as bl ij Hkst ldrs gSaA

9. www.sanskritgde.com –

bl osclkbV ij fgUnh esa rqylh ds jkepfjrekul ds lHkh dkaM] nksgkoyh] dforkoyh] ofu; if=dk rFkk fcgkjH ds nksgs miyC/k gSaA

10. www.prabhasakshi.com –

bl osclkbV ij iqLrd leh{kk,sa] O;ax jpuk,sa] y?kqdFkk,sa] rFkk lk{kkRdkjksa ds lkFk&lkFk [kcjsa Hkh izklr dh tk ldrh gSaA

**fgUnh lekpkj i=&if=dkvksaa ls lacaaf/kr dqN ossclkbVsasa &**

fgUnh lekpkj i=&if=dkvksa dh tkudkjH ds fy;s fuEu osclkbVksa dk mi;ksx fd;k tk ldrk gS &

1. www.naidunia.com
2. www.rajasthanpatrika.com
3. www.hindimilap.com
4. www.navbharat.net
5. www.prabhatkhabar.com
6. www.amarujala.com
7. www.lokmat.com
8. www.bhaskar.com
9. www.hindi.india-today.com
10. www.rashtriyasahara.samayline.com
11. www.tadbhav.com
12. www.bbc.co.uk/hindi/
13. www.prajabharat.com
14. www.hindi.samachar.com
15. www.punjabkesari.com

**Hkkjrh; osclpZ batau**

fons'kh lpZ batuksa ds vykok dqN Hkkjrh; osclpZ batu Hkh gS] ftldk mi;ksx djds lHkh rjg dh lwpuk dks vklkuh ls lpZ fd;k tk ldrk gSA dqN osc lpZ batu fuEukuqlkj gSa&

1. www.indiatimes.com
2. www.samachar.com
3. www.123india.com
4. www.iloveindia.com
5. www.netjal.com
6. www.webdunia.com

7. www.searchindia.com
8. www.rekha.com
9. www.guruji.com
10. www.samilan.com
11. www.raftaar.in
12. www.hindi.co.in
13. www.devanaagari.net
14. www.hinkhoj.com
15. www.123khoj.com
16. www.hindisearchengines.com

### fgUnh esa bZ&esy ds fy;s osclkbVssa

fuEu osclkbVksa ij fgUnh esa bZ&esy dh lqfo/kk Hkh miyC/k gS &

1. www.hindipatra.com
2. www.rediffmail.com
3. www.webdunia.com
4. www.cdacindia.com
5. www.mailjol.com
6. www.epatra.com
7. www.gmail.com

### fgUnh dh dqN vU; osclkbVssa

1. www.rajbhasha.nic.in -  
;g jktHkk"kk foHkkx] x`g ea=ky;] Hkkjr ljdkj dh osclkbV gS] ftl ij jktHkk"kk fgUnh lEcfU/kr fu;eksa] vf/kfu;eksa ds vfrfjDr cgqr lkjh tkudkj miyC/k gSA
2. www.shabdkosh.com -  
;g vkWuykbu 'kCn&dks'k ¼fgUnh&vaxzsth½ dh osclkbV gSA
3. www.sahitya-academi.gov.in -  
;g lkfgR; vdkneh dh osclkbV gSA bl ij vdkneh }kjk fn;s tkus okys lkfgR; vdkneh iqjLdkjksa ls foHkwf"kr lkfgR;dkjksa ds uke vkSj muds fooj.k ds lkFk- lkFk vdkneh }kjk Nkih tkus okyh fofHkUu iqLrdksa dh tkudkj dks izklr fd;k tk ldrk gSA
4. www.indianlanguages.com -  
bl osclkbV ij fgUnh lfgr vU; lHkh izeq[k Hkk"kkvksa dk lkfgR; rFkk egRoiw.kZ tkudkj miyC/k gSA
5. www.ciil.org
6. www.hindibhasha.com
7. www.hindilanguage.com

### bUVjussV ij ^h fgUnh E-books\*\* dh osclkbVsa

<http://sites.google.com/site/hindiebooks/> -

bl osclkbV ij 20 ls vf/kd ^h fgUnh E-books ¼x l] i l] miU;kl vkfn½ .pdf esa miyC/k gSA

<http://www.purebhakti.com/resources/ebooks-a-magazines-mainmenu->

63/cat\_view/53-bhakti-books-download/54-hindi.html -

bl osclkbV ij 50 ls vf/kd HkfDr lkfgR; dh iqLrdsa .pdf esa miyC/k gSA

[http://www.messagefrommasters.com/Ebooks/osho\\_hindi\\_books\\_download.](http://www.messagefrommasters.com/Ebooks/osho_hindi_books_download.htm)

htm -

bl osclkbV ij 70 ls vf/kd vks'kks lkfgR; dh iqLrdsa .pdf esa miyC/k gSA bl izdkj lcls vn~Hkqr ckr ;g gS fd baVjusV ds tfj;s lgh ek;us esa vki Xyksoy gks tkrs gSaA vkSj tc vki fdlh osclkbV ij vki tk;saxs rks ik;saxs fd bu ij vkSj Hkh cgqr lkjh lwpuk miyC/k gS vkSj vkxs vius vkidks Qilrk gqvk ik;saxsA blfy;s baVjusV dks vn~Hkqr tky dgk tkrk gSA gkykafd baVjusV ij fgUnh dh lkbVksa dks [kkstuk ,d cM+h fnDdr gSA fgUnh lkbVksa dk T;knk izpkj ugha gksrk] blfy;s ikBdksa rd mudh tkudkj iwjh rjg ugha igqip ikrh gSA xwxy lpZ batu }kjk bl leL;k dks Hkh gy fd;k tk jgk हैं।

## UNIT 4

वर्तमान में इंटरनेट आम आदमी की ज़िंदगी का अहम हिस्सा होता जा रहा है। 21वीं शताब्दी के प्रारंभ में किसी ने कल्पना भी नहीं की थी कि इतनी ज़ल्दी यह लोगों के जीवन स्तर को प्रभावित करेगा। आम उपयोक्ता प्रायः इ मेल, गाने, वाल पेपर, आदि सर्च करता है। इसके साथ ही उसका परिचय ब्लागिंग से भी हो जाता है। ब्लागिंग की शुरुआत हुए अभी अधिक समय नहीं हुआ है। अंगरेज़ी के ब्लॉग इस शताब्दी के प्रारंभ में इंटरनेट पर आ गए थे। जिन्हें अमरीकी इंटरनेट उपयोगकर्ताओं द्वारा बनाया गया था। हिंदी ब्लागिंग की शुरुआत हुए अभी लगभग 5 या 6 वर्ष ही हुए हैं। यूनिकोड (An international encoding standard for use with different languages and scripts, by which each letter, digit, or symbol is assigned a unique numeric value that applies across different platforms and programs.) की सुविधा उपलब्ध हो जाने के बाद हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में ब्लागिंग आसान हो गई है। यह एक ऐसा तरीका है जिसके माध्यम से अपनी बात बिना किसी रूकावट या कांट-छांट के एक दूसरे तक पहुंचाई जा सकती है। वह भी लगभग मुफ्त में।

**परिभाषा :-**

एक ब्लॉग ("वेबलॉग" का ट्रंकेशन) वर्ल्ड वाइड वेब पर प्रकाशित एक चर्चा या सूचनात्मक वेबसाइट है, जिसमें असतत(Discrete ->constituting a separate entity(अस्तित्व) or part ), अक्सर अनौपचारिक डायरी-शैली पाठ प्रविष्टियाँ (पोस्ट) शामिल हैं। पोस्ट्स को आमतौर पर रिवर्स कालानुक्रमिक क्रम में प्रदर्शित किया जाता है, ताकि वेब पेज के शीर्ष पर सबसे हाल की पोस्ट पहले दिखाई दे।

एक ब्लॉग ("वेबलॉग" का एक छोटा संस्करण) एक ऑनलाइन जर्नल या सूचनात्मक वेबसाइट है, जो रिवर्स कालानुक्रमिक क्रम में सूचना प्रदर्शित करती है, जिसमें सबसे ऊपर दिखने वाले नवीनतम पोस्ट होते हैं। यह एक ऐसा मंच है जहाँ एक लेखक या लेखकों का एक समूह एक व्यक्तिगत विषय पर अपने विचार साझा करता है।

आज ब्लॉग पर हिंदी में कई विषयों पर सामग्री उपलब्ध है। जिसमें दिन प्रतिदिन वृद्धि हो रही है। बहुत से ब्लॉग हिंदी साहित्य से भी जुड़े हुए हैं। वे लगातार हिंदी में साहित्यिक सामग्री उपलब्ध करा रहे हैं। ब्लॉग पर लगभग प्रत्येक विधा का साहित्य उपलब्ध है। लेकिन यहां कविता व कहानी के साथ साथ तत्कालीन साहित्यिक जानकारी के ब्लॉग ही अधिक हैं।

आज भले ही हिंदी साहित्य ब्लॉग पर अपनी शैशवास्था में हो पर आने वाला समय निश्चित रूप से उसी का है। वर्तमान में हिंदी के साहित्यकारों की पहुंच भी इन ब्लॉगों पर लगभग 10 प्रतिशत के आसपास ही है। लेकिन इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की बढ़ती संख्या आस्वस्त करती है कि हिंदी का दायरा अब देश की सीमाएं लांघकर दुनिया भर में अपनी पैठ बना रहा है।

सोशल नेटवर्किंग से जुड़ी विभिन्न वेबसाइटें भी साहित्यकारों-लेखकों को एक दूसरे के करीब ला रही हैं। इनके माध्यम से भी हिंदी साहित्य से जुड़े सभी उपयोगकर्ता एक दूसरे के ब्लॉग पर भ्रमण करते हैं। जिससे उन्हें एक दूसरे के द्वारा किए गए लेखन के संबंध में जानकारी मिलती है। सोशल नेटवर्किंग साइट साहित्यकारों रचनाकारों के सुख दुख बांटने का भी दायित्व निभा रही हैं।

आज ब्लॉग पर जितने भी कवि मौजूद हैं उन्हें मुश्किल से ही साहित्यिक पत्रिकाओं में स्थान मिलता है। साहित्यिक पत्रिकाओं की बात तो दूर किसी सामान्य समाचार पत्र पत्रिकाओं तक में भी इन्हें स्थान नसीब नहीं है। इसका कारण पत्रिकाओं द्वारा शायद यह धारणा बना लेना है कि ब्लॉग के कवि, कवि नहीं हैं। जबकि आज ब्लॉग पर गंभीर व आम आदमी के सरोकारों से जुड़ी हुई कविताएं प्रकाशित की जा रही हैं। इनमें मानव जीवन के प्रत्येक पहलू पर विचार किया जा रहा है। इन कविताओं पर ब्लॉग पाठकों की टिप्पणियां भी लगातार पढ़ने में आती हैं। लेकिन ब्लॉग-काव्य पर हिंदी के आलोचकों, समीक्षकों का ध्यान पता नहीं कब जाएगा?

ब्लॉग पर अन्य विधाओं में जितनी भी रचनाएं हैं भले ही वह कम हों पर उच्च कोटि की हैं। इन्हें किसी भी तरह से दोयम दर्जे की रचनाएं नहीं सिद्ध किया जा सकता। प्रिंट मीडिया के लेखक ब्लॉग पर प्रायः कम ही लेखन का कार्य करते हैं। वे शायद यह मानकर चलते हैं कि इन रचनाओं को कोई पढ़ेगा भी नहीं। लेकिन ब्लागवाणी, चिटठाजगत जैसे ब्लाग एग्रीगेटर्स हिंदी ब्लॉग को लोकप्रिय बना रहे हैं यह प्रसन्नता की बात है। वहीं अंगरेज़ी के एग्रीगेटर्स जैसे टेक्नोरेटी, ब्लॉगलाग, ब्लागर्स इंडिया आदि भी हिंदी साहित्य के प्रचार प्रसार में पीछे नहीं हैं। गूगल द्वारा उपलब्ध कराई गई ब्लॉग बनाने की सुविधा से हर हिंदी प्रेमी अब भलीभांति परिचित हो गया है। अन्य वेबसाइटें भी यह सुविधा उपलब्ध कराकर हिंदी साहित्य के प्रचार-प्रसार में महती योगदान दे रही हैं। बल्कि देश विदेश के लोग हिंदी सीखकर भारत जैसे उभरते बाज़ार में अपनी संभावनाएं तलाश रहे हैं।

ब्लॉग पर उपलब्ध हिंदी साहित्य की दूसरी सबसे बड़ी विशेषता इसका निःशुल्क उपलब्ध होना है। प्रिंट मीडिया के विपरीत ब्लॉग की साहित्यिक रचनाएं लम्बे समय तक पाठकों की पहुंच में रहती हैं।

आज आवश्यकता इस बात की है कि ब्लॉग पर उपलब्ध साहित्य को भी गंभीर व विचार योग्य साहित्य माना जाए। आलोचक, समीक्षक इन विभिन्न ब्लॉग पर उपलब्ध साहित्य पर विचार कर अपनी महत्वपूर्ण राय दें। इस साहित्य पर उनके सटीक विश्लेषण से ब्लॉगर्स को भी लाभ होगा। वहीं हिंदी ब्लॉग लेखन के स्तर में अपेक्षित सुधार होगा। यह प्रत्येक हिंदी साहित्य के शुभचिंतक का दायित्व बनता है कि वह ब्लॉगर्स को मार्गदर्शन प्रदान करें। अब हिंदी साहित्य से जुड़े ब्लॉग दुनिया भर में पढ़े जा रहे हैं। देश विदेश में हिंदी प्रेमी व रचनाकार इन्हें लिख रहे हैं। इन पर व्यक्त किए गए विचार केवल ब्लॉगर्स के विचार न होकर हिंदी की साहित्य की नवीन अवधारणा का प्रतीक बन रहा है। अतः इसलिए भी इनपर अधिक ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है। अब वह समय आ गया है जब गैर हिंदी भाषी भी हिंदी से जुड़ेंगे। हिंदी पर समूचे विश्व का ध्यान इन ब्लॉग के कारण भी है। इसलिए आलोचकों समीक्षकों का यह दायित्व बनता है कि वे इन पर समुचित ध्यान दें।

आने वाले दस वर्ष के अंदर ब्लॉग हिंदी साहित्य के विकास का प्रतीक होगा। दुनिया की अन्य भाषाएं भी इस सर्वसुलभ माध्यम का इस्तेमाल अपनी भाषा व उसके साहित्य के विकास के लिए कर रही हैं।

### ब्लॉग का उद्देश्य क्या है?

व्यक्तिगत उपयोग के लिए ब्लॉग शुरू करने के कई कारण हैं और व्यवसाय ब्लॉगिंग के लिए केवल कुछ ही मजबूत लोग हैं। व्यवसाय, परियोजनाओं, या किसी अन्य चीज़ के लिए ब्लॉगिंग जो आपके लिए धन ला सकती है, का एक बहुत सीधा उद्देश्य है - अपनी वेबसाइट को Google SERPs (Search Engine Results Page) में उच्चतर रैंक करने के लिए, जैसे कि आपकी दृश्यता में वृद्धि।

एक व्यवसाय के रूप में, आप अपने उत्पादों और सेवाओं को खरीदने के लिए उपभोक्ताओं पर निर्भर रहते हैं। एक नए व्यवसाय के रूप में, आप संभावित उपभोक्ताओं को पाने और उनका ध्यान खींचने में आपकी मदद करने के लिए ब्लॉगिंग पर भरोसा करते हैं। ब्लॉगिंग के बिना, आपकी वेबसाइट अदृश्य रहेगी, जबकि ब्लॉग चलाने से आपको खोजा जा सकता है और प्रतिस्पर्धी बन सकती है।

तो, ब्लॉग का मुख्य उद्देश्य आपको प्रासंगिक (Relevant) दर्शकों से जोड़ना है। एक और अपने यातायात को बढ़ावा देने और अपनी वेबसाइट पर गुणवत्ता सुराग भेजने के लिए है।

आपके ब्लॉग पोस्ट जितने अधिक बार और बेहतर होते हैं, उतनी ही आपकी वेबसाइट पर आपके लक्षित दर्शकों द्वारा खोजे और जाने की संभावना अधिक होती है। इसका मतलब है कि एक ब्लॉग एक प्रभावी लीड जनरेशन टूल है। अपनी सामग्री में शानदार कॉल टू एक्शन (CTA -> **CTA stands for call to action. A call to action is a button (or simply a text link) that tells site users to do something—explore the site further, fill out a contact form, browse a portfolio etc.**) जोड़ें, और यह आपकी वेबसाइट के ट्रैफ़िक को उच्च-गुणवत्ता वाले लीड में परिवर्तित कर देगा। एक

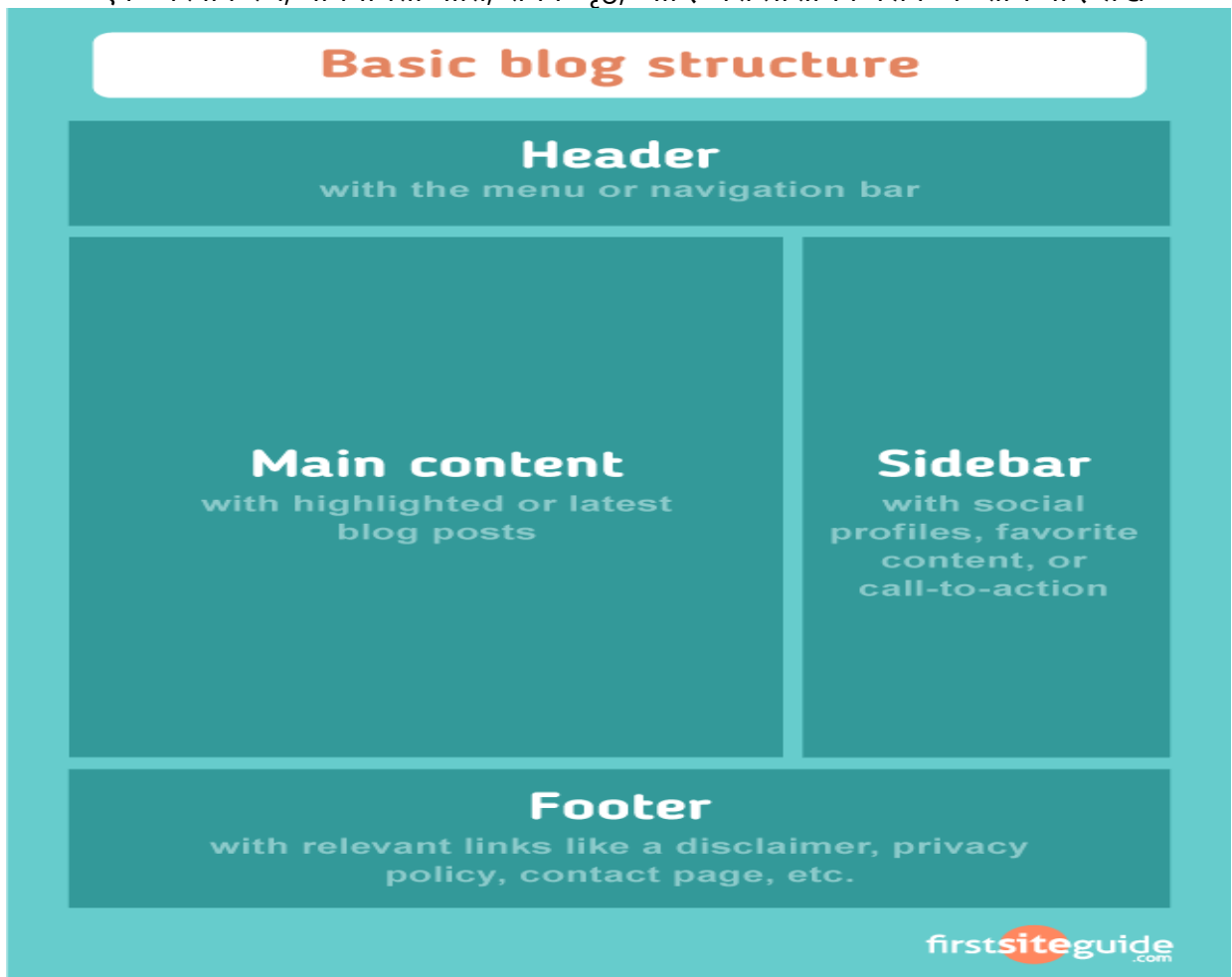
ब्लॉग आपको अपने आला प्राधिकरण को दिखाने और एक ब्रांड बनाने की भी अनुमति देता है। जब आप जानकारीपूर्ण और आकर्षक पोस्ट बनाने के लिए अपने आला ज्ञान का उपयोग करते हैं, तो यह आपके दर्शकों के साथ विश्वास पैदा करता है। महान ब्लॉगिंग आपके व्यवसाय को अधिक विश्वसनीय बनाती है, जो विशेष रूप से महत्वपूर्ण है यदि आपका ब्रांड अभी भी युवा और काफी अज्ञात है। यह एक ही समय में ऑनलाइन और आला प्राधिकरण की उपस्थिति सुनिश्चित करता है।

### ब्लॉग संरचना

समय के साथ ब्लॉगों की उपस्थिति बदल गई है, और इन दिनों ब्लॉगों में कई प्रकार के आइटम और विजेट शामिल हैं। हालांकि, अधिकांश ब्लॉग में अभी भी कुछ मानक विशेषताएं और संरचनाएं शामिल हैं।

**यहां सामान्य विशेषताएं हैं जो एक विशिष्ट ब्लॉग में शामिल होंगे:**

- मेनू या नेविगेशन बार के साथ हैडर।
- हाइलाइट या नवीनतम ब्लॉग पोस्ट के साथ मुख्य सामग्री क्षेत्र।
- साइडबार सामाजिक प्रोफ़ाइल, पसंदीदा सामग्री, या कॉल-टू-एक्शन के साथ।
- एक अस्वीकरण, गोपनीयता नीति, संपर्क पृष्ठ, आदि जैसे प्रासंगिक लिंक के साथ पाद लेख



उपरोक्त उदाहरण औसत ब्लॉग की मूल संरचना है। प्रत्येक आइटम का अपना महत्व है और आगंतुकों को आपके ब्लॉग के माध्यम से नेविगेट करने में मदद करता है।

### ब्लॉग और वेबसाइट

बहुत से लोग अभी भी आश्चर्य करते हैं कि क्या ब्लॉग और वेबसाइट में कोई अंतर है। ब्लॉग क्या है और वेबसाइट क्या है? आज दोनों के बीच अंतर करना और भी चुनौतीपूर्ण है। कई कंपनियां ब्लॉग को अपनी वेबसाइट में भी एकीकृत कर रही हैं, जो आगे दोनों को भ्रमित करता है।

### **वेबसाइटों से ब्लॉगों को क्या अलग करता है?**

ब्लॉग को लगातार अपडेट की जरूरत है। इसके अच्छे उदाहरणों में एक खाद्य ब्लॉग साझा करना भोजन व्यंजनों या उनके उद्योग समाचार के बारे में लिखने वाली कंपनी शामिल है।

ब्लॉग पाठक जुड़ाव को भी बढ़ावा देते हैं। पाठकों के पास समुदाय को अपनी विभिन्न चिंताओं और विचारों को टिप्पणी करने और आवाज देने का मौका है। ब्लॉग के मालिक नियमित आधार पर नए ब्लॉग पोस्ट के साथ अपनी साइट को अपडेट करते हैं।

### **खुद का ब्लॉग क्यों होना चाहिए?**

'ब्लॉग' यानि की अपना खुद का 'मुखपत्र'। जिसमें हम निडर होकर अपने विचार लिख सकते हैं, रख सकते हैं। अपने विचार, अपनी भूमिका लोगों तक पहुँचाने की जिनको इच्छा है, उनके लिए यह ब्लॉग एक वरदान है। भलेही ब्लॉग इंटरनेट पर मुखपत्र का किरदार बना हो, तो भी इस में 'सूचक' अपनी सूचना, मत लिख सकता है। इस संवाद के कारणही यह माध्यम बहुत ही इंटरस्टिंग साबित हो रहा है। किसी एक मुद्दों को अपना समर्थन देनेवाली जनता या किसी एक मतसे ही सहमती रखनेवाली जनता इस ब्लॉग के माध्यम से एकत्रित आ सकते हैं। इससे ब्लॉग की ताकद तय होती है। जिस व्यक्ति का खुद का 'ब्लॉग' होता है उस व्यक्ति को 'ब्लॉगर' कहते हैं।

### **आज की दुनिया में 'ब्लॉग' का महत्त्व क्या है?**

ब्लॉगसे हम हमारा कहना लिखने के साथ फोटो की सहायता से, विडियो के जरिए, या हमारे विषय संबंधित इंटरनेट की लिंक्स देकर अधिक प्रखरता से सामने ला सकते हैं। हम अगर किसी के मतों सहमती दिखा रहे हैं तो वह सहमती कॉमेंट के मार्ग से उस व्यक्ति तक पहुँचा सकते हैं। आज की गती से प्रगती करनेवाले समय में, काल में, कम से कम समय में एक-दुसरे से 'कम्युनिकेट' और 'कनेक्ट' होना, करना, यह इस ब्लॉग का सबसे बड़ा 'बेनिफिट' है।

इस माध्यम में कुछ महत्त्वपूर्ण बातों पर हम गौर करेंगे, उनकी जानकारी लेंगे। जिस के कारण इस माध्यम का इस्तमाल आत्मविश्वास और सहजतासे कर सके।

### **ब्लॉग पर हम क्या-क्या कर सकते हैं?**

सबसे महत्त्वपूर्ण है, खुद का ब्लॉग बनाना हो तो डरने की कोई बात नहीं। क्योंकि यह कोई कठीन बात न होकर बहुत ही आसान है। दुनिया से अगर हमें कनेक्ट रहना है, तो इस ब्लॉग जैसा दुसरा माध्यम नहीं। ब्लॉग बनाने के लिए सिर्फ बेसिक कॉम्प्युटर और बेसिक इंटरनेट का इस्तमाल करना हमें आना आवश्यक है, और किसी विशेष ज्ञान की हमें यहाँ जरूरत नहीं पडती। ब्लॉग पर हम किसी भी प्रकार की जानकारी, फोटो, फोटो अल्बम, विडियो सहजता से शेअर कर सकते हैं।

सोशल मिडिया की दुनिया में ब्लॉग महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है। ब्लॉग, गुगल के ब्लॉगर में या वर्डस्प्रेस में भी बना सकते हैं। और वो भी मुफ्त, बिना किसी भी शुल्क के सिवाय यह ब्लॉग कैसे बनाया जाता है, यह हमें बनाना आना चाहिए वो हम देखेंगे की यह कैसे बनाया जाता है।

### **गुगल ब्लॉग के लिए अकाउंट कैसे ओपन करना है?**

ब्लॉग बनाने के लिए आप का गुगल अकाउंट होना जरूरी है। ब्राऊज़र में ब्लॉगर इस शब्द प्रयोग से सर्च (खोज) की, तो हमें [www.blogger.com](http://www.blogger.com) यह ब्लॉगर की वेबसाईट दिखाई पडती है। उस पर क्लिक करके उस वेबसाईट को ओपन करना है। उस में लॉग-इन करने के बाद हमें सर्वप्रथम गुगल+ की

प्रोफाइल दिखती है। गुगल+ और ब्लॉगर की एक ही प्रोफाइल होती है। उस पेज पर जाने के लिए इस पर क्लिक किजिए।

अब हमें ब्लॉग के अकाउंट का पहला पन्ना (पेज) दिखता है, उसे 'होमपेज' कहते हैं। नया ब्लॉग बनाने के लिए 'न्यू ब्लॉग' इस बटन पर क्लिक किजिए। 'न्यू ब्लॉग' इस बटन पर क्लिक करने के बाद हमें 'क्रिएट ए न्यू ब्लॉग' की विन्डो दिखाई पडती है। यह ब्लॉग बनाने की पहली स्टेप है। इस विन्डो में हमें नीचे दी हुई जानकारी भरनी पडती है।

1) 'टाइटल': टाइटल यह ब्लॉग का एक महत्वपूर्ण भाग है। ब्लॉग का टायटल यह आकर्षक और समझने में आसान होना चाहिए जिससे टायटल पढनेवाले को ध्यान में आना चाहिए की यह ब्लॉग किस विषय पर है।

2) 'ऍड्रेस': ऍड्रेस यानी की, ब्लॉग की यु.आर.एल., ब्लॉग का पता। यह ऍड्रेस टायटल से संबंधित होना चाहिए जिससे की अखंडता कायम रहती है। मतलब मुझे अगर मैं करनेवाली रेसिपीज् से संबंधित ब्लॉग बनाना है तो इस ब्लॉग का ऍड्रेस कुछ इस प्रकार होगा। [myrecipes.blogspot.com](http://myrecipes.blogspot.com)।

3) 'टेम्प्लेट्स': हमारा ब्लॉग और आकर्षक बनाना हो तो अलग-अलग इमेजेस् यहाँ पर उपलब्ध है। ब्लॉग के विषयानुसार हमें एक टेम्प्लेट चुनना होगा।

4) 'क्रिएट ब्लॉग': उपर दि गए तरीकों की सहायता से पुरी जानकारी भरने के बाद बटन पर क्लिक करे। तभी अपना ब्लॉग ब्लॉगर अकाउंट के होम पेज पर ऍड हुआ दिखाई देखा।

जिससे हमें होम पेज पर ब्लॉग क्रिएट हुआ दिखाई देता है। अपने ब्लॉग का टायटल दिखता है और यहाँ से हम ब्लॉग बनाने की शुरुआत करते हैं। इस बटन पर क्लिक करने के बाद 'क्रिएट ए न्यू पोस्ट' यह विकल्प आता है।

### हिंदी और साहित्य पर उपयोगी वेबसाइटें

- कालानुक्रमिक हाइलाइट्स / हिंदी भाषा का इतिहास
- हिंदी कुंज
- भाषा सूचना सेवा (एलआईएस) -भारत [अनुशंसित]
- नाट्य षोध संस्थान: भारतीय पुरातत्व का एक संग्रह
- हिन्दी विकिपीडिया का हिन्दी पोर्टल [अनुशंसित]
- राजभाषा विभाग, सरकार भारत की
- हिंदी भाषा - एथनोलॉग से विवरण
- विकिपीडिया में हिंदी भाषा का वर्णन
- हिंदी व्याकरण का इतिहास [हिंदी विकिपीडिया में इतिहास खोजें]
- हिंदी व्याकरण का विवरण [हिंदी विकिपीडिया में खोज]

**हिंदी व्याकरण** - हिंदी भाषा को शुद्ध रूप में लिखने और बोलने संबंधी नियमों को जाने के लिए हिंदी व्याकरणीकरण अच्छे तरीके से समझने का बहुत जरूरी होता है और यह वेबसाइट आपको हिंदी व्याकरण को समझने में पूरी तरह से मदद करेगी। यहां हिंदी व्याकरण से संबंधित सभी टॉपिक को छोटे-छोटे भागों में वर्गीकृत करके उदाहरण सहित विवरण गया है। तो दोस्तों [hindigrammar.in](http://hindigrammar.in) का मुख्य उद्देश्य आसान तरीके से हिंदी व्याकरण को समझने में आप सब को सहयोग पहुंचाना है।

- हिंदी साहित्य विकिपीडिया में
- हिंदी साहित्य [हिंदी विकिपीडिया में खोज साहित्य]
- आधुनिक हिंदी का अंतर्राष्ट्रीय विकास [हिंदी में खोज हिंदी में अंतर्राष्ट्रीय विकास]
- आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य का इतिहास [Search mod हिंदी गद्य का इतिहास हिंदी में]

- आधुनिक हिंदी काव्य साहित्य का इतिहास [Search mod हिंदी पद्य का इतिहास हिंदी विकिपीडिया में]
- प्रवासी हिंदी साहित्य [हिंदी विकिपीडिया में प्रवासी हिंदी साहित्य खोजें]
- हिंदी साहित्य का च्यावाड़ी काल [हिंदी विकिपीडिया में खोज छायावादी युग]
- दलित साहित्य [हिंदी विकिपीडिया में खोज दलित साहित्य]
- बच्चों का साहित्य [हिंदी में बाल साहित्य खोजें]

### Social Sites

(संचार और सूचना) एक वेबसाइट है जो ग्राहकों को बातचीत करने की अनुमति देती है, आमतौर पर यह अनुरोध करके कि दूसरे उन्हें साझा हितों के आधार पर या उप-समूहों को जोड़कर या सामग्री प्रकाशित करके अपने संपर्कों की दृश्य सूची में जोड़ सकते हैं, ताकि ग्राहकों का एक निर्दिष्ट समूह मिलकर कार्य कर सकें व इस तक पहुंचें।

एक सोशल नेटवर्किंग सेवा (सोशल नेटवर्किंग साइट या सोशल मीडिया) भी एक ऑनलाइन प्लेटफॉर्म है, जिसका उपयोग लोग अन्य लोगों के साथ सामाजिक नेटवर्क या सामाजिक संबंध बनाने के लिए करते हैं, जो समान व्यक्तिगत या कैरियर के हितों, गतिविधियों, पृष्ठभूमि या वास्तविक जीवन के कनेक्शन साझा करते हैं।

सोशल नेटवर्किंग, दोस्तों, परिवार, सहपाठियों, ग्राहकों और ग्राहकों के साथ संबंध बनाने के लिए इंटरनेट आधारित सोशल मीडिया कार्यक्रमों का उपयोग है।

### लोग सामाजिक नेटवर्क का उपयोग क्यों करते हैं ?

सामाजिक नेटवर्क लोगों को अपने दोस्तों और परिवार के साथ जुड़ा रखने में मदद करते हैं और यह पता लगाने का एक आसान तरीका है कि आपके सामाजिक मंडली में हर दिन क्या हो रहा है। इंटरनेट पर मजेदार और दिलचस्प चीजों को खोजने के लिए सोशल नेटवर्क का इस्तेमाल भी किया जा सकता है क्योंकि अक्सर आपके मित्र और परिवार आपके जैसे ही कई हितों को साझा करेंगे।

### आज सबसे लोकप्रिय सोशल नेटवर्क क्या है ?

फेसबुक अभी भी एक अरब से अधिक उपयोगकर्ताओं के साथ सबसे बड़ा और सबसे लोकप्रिय सोशल नेटवर्क है।

सोशल नेटवर्किंग साइट आज दुनिया भर में एक दूसरे से जुड़ने का सबसे अच्छा साधन है आज सिर्फ युवा ही नहीं बल्कि बूढ़े और बच्चे भी सोशल नेटवर्किंग साइट्स के दीवाने हैं। लेकिन सोशल नेटवर्किंग साइट्स को प्रयोग करने वाले लोगो को ये नहीं भूलना चाहिए। कि एक आपकी एक छोटी सी गलती आपको बहुत नुकान पहुंचा सकती है। आज सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर धमकियों, ब्लैकमेलिंग और किडनैपिंग जैसे कई मामले सामने आ चुके हैं। लेकिन इसका मतलब ये बिलकुल नहीं है कि इन सोशल नेटवर्किंग साइट्स को बंद या ब्लॉक कर दे। अगर यदि आप इन सोशल साइट्स का सुरक्षित तरीके से प्रयोग करेंगे तो ये साइट्स बिलकुल सुरक्षित हैं। और बहुत काम की भी।

### सोशल नेटवर्किंग के लाभ :

- सोशल नेटवर्किंग के माध्यम से आप आप बस एक फ्रेंड रिक्वेस्ट को एक्सेप्ट करते ही एक नयी दोस्ती का डोर शुरू हो जाता है।
- सोशल का प्रयोग करने से आप अकेलेपन का शिकार होने से बचते हैं।
- कई बार सोशल नेटवर्किंग साइट्स आपको बिज़नेस को भी फायदा पहुंचा सकता है।
- सोशल नेटवर्किंग साइट्स से आप हमेशा व्यस्त रह सकते हैं।
- सोशल नेटवर्किंग साइट के माध्यम से आपको ये अहसास होता है कि आपको कोई सुन रहा है।

- इसके प्रयोग से आपको दोस्तों की कमी महसूस नहीं होती है।

### सामाजिक नेटवर्क के उदाहरण :

- Bebo
- Classmates
- Facebook
- Friendster
- Google+
- Instagram
- LinkedIn
- MySpace
- Orkut
- Twitter
- YouTube

### सोशल नेटवर्किंग के नुकसान:-

- सोशल नेटवर्किंग आपको मानसिक और भावनात्मक रूप से परेशान कर सकता है।
- सोशल नेटवर्किंग एक प्रकार की लत है। आप इसके आदि होते चले जाते हैं। जो कि आपकी लिए बहुत घातक सिद्ध हो सकता है।
- आपके लिए सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर समय बिताना आपकी जिंदगी का हिस्सा बन जाता है। आप इसको इतनी ज्यादा अहमियत देने लगते हैं कि आप अपने जीवन की महत्वपूर्ण चीजों को भूल कटे हैं जो आपके जीवन के लिए सही नहीं हैं।
- कई बार सोशल नेटवर्किंग साइट्स से आपका डाटा और फोटो चोरी कर लिए जाते हैं जिनका प्रयोग गलत कामों के लिए किया जा सकता है।

<http://www.educationaltalks.com/history-of-computer-in-hindi/>

<https://www.mybigguide.com/2018/07/Computer-Notes-In-Hindi.html> important

<https://www.mybigguide.com/2018/07/Computer-Notes-In-Hindi.html> important 1

कम्प्यूटर (संगणक) प्रणाली – परिचय, उद्भव एवम् विकास  
कम्प्यूटर का परिचय :-